म॰ बरानोवा, ये॰ वेलतीस्तोव

बॉबी, बोरीस और राकेट

आवारा कुत्तों की कहानी
और कैसे वे मशहूर हुए

प्रगति प्रकाशन
मास्को

БАРАНОВА, Е. ВЕЛТИСТОВ
ТЯПА, БОРЬКА И РАКЕТА
На языке хинди

अनुवादक – मदन लाल 'मधु'
चित्रकार – ये० मिगुनोव और क० रोतोव (पृष्ठ १५८ – १६१)

पुस्तक के मुखावरण पर नज़र डालो – वहां तुम एक साधारण पाइप, जिसमें फ़िल्में और दियासलाई की दो सौ डिब्बियां भरी हुई हैं, तथा गली का एक साधारण आवारा कुत्ता देखोगे। बोरीस और उसके मित्र गेना ने जब बॉबी को इस राकेट में बिठाकर उड़ाया तो क्या उन्होंने इस बात की कल्पना की थी कि कभी उनका यह आवारा कुत्ता विश्व-विख्यात अन्तरिक्ष-नाविक ओत्वाज्नाया (दिलेर) बन जायेगा! मगर वास्तव में ऐसा ही हुआ!

इतना ही नहीं, बोरीस और गेना भी सम्भवतः अन्तरिक्ष-नाविक बन जायेंगे।

इस दिलचस्प और दिल खुश करनेवाली पुस्तक में अन्तरिक्ष के साहसपूर्ण खोजकों का परिचय दिया गया है। बालको, इस पुस्तक को पढ़कर तुम यह जान जाओगे कि अन्तरिक्ष-नाविकों के अन्तरिक्ष में उड़ान करने के पहले अन्तरिक्षीय डाक्टर उनका कितना लम्बा और सूक्ष्म प्रशिक्षण करते हैं। तुमको यह भी मालूम हो जायेगा कि अन्तरिक्ष के अनुसंधान में गलियों के आवारा कुत्तों ने (जिनमें लाइका, बेल्का और स्त्रेल्का शामिल हैं) क्या भूमिका अदा की, प्रथम अन्तरिक्ष-नाविकों – यूरी गगारिन और गेर्मन तितोव – की अन्तरिक्षीय उड़ान का "पासपोर्ट" तैयार करने में उन्होंने डाक्टरों की किस तरह सहायता की।

अनुक्रम

फ़िल्म के प्रथम प्रदर्शन के समय यह घटना घटी

शहर भर में ये इश्तहार लगे हुए थे –

रविवार, दिन के बारह बजे

'ज्ञानिये' सिनेमाघर में

एक वैज्ञानिक-काल्पनिक फ़िल्म

'रेना अन्तरिक्ष में'

का प्रथम प्रदर्शन होगा

अन्तरिक्ष-नायिका रेना से व्यक्तिगत रूप से मिलिये !

'ज्ञानिये' सिनेमाघर के टिकटघर में काम करनेवाली लड़की के सिर में आज सुबह से दर्द हो रहा था। कसकर बन्द की हुई छोटी-छोटी मुट्ठियां टिकटघर की खिड़की में लगातार कुछ सिक्के उसके सामने रखती जा रही थीं। सिक्के देनेवाले अपनी गर्दन उचकाकर और पंजों के बल खड़े होकर टिकटघर के अन्दर झांकने की कोशिश करते। बड़ी मुश्किल से बचाये हुए उनके ये पैसे जब तक गिने जाते और उन्हें नीले रंग का टिकट मिलता, तब तक वे बहुत सब्र से काम लेते। यह सिलसिला एक घंटे तक जारी रहा और उसके बाद टिकट बेचनेवाली लड़की ने राहत की सांस ली। उसने बोर्ड लगा दिया – "सब टिकट बिक चुके हैं"।

हॉल खचाखच भरा हुआ था, लोग इन्तज़ार कर रहे थे और हल्का सा शोर सुनाई दे रहा था। लोगों का एक दल आया और मंच की ओर बढ़ गया। रजतपट के सामने एक मेज़ के गिर्द कुछ कुर्सियां रखी हुई थीं, मेहमान इनपर बैठ गये। कैमरामैन ने तेज़ी से हॉल में नज़र दौड़ाई और अपने सुप्रसिद्ध फ़िल्म-निर्माता मित्र से कहा –

"बधाई, हॉल पूरी तरह भरा हुआ है।"

"ज़रा दर्शकों की ओर तो ध्यान दो – बस पेंशनर और बालक ही हैं," फ़िल्म-निर्माता ने गहरी सांस ली। "ये सब से कड़े पारखी होते हैं!"

लोग तालियां बजाने लगे। सिनेमाघर का मैनेजर मंच पर आया। वह काला सूट पहने था और उसके कोट की जेब से सफ़ेद रूमाल झांक रहा था। उसने फ़िल्म के निर्माण में हाथ बंटानेवालों का परिचय देना शुरू किया।

अब फ़िल्म-निर्माता खड़े हुए। वे घड़ी भर ख़ामोश रहे। हॉल में गहरा सन्नाटा छा गया।

"साथियो," फ़िल्म-निर्माता ने धीरे से कहना शुरू किया। "अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षणों में मुझे हमेशा इस बात का स्मरण हो आता है कि कैसे बहुत साल पहले मैं क्रास्नाया प्रेस्न्या* में एक पंक्ति में खड़ा हुआ देर तक एक झंडे को देखता रहा था। वह लाल झंडा था और मैं लाल टाई पहने हुए था। मैं तभी किशोर पायनियर बना था। बाद में अक्सर मुझे इस बात का ख़्याल आया है – कितनी अच्छी बात है कि मेरा सजग जीवन इसी झंडे की छाया में शुरू हुआ!

आज भी रविवार का दिन है। मगर मुझे ऐसा लगता है कि हमारे सिर के ऊपर, हमारे समूचे देश पर, ख़ुशी का एक झंडा लहरा रहा है। यह नये युग के समारम्भ का, अन्तरिक्ष पर मानव की विजय का झंडा है! प्रथम सोवियत स्पूत्निकों ने इस झंडे को लहराया। आज तीसरा स्पूत्निक इस झंडे को ऊपर उठाये हुए है। कौन जान सकता है कि 'वोल्गा' कार जैसा भारी-भरकम यह अन्तरिक्ष-यान शायद इस समय हमारे सिरों के ऊपर, इस थियेटर के ऊपर, चक्कर लगा रहा हो..."

हर किसी की आंखों के सामने शोर करती हुई और सिनेमाघर के पास से गुज़रती हुई हरी, पीली और नीली 'वोल्गा' कारों की तसवीर उभरी और सभी ने अपनी कल्पना में, दिन की रोशनी में दिखाई न देनेवाले अन्तरिक्ष-यान को, कहीं आकाश में उड़ते हुए अनुभव किया।

---

*मास्को का एक हल्का जो अपनी क्रान्तिकारी परम्पराओं के लिये विख्यात है। – सं०

मगर फ़िल्म-निर्माता अब एक सपने की चर्चा कर रहे थे, उन साहसी स्वप्नद्रष्टाओं और वैज्ञानिकों का ज़िक्र कर रहे थे जो अन्तरिक्ष के अज्ञात मार्गों में मानव का पथ-प्रदर्शन कर रहे थे।

"हमारी फ़िल्म भी एक सपना ही है," फ़िल्म-निर्माता ने अपनी बात जारी रखी। "यह सोचकर मेरा मन आज कुछ उदास है कि यह फ़िल्म बहुत जल्द ही अपना महत्त्व खो देगी। जल्द, बहुत जल्द, मानव अन्तरिक्ष में उड़ान करेगा और तरह-तरह के बहादुरी के कारनामे करेगा... पर यदि आप हमारी अन्तरिक्ष-नाविका रेना को उस समय एक बार भी याद कर लेंगे तो मुझे बेहद ख़ुशी होगी, हमारी मेहनत सफल हो जायेगी..."

दर्शकों ने तालियां बजाईं और फ़िल्म-निर्माता ने सिर झुकाकर उनका अभिनन्दन स्वीकार किया। फ़िल्म-निर्माता ने अपने पास बैठी हुई नारी को धीरे से कुछ कहा और कुर्सी पर रखा हुआ छोटा सा सफ़री थैला उसकी ओर बढ़ा दिया।

"और अब," फ़िल्म-निर्माता ने घोषणा की, "सर्कस की कलाकार सोफ़िया लेप आज की फ़िल्म की तारिका अन्तरिक्ष-नाविका रेना से आपका परिचय करायेंगी।"

जगमग करती हुई काली पोशाक पहने हुए सुनहरे बालों वाली एक नारी सामने आयी। वह अपने हाथ पीछे की ओर किये हुए थी।

"चलो रेना!" उसने ऊंची आवाज़ में आदेश दिया।

अन्तरिक्ष-नाविक की पोशाक पहने हुए एक छोटी सी बन्दरी उछलकर उसके कन्धे पर आ बैठी।

यह भी ख़ूब रही! वह अन्तरिक्ष-नाविका जिसका इतना विज्ञापन किया गया और जिसका हर कोई इन्तज़ार कर रहा था, सफ़री थैले में चुपचाप बैठी हुई थी।

सारे हॉल में ख़ुशी की लहर दौड़ गई। रेना शोर सुनकर चौंकी, उसने अपना चश्मा उतारा और उसे फ़र्श पर फेंककर मुंह बनाने लगी। इस तरह उसने यह प्रमाणित कर दिया कि वह सबसे शरारती क़िस्म की बन्दरी है।

दर्शक ख़ुश होते हुए उठे और इस दिलचस्प अभिनेत्री को नज़दीक से देखने के लिए तेज़ी से मंच की ओर बढ़े। पिछली सीटों से एक छोटी सी लड़की डाहलिया के लाल फूलों का गुलदस्ता लिए हुए दौड़कर आगे आई। उसके बालों में सफ़ेद रिबन लहरा रहे थे। वह मंच पर चढ़ी और उसने फूलों का गुलदस्ता बन्दरी को सधानेवाली को भेंट किया।

"यह हमारे किशोर पायनियर दल की ओर से," रेना को सावधानी से थपथपाते हुए उसने जल्दी से कहा।

मंच पर बैठे हुए लोगों ने देखा कि लड़की की आंखें अचानक ही डर से फैल गईं। बन्दरी ने उसे चोटियों से पकड़ लिया था और वह अपनी विजय की घोषणा करती हुई दांत निपोर रही थी।

दर्शकों में से कोई ठठाकर हंसा और फिर एकदम चुप हो गया। मंच पर बैठे हुए लोगों के चेहरे गंभीर हो गये थे। रेना लड़की को काट भी सकती थी! फ़िल्म बनाते समय अनेक बार ऐसा हो चुका था। चिड़चिड़ी बन्दरी किसी पर झपटती,

गुस्से में नाक-गाल काट लेती और घड़ी भर बाद मुंह बनाती हुई वृक्ष पर झूलती दिखाई देती।

कैमरामैन और फ़िल्म-निर्माता जहां के तहां बैठे रहे—उन्हें आशंका थी कि उनके दख़ल देने से बन्दरी को और ग़ुस्सा आ जायेगा।

"रेना, फ़ौरन छोड़ दो इसे!" सोफ़िया लेप की शान्त और स्थिर आवाज़ सुनाई दी। "कृपया छोड़ दो इसे!"

बड़ी मासूमी से आंखें झपकाते हुए बन्दरी ने सोफ़िया लेप की ओर देखा। फिर उसने जम्हाई ली, धीरे-धीरे लड़की की चोटियां छोड़कर अपने आप को खुजलाने लगी। लड़की मंच से कूदकर भाग गई।

मेहमानों ने बड़ी झेंप महसूस की। तभी मैनेजर ने स्थिति को संभाला—

"प्यारे दोस्तो! आज हम इस फ़िल्म का प्रथम प्रदर्शन कर रहे हैं। जिस फ़िल्म के निर्माण में पूरा एक साल लगा, उसे सबसे पहले आप ही देखेंगे। अभी बत्तियां बुझ जायेंगी और राकेट के वीर-यात्री के रूप में आप इस छोटी सी बन्दरी को पहचान लेंगे। मैं आशा करता हूं कि आप शरारती रेना को माफ़ कर देंगे।"

मैनेजर ने जैसे ही रेना का नाम लिया वैसे ही सधी हुई बन्दरी ने मैनेजर की जेब से रूमाल निकाला और उसे हिलाते हुए दर्शकों की ओर हवा में एक चुम्बन लहरा दिया।

लोगों की हंसी के दौरान ही मेहमान मंच से नीचे उतर गये।

बत्तियां बुझ गईं। अजीब आकाशी संगीत की लहरें सी बहती हुई अनुभव हुईं। आकाश में सितारे छिटके हुए थे, गतिहीन थे। धरती की ओर उड़ान करता हुआ एक छोटा सा चमकदार बिन्दु ही ब्रह्मांड की नीरवता को भंग कर रहा था—एक राकेट बहुत तेज़ रफ़्तार से धरती की ओर लौट रहा था। राकेट से भी अधिक तेज़ रफ़्तार से वायरलैस द्वारा ख़तरे का संकेत धरती पर पहुंचा। अन्तरिक्ष-यान के चालक-दल ने सूचना दी कि उनका अन्तरिक्ष-यान ख़तरनाक किरणों के क्षेत्र में जा पहुंचा है।

दर्शक तनाव अनुभव करते हुए दम साधे बैठे थे। ऐसा लगता था मानो अन्तरिक्ष की नीरवता हॉल में आ गई हो। नुकीले सिरों वाले राकेट प्रस्थान के चबूतरों पर टिके हुए थे। अन्तरिक्ष-यानों के अड्डे वीरान पड़े थे। अन्तरिक्ष-नाविक निराश और मुंह लटकाये हुए इस बात का इन्तज़ार कर रहे थे कि कब वैज्ञानिकों को इन ख़तरनाक किरणों के रहस्य का पता लगाने में सफलता मिलती है और वे इनसे बचने का साधन खोज पाते हैं।

मगर तभी एक जाना-पहचाना चेहरा दर्शकों की ओर देखता और मुस्कराता हुआ दिखाई दिया। यह रेना थी! वही जांच-कार्य करने के लिए अन्तरिक्ष में उड़ान करेगी!

पृथ्वी से संकेत मिलने पर यह सधी हुई बन्दरी यन्त्रों के लीवर को दबा देगी और इस तरह वैज्ञानिकों को अपनी हालत की सूचना देगी।

फिर भी यह ख़तरनाक मामला है। बन्दरी के लिए भी ख़तरनाक है।

रेना अन्तरिक्ष-नाविक की हवा-रोक पोशाक पहने हुए है। उसे केबिन में बैठाकर उसकी सीट के पट्टे बांध दिये जाते हैं। वह अपना सिर घुमाती है, अपने शिरस्त्राण के शीशे के पीछे से दांत दिखाती और मुंह खोलती है। शायद वह विदा होते समय कुछ कहना चाहती है?

"भूं!" सारे हॉल में यह आवाज़ गूंज गई। फिर से सुनाई दिया – "भौं! भौं!"

ध्वनि-रिकार्डकर्त्ता भौंचक्का सा रह गया। कुत्ते के भौंकने की आवाज़ कहां से आ रही थी? रिकार्डिंग के समय तो वहां कोई कुत्ता नहीं था।

मगर कुत्ते की भौं-भौं जारी रही। अब हर किसी को यह स्पष्ट हो गया था कि यह आवाज़ लाउडस्पीकर से नहीं आ रही थी। दर्शक सी-सी करते, अपनी सीटों पर हिलते-डुलते और इधर-उधर देखते हुए साथ ही साथ यह कोशिश भी करने लगे कि फ़िल्म के दृश्य देखने से वंचित न रह जायें।

कोई हॉल के संकरे मार्ग से भागता और यह कहता हुआ सुनाई दिया –

"शैतान के चर्खे! छिपाकर कुत्ते को अन्दर ले आये!"

बत्तियां जल गईं और हर किसी ने अपराधियों को देखा।

एक छोटा सा सफ़ेद कुत्ता कुर्सियों की क़तारों के बीच इधर-उधर दुबकता फिर रहा था। सिनेमा

का एक कर्मचारी उसका पीछा कर रहा था, उसके पीछे-पीछे घबराया हुआ एक लड़का दौड़ रहा था और लड़के के पीछे-पीछे भाग रहा था मैनेजर।

कुर्सियों की भूल-भुलैयां में हतप्रभ होकर कुत्ता घड़ी भर के लिए रुक गया। चार हाथों ने उसे फ़ौरन झपट लिया। सिनेमा का कर्मचारी कुत्ते को कसकर पकड़े हुए था और लड़का उसे छीन रहा था।

"यह क्या बदतमीज़ी है!.." उनके पास आकर मैनेजर गरज उठा।

"यह... बॉबी है," कुत्ते को न छोड़ते हुए लड़के ने कहा। "मैं चाहता था..."

"तुम क्या चाहते थे, मेरी बला से! फ़ौरन हॉल से निकल जाओ!" दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए मैनेजर ने कहा।

सिनेमा के कर्मचारी ने गुस्से से तमतमाये हुए मैनेजर के चेहरे की ओर देखा और कुत्ते को छोड़ दिया। लड़के ने उसे झपट लिया, अपने कोट के बटन खोले और फिर चुप हो गये इस सफ़ेद गेंद जैसे कुत्ते को अपनी छाती से लगाया और दरवाज़े की तरफ़ चल दिया।

थका और परेशान हुआ मैनेजर अपनी कुर्सी में धसक गया और उसने रूमाल से माथे का पसीना पोंछा।

फ़िल्म का प्रथम प्रदर्शन फिर जारी हो गया।

मैदान में धमाका

उसी दिन शाम को पड़ोस की दस मंज़िली इमारत के किरायेदार अचानक एक धमाका सुनकर चौंक पड़े।

नगर की यह आख़िरी इमारत नगर का सीमा-चिन्ह थी। इमारत के सामने कुछ ही समय पहले बनाई गई ख़ूबसूरत सड़क थी। यह सड़क छोटे-छोटे सुन्दर वृक्षों और दूकानों तथा अन्य संस्थाओं के चमकते हुए साइन-बोर्डों से सुसज्जित भी हो चुकी थी। इमारत के पिछवाड़े की ओर एक खुला मैदान था जहां से नागदौने की गन्ध से महकी हुई ताज़ा हवा के झोंके आते रहते थे। मैदान के एक पहलू में मोटरों के गैराजों की एक छोटी सी बस्ती बस गई थी, वहां से कुछ दूरी पर जंगल और एक छोटा सा गांव था। ऊंचे-ऊंचे क्रेन सभी ओर से गांव के अधिकाधिक निकट खिसकते आ रहे थे।

कुछ ही समय बाद यह मैदान नहीं रहेगा, मगर आजकल वहां बालकों का शासन रहता था।

सितम्बर महीने के इस रविवार की शाम को दो लड़के गैराजों के पीछे अपने काम में व्यस्त थे। वे समझते थे कि स्वर-लहरियों में डूबे हुए और जगमगाती खिड़कियों वाले मकान में रहनेवाले लोग अपनी दुनिया में मस्त हैं और उनकी ओर कोई भी ध्यान नहीं दे रहा है।

मगर ऐसा सोचकर वे भूल कर रहे थे। इस घर में एक जिज्ञासु लड़की रहती थी जिसका नाम था ल्यूबा काज़ाकोवा। उसकी बड़ी-बड़ी भूरी आंखें हमेशा इस तरह से फैली रहती थीं मानो वह घटना घटने के पहले ही आश्चर्यचकित हो गई हो। जहां कहीं कोई घटना घटती, आम तौर पर वही वहां सबसे पहले पहुंचती। इस समय यह जिज्ञासु ल्यूबा आख़िरी गैराज के पीछे खड़ी हुई बहुत ग़ौर से अन्धेरे में कुछ देख रही थी। किसी भावी घटना की संभावना के पूर्वबोध से उसका दिल अधिकाधिक तेज़ी से धड़क रहा था।

अन्धेरे में दो आकृतियां दिखाई दे रही थीं। वे कौन थे? ल्यूबा निश्चित रूप से यह न जान सकी। वे दोनों व्यक्ति एक अजीब से यन्त्र पर, जो पाइप के टुकड़े जैसा लगता था, झुके हुए थे। पाइप के इधर-उधर हिलाने-डुलाने से पैदा होनेवाली आवाज़ से पता चलता था कि वह धातु की बनी हुई थी। मगर सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह थी कि पहले इस जगह कोई पाइप नहीं थी।

ल्यूबा के पैने कानों ने एक और आहट भी सुनी। यह थी दबी-दबी मुश्किल से सुनाई देनेवाली गुर्राहट। कहां से आ रही थी यह आवाज़? क्या पाइप से नहीं आ रही थी?

उसने चुपके से इस रहस्यपूर्ण ढांचे के नज़दीक जाने का फ़ैसला किया। वह दबे पाँव मुड़ी, मगर फ़ौरन पीछे हट गई: अन्धेरे में एक दियासलाई जली, दोनों व्यक्ति उछलकर खड़े हुए और तेज़ी से भागते हुए उसकी दिशा में आये।

उनके पैरों की आहट ल्यूबा के अधिकाधिक नज़दीक आती जा रही थी। जासूसी करनेवाली लड़की ने समझ लिया कि वहां से ग़ायब हो जाना ही उसके लिए सबसे अच्छा होगा। वह गैराजों के बीच की जगह से तेज़ी से दौड़ती हुई सड़क पर पहुंची और सड़क पर जाती हुई 'वोल्गा' मोटरकार से बस टकराते-टकराते बची। ड्राइवर ने उसे सावधान करने के लिए बत्तियां जला दीं। तेज़ रोशनी से लड़की की आंखें चौंधिया गईं। उसने आंखें मिचमिचाईं और ठंडी दीवार के साथ सट गई।

उसी क्षण ज़ोर का एक धमाका सुनाई दिया। गैराजों के पीछे से भयानक सीटी बजाता हुआ एक राकेट सा हवा में चमक उठा। इसके आग उगलते और सरसराते हुए पृष्ठ भाग की रोशनी में मैदान, पीछे की ओर सिर किये और ख़ुश होते हुए लड़के, डरी-सहमी लड़की और अपनी 'वोल्गा' मोटरकार से झटपट बाहर निकालता हुआ चौड़े कन्धों वाला व्यक्ति, सभी साफ़ तौर पर दिखाई दिए।

पृष्ठ भाग चमका और फिर उसकी रोशनी बुझ गई। राकेट की सरसराहट ख़त्म हो गई और वह ज़मीन पर गिर गया।

"गेना, यह तुम हो?" स्तम्भित होते हुए इस व्यक्ति ने लड़कों को देखा तो चिल्लाकर पूछा।

मगर लड़के पाइप की ओर भागे जा रहे थे जहां से एक कुत्ते के बहुत ज़ोर से भौंकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

"घबराओ नहीं, बॉबी!" अन्धेरे में कुत्ते के मालिक की सान्त्वनाभरी आवाज़ सुनाई दी। "मैं अभी तुम्हें बाहर निकाल लूंगा।"

मगर अपनी पूरी कोशिश के बावजूद, वे कुत्ते को गर्म पाइप से बाहर न निकाल पाये। झुलसा हुआ नन्हा सा क़ैदी दर्दभरी आवाज़ में चिल्ला रहा था।

मगर तभी 'वोल्गा' मोटरकार इस दुखद घटना-स्थल पर पहुंची। गेना के पिता ने पिटाई की धमकी देकर लड़कों को राकेट से दूर भगा दिया। उसने गर्म पाइप को उठाया और गाली देते हुए उसे मोटर में फेंक दिया। 'वोल्गा' मोटरकार जंगल की ओर जानेवाली सड़क पर चल दी।

गली में ज़ोर की लम्बी सीटी सुनाई दी। चौकीदार जाग उठा था और सीटी बजाकर

मिलिशियामैन को बुला रहा था। लड़कों का लहू सूख गया, उन्होंने एक दूसरे की आंखों में झांका और अन्धेरे में नौ-दो ग्यारह हो गये।

दस मंज़िली इमारत में रहनेवाले लगभग हर व्यक्ति ने मैदान में हुए इस धमाके को सुना और विस्फोट की चमक को देखा। उन्होंने फ़ौरन यह अनुमान लगाया था कि यह चालीस और इकतालीस नम्बर के फ़्लैटों में रहनेवाले "आविष्कारकों" का कारनामा है। वे पहले भी अपने इन देसी राकेटों से इस इमारत में रहनेवाले लोगों को कई बार डरा चुके थे। कुछ लोगों ने "टेक्निकल रुझान रखनेवाले लड़के" कहकर इन शरारतियों की सफ़ाई भी दी थी। मगर अधिकतर किरायेदारों ने ऐसी शरारत का विरोध करते हुए मकान-मैनेजर का समर्थन किया था जो आविष्कारकों पर जुर्माना करना चाहता था।

"अफ़सोस है कि कोई सबूत नहीं मिला," मकान-मैनेजर ने मन ही मन सोचा। चौकीदार, मिलिशियामैन और मैनेजर को जली हुई घास और झाड़ियों के सिवा वहां कोई भी चीज़ न मिली।

"हो सकता है इन शैतानों ने सचमुच ही राकेट उड़ा दिया हो?" मकान-मैनेजर ने कहा। "अगर वह किसी के सिर पर जा गिरा तो क्या होगा? बड़ी भयानक बात है। और इसका कोई गवाह तक नहीं..."

एक गवाह तो थी–ल्यूबा। मगर उसने यह बात अपने तक ही रखी।

बॉबी ग़ायब हो गया

प्रवेश-द्वार नम्बर दो के फ़्लैटों में रहनेवाला हर आदमी इस बात का आदी हो चुका था कि हर सुबह को पांचवीं मंज़िल के ४१ नम्बर के फ़्लैट का दरवाज़ा ज़ोर से खुलता और एक छोटा सा झबरीला कुत्ता तथा लाल रंग की बनियाइन पहने हुए भूरे बालों वाला एक लड़का सीढ़ियों में नज़र आते। वे एक साथ दौड़ते हुए सीढ़ियों से उतरते। जो कोई भी कुत्ते के ख़ुशी से भूंकने की आवाज़ सुनता, फ़ौरन जान जाता कि सुबह के साढ़े सात बज गये हैं। लोग जब काम पर जाने के लिए लिफ़्ट में नीचे उतरते तो यह लड़का और उसका कुत्ता भागते हुए सीढ़ियां चढ़ते दिखाई देते। आम तौर पर ४० नम्बर के फ़्लैट से धारीदार नाइट-सूट पहने हुए एक उनींदा सा लड़का बाहर आता और जम्हाई लेते हुए कहता, "हैलो–कितने चक्कर लगाये? पांच? ठीक है!" कुत्ते को कुछ देर तक पिछली टांगों पर नचाकर नाइट-सूट में बाहर आनेवाला यह पड़ोसी अपने फ़्लैट में वापस चला जाता।

मगर सोमवार को कुत्ते का भौंकना सुनाई न दिया, यद्यपि ४१ नम्बर के फ़्लैट से लाल रंग की बनियाइन पहने हुए बोरीस स्मेलोव हर दिन की तरह ठीक साढ़े सात बजे बाहर आया। रबड़ के जूतों से धीरे-धीरे आवाज़ करते हुए वह सीढ़ियों से नीचे उतरा और उसने मकान के गिर्द चक्कर लगाने शुरू किए। कई बार चक्कर लगाने के बाद वह दौड़ता हुआ मैदान में पहुंचा और सुबह का व्यायाम करना शुरू किया।

लोग जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाते हुए स्थानीय भूमिगत रेलवे यानी मेत्रो-स्टेशनों की ओर जा रहे थे। बोरीस का पिता यारोस्लाव स्मेलोव सुबह की पाली पर जाने के पहले चाय का आख़िरी प्याला पी रहा था, मगर लाल रंग की बनियाइन वाला लड़का अभी भी मैदान में खड़ा हुआ अपनी बाहें हिला-डुला रहा था, घुटने झुका रहा था।

"बोरीस आज क्या कर रहा है? क्या वह देर से स्कूल पहुंचना चाहता है?" अपनी जेबघड़ी पर नज़र डालते हुए यारोस्लाव स्मेलोव ने कहा। "पिछली रात से बॉबी नज़र नहीं आ रहा। मां, तुम इसके बारे में उससे पूछताछ करना।"

यारोस्लाव स्मेलोव ने टोपी सिर पर रखी और कारख़ाने की ओर चल दिया।

पिता के कुछ दूर चले जाने के बाद बोरीस दौड़ता हुआ घर आया। बोरीस का मित्र गेना करातोव, जो ४० नम्बर के फ़्लैट में रहता था, आज बाहर नहीं आया। उस फ़्लैट में भी आज की सुबह कुछ दूसरे ही ढंग से शुरू हुई थी।

गेना का पिता अनातोली करातोव पत्रकार था। उस दिन उसे सुबह ही दफ़्तर नहीं

जाना था और इसलिये उसने बेटे से गम्भीर बातचीत करने का फ़ैसला किया। वह पीछे की ओर अपने हाथ बांधे हुए कमरे में इधर-उधर टहल रहा था और उसका बेटा मुंह-हाथ धोने और बाल संवारने के बाद नाश्ता कर रहा था।

"कब यह बकवास बन्द होगी?" करातोव ने बिगड़ते हुए कहा। "पहली बार सिर्फ़ धमाका हुआ था, दूसरी बार टीन के डिब्बों की ज़ोरदार गड़गड़ाहट और इस बार भयानक पाइप और उसमें वह बेचारा कुत्ता! मैं जुर्माने दे देकर तंग आ गया हूं!"

"सभी महान वैज्ञानिकों को कुछ न कुछ क़ुर्बानी तो करनी ही पड़ी थी," बेटे ने शान्त भाव से जवाब दिया।

"पहली बात तो यह है कि तुम महान नहीं हो। दूसरे, अगर क़ुर्बानी की बात करते हो," करातोव कमरे के बीचोंबीच रुक गया। उसने बेटे को पैनी नज़र से देखा, "तो मैं यह जानना चाहता हूं कि तुमने पाइप में भरा क्या था?"

गेना कुछ घबरा गया।

"फ़िल्म और दियासलाई की दो सौ डिब्बियां। कुछ दूसरी चीज़ भी, मगर आविष्कारक अपने ईंधन को गुप्त रखते हैं।"

"ठीक है, तुम इसे गुप्त रखो। मगर तुम जानते हो कि एक ज़माने पहले ही तुम्हारे इस राज़ का पर्दाफ़ाश हो चुका है? और वह भी ऐसे कि जिसके परिणाम बहुत दुखद हुए थे। क्या तुमने कभी सुना है कि कैसे एक चीनी मान्दारीन (रईस) एक राकेट में उड़ा था?"

"चीनी मान्दारीन? राकेट में उड़ा था?" गेना ने तश्तरी से हाथ खींच लिया। वह जानता

था कि प्राचीन काल में चीनियों ने राकेट का उसी भांति आविष्कार किया था जैसे कि बारूद, क़ुतुबनुमा और काग़ज़ का। आग उगलनेवाली बर्छियां उनके राकेट होती थीं। वे पाइपों में बारूद भर देते थे और इस तरह ये पाइप की बनी हुई बर्छियां दुश्मन की फ़ौजों पर बरसाई जाती थीं। मगर गेना ने कभी ऐसे चीनी मान्दारीन के बारे में नहीं सुना था जिसने राकेट में उड़ान करने की कोशिश की हो।

"तुम्हारी जानकारी के लिए बता देना चाहता हूं कि चीन में ऐसा एक मान्दारीन था। उसका नाम था वांग हू। वास्तव में वह बहुत कुछ तुम्हारे समान ही था। वह भी बारूदी राकेटों की मदद से उड़ना चाहता था। उसने एक कुर्सी बनाई, अज़दहे के आकार वाली दो विराटकाय पतंगों के साथ उसे बांध दिया जो उसे हवा में थामे रहें और अपने इस उड़ान-यन्त्र को राकेटों से भर दिया।"

"यह तो कमाल की बात है!" जोश से अपनी कुर्सी पर उछलते हुए गेना चिल्ला उठा।

"इस तरह ख़ुश होने की कोई बात नहीं है। इसका अन्त बहुत दुःखद हुआ था। वांग हू ने सोचा था कि उसके राकेट एक-एक करके चालू होंगे, मगर वे सभी–४७ के ४७–एक साथ ही चालू हो गये। वांग हू मर गया। यह है तुम्हारे बारूदी राकेटों का रहस्य!"

"पर ख़ैर, वह था बहादुर आदमी, पापा!"

"तुमसे किसी तरह भी पार पाना मुमकिन नहीं," करातोव ने निराश होते हुए कन्धे झटके। "बिल्कुल बेकार है तुमसे बात करना। इसी क्षण से," पिता ने निश्चयपूर्वक कहा, "ग़ुसलख़ाने की तुम्हारी रासायनिक प्रयोगशाला ख़त्म की जाती है। राकेट

निर्माण-सम्बन्धी किताबें ताले मे बन्द रहेंगी और आम तौर पर बहुत ही कड़े दैनिक कार्यक्रम का अनुकरण किया जायेगा। ज़रा अपनी स्कूल की रिपोर्ट-बुक तो दिखाओ। यह क्या है? व्यायाम में फिर बुरे अंक? इसके लिए कोई बहाना नहीं हो सकता। ४१ वें फ़्लैट में रहनेवाला तुम्हारा दोस्त हर सुबह व्यायाम करता है, मगर तुम क्यों आलसी बनकर बिस्तर में पड़े रहते हो? क्यों वह हर वक़्त कूदता-फांदता और चुस्त रहता है और तुम मरे-मरे से नज़र आते हो?"

"प्रगति के लिए दिमाग़ की ज़रूरत होती है," गेना ने बहुत विश्वास के साथ कहा और नाश्ते की तश्तरी दूर हटा दी।

"भली कही दिमाग़ की तुमने... यह ख़्याल भी तुम्हारे ही दिमाग़ की उपज था न कि तुम्हारा दोस्त कुत्ते को सिनेमाघर में ले जाये और वहां फ़िल्म के प्रदर्शन में बाधा डाले?"

"पापा, यह तो आप मानेंगे ही कि तजरबे के जानवर को अन्तरिक्ष की परिस्थिति का कुछ आभास अवश्य होना चाहिये। हम ग़लती नहीं करना चाहते थे। बेचारा बॉबी, वह तो शायद झुलस गया।"

"तो तुम क्या आशा करते थे? मैं तुम्हें सिर्फ़ इतना बता सकता हूं कि उस बेचारे कुत्ते को बहुत तकलीफ़ हुई। जैसे ही मैंने उसे पाइप से बाहर निकाला, वह भाग गया और मैं यह नहीं देख पाया कि उसे चोट आई या नहीं। अब तक वह ज़रूर घर आ गया होगा।"

"नहीं, वह घर नहीं लौटा। आपने उसे किस जगह पाइप से बाहर निकाला था?"

"तो तुम यह जानना चाहते हो कि तुम्हारा राकेट कहां है?" करातोव ने अपनी आंखें सिकोड़ीं।

"तुम्हारी यह तिकड़म नहीं चलेगी, गेना, इसके अलावा अब स्कूल जाने का वक़्त भी हो गया है।"

घंटी बजने के साथ ही बोरीस और गेना हड़बड़ाये हुए कक्षा में पहुंचे। अनुशासन और कानों, कापियों और रिपोर्ट-बुक की सफ़ाई के लिए ज़िम्मेदार बालक-बलिकाओं में से सिर्फ़ ल्यूबा काज़ाकोवा ही ऐसी थी जिसने इन दोनों मित्रों के हाथों की जांच करने में दिलचस्पी ज़ाहिर की। उसने इस तरह से उनके हाथों की जांच की मानो उन पर चीनी-वर्णमाला लिखी हुई हो। ड्यूटी पर खड़े हुए बाक़ी बालक अपनी डेस्कों पर बैठ चुके थे और कक्षा का मुखिया लेव पोमेरान्चिक देर से आनेवाले विद्यार्थियों को मुक्के दिखा रहा था।

साहित्य की अध्यापिका ने बालकों को घर से 'पतझर' शीर्षक वाली कविता ज़बानी याद करके आने को कहा था। मगर आज उसने कविता सुनने के बजाय एक निबन्ध लिखने को कहा (हमारी कहानी के नायकों ने राहत की सांस ली)। निबन्ध का विषय था 'मैत्री के बारे में मैंने क्या कुछ पढ़ा है'।

बालकों के पास मैत्री के बारे में कहने को बहुत कुछ था। काग़ज़ पर जाने-पहचाने दिलचस्प शब्दचित्र उभरने लगे।

डस्कों की क़तारों के बीच धीरे-धीरे इधर-उधर जाते हुए अध्यापिका अपने विद्यार्थियों के बारे में सोच रही थी। वह सोच रही थी कि कैसे बिल्कुल भिन्न स्वभाव वाले कुछ बालक एक-दूसरे के घनिष्ठ मित्र हैं। मिसाल के तौर पर सबसे पिछली क़तार में बैठे हुए इन दो लड़कों को लिया जा सकता है। इनमें से एक जल्दी-जल्दी अपना काम करता हुआ मन ही मन

ख़ुश हो रहा था और इधर-उधर हिलता-डुलता हुआ अपने पड़ोसियों को कोहनियां मारने का समय भी निकाल पा रहा था। दूसरा बहुत ध्यानपूर्वक लिख रहा था, उसके माथे पर बल पड़े हुए थे और स्पष्ट था कि वह हर शब्द से उलझ रहा था, शब्दों से हाथापाई कर रहा था।

"करातोव लायक़ लड़का है," अध्यापिका सोच रही थी। "बालक इसे आविष्कारक कहते हैं। गणित के अध्यापक की उसके बारे में बहुत ऊंची राय है। वह अपनी शान दिखाता रहता है और जब तब अचानक ही उसे बहरेपन के दौरे भी पड़ने लगते हैं। गणित का अध्यापक उसके इन दोषों को देखा-अनदेखा कर देता है क्योंकि वह इसे त्सिग्रोल्कोव्स्की की नक़ल समझता है।"

मगर साहित्य की अध्यापिका को ख़ामोश रहनेवाला बोरीस स्मेलोव अधिक पसन्द था। यह सही था कि वह अपने आत्मविश्वासी मित्र के सामने अक्सर झुक जाता था, मगर उसके संयम के पीछे मजबूत और दृढ़ स्वभाव की झलक मिलती थी। हृष्ट-पुष्ट और चुस्त बोरीस अन्य लड़कों की तरह ही ऊधमी मगर मक्कार नहीं था। वह दोस्तों की ओट में अपने को बचाने की कभी कोशिश नहीं करता था।

अध्यापिका गेना और बोरीस को अच्छी तरह से जानती और समझती थी, मगर उनके निबन्ध पढ़कर वह हैरान हुए बिना न रह सकी। करातोव ने अपने निबन्ध में हेकलबेरी फ़िन और टॉम सायर की दोस्ती का विस्तृत वर्णन किया था और उनकी आज़ादी के बारे में बहुत उत्साह प्रगट किया था। उसने लिखा था—"घर के कड़े नियन्त्रण में टॉम का दम घुटता था। मगर जब वह अपनी मौसी के घर से भाग खड़ा हुआ तो उसने अपने मित्र हेक के साथ मिलकर बहादुरी के कुछ बहुत ही अद्‌भुत कारनामे किये। मुझे यक़ीन है कि हेकलबेरी फ़िन और टॉम सायर महत्त्वपूर्ण लोग बने होंगे—प्रसिद्ध यात्री या इंजीनियर। दूसरे शब्दों में वे तभी महत्त्वपूर्ण बने जब वयस्कों ने इन्हें रोका-टोका नहीं जैसे कि वे कुछ लोगों को रोकते-टोकते हैं।" ये "कुछ लोग" कौन थे, इसके बारे में कुछ नहीं कहा गया था।

बोरीस स्मेलोव ने गेरासिम नाम के गूंगे और बहरे नौकर और उसके मुमू* नाम के कुत्ते की मर्मस्पर्शी मैत्री का वर्णन किया था। "कुत्ते को डुबो देने के बारे में घर की मालकिन के आदेश का मैं तो पालन न करता," बोरीस ने लिखा था। "सार यह है कि हमें अपने कुत्तों की अच्छी देखभाल करनी चाहिये," उसने अपने निबन्ध का यह अप्रत्याशित अन्त किया था।

* मुमू—इ० से० तुर्गेनेव की इसी नाम की कहानी से।—सं०

अध्यापिका को तो इस बात का ख़्याल तक भी नहीं आया कि ये पंक्तियां लिखते हुए बोरीस की आंखों के सामने पतझर की बरसात में भीगे हुए जंगलों में एकाकी और भूखे पेट इधर-उधर भटकते हुए एक कुत्ते का चित्र घूम रहा था...

स्कूल से छुट्टी होने पर दोनों दोस्त अपने बस्ते लिए हुए मैदान के पीछे वाले जंगल में भागते हुए पहुंचे। उन्होंने जंगल के छोरों को अच्छी तरह से देखा, मगर राकेट का कहीं कोई निशान न मिला।

फिर वे एक दम ठिठक गए—खाई में कोई हिला-डुला। वे तेज़ी से वहां पहुंचे और ल्यूबा को वहां देखकर हैरान रह गये। वह उकड़ूं बैठी हुई राकेट के जले हुए पहलू को धीरे-धीरे ठोंक-बजाकर देख रही थी।

"क्या तुम यहां भी हमारे हाथों की जांच करने आई हो?" गेना ने गुस्से से कहा और बोरीस के पीछे-पीछे खाई में छलांग लगाई।

"मगर वह यहां नहीं है!" गेना के व्यंग्य की ओर ध्यान न देते हुए ल्यूबा ने कहा और झाड़ियों का सहारा लेकर खाई से बाहर निकल आई। बोरीस समझ गया कि यद्यपि ल्यूबा ने नाम नहीं लिया था तथापि उसका इशारा बॉबी की ओर था।

पाइप ख़ाली थी। वह धुएं से काली हुई पड़ी थी और उसके अगल-बग़ल कुछ सूराख़ हो गये थे। मगर गेना अब भी उसमें दिलचस्पी ज़ाहिर कर रहा था। वह सोच रहा था कि उसका फिर से इस्तेमाल हो सकता है या नहीं? तभी ल्यूबा के पीले जूतों पर उसकी नजर पड़ी और उसने सिर ऊपर उठाया

"तुम अभी भी यहां हो?" उठकर खड़े होते हुए वह चिल्लाया। "भाग जाओ वरना..." उसने मुक्का दिखाया।

"अब तो मैं सचमुच डर गई हूं," ल्यूबा ने अपनी चोटियों को इधर-उधर झटकते हुए अकड़कर जवाब दिया।

"भाग जाओ!" गेना ने हुक्म दिया। (ल्यूबा वहां से चल दी।) "ख़बरदार जो किसी से एक शब्द भी कहा!"

इसी बीच बोरीस जंगलों में अपने बॉबी की तलाश कर रहा था। उसने हर गढ़े में झांककर देखा, फ़र के कांटेदार छोटे-छोटे वृक्षों के झुरमुटों के बीच ढूंढ़ा, आवाज़ दी और फिर जवाब का इन्तज़ार किया। हर घड़ी उसे यह आशा होती थी कि बॉबी उसकी आवाज़ के जवाब में भौंकेगा...

चीड़ के एक ऊंचे लाल वृक्ष के नीचे उसने एक सफ़ेद बॉल पड़ा देखा। उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा—"यह रहा बॉबी! बेचारा थक-टूट गया है।" वह दौड़कर उसके पास गया और पाया कि वह मुड़ा-मुड़ाया हुआ अख़बार था। उसने निराश होकर उसे ठोकर लगाई।

कहीं से इंजन की सीटी गूंज उठी—उसे वह कुत्ते के भौंकने की आवाज़ जैसी लगी। इंजन ने और ज़ोर से सीटी बजाई तो बोरीस ने गहरी सांस ली— "यह तो कुत्ते की आवाज़ नहीं है।"

एक बड़ा सा भूरा कुत्ता झपटकर झाड़ियों में से उसके सामने आया। बोरीस की ओर कोई ध्यान न देकर और अपने दांतों में एक छड़ी दबाकर वह दूर भाग गया। कोई अपने जर्मन अलसेशियन कुत्ते को सधा रहा था।

जंगल भर में किसी ने बोरीस की आवाज़ का जवाब न दिया। यहां तक कि बड़ा कुत्ता भी चुप रहा था और इंजन—वह तो काफ़ी दूर जा चुका था।

परेशान और निराश होकर बोरीस जब जंगल के छोर पर लौटा तो उसने अपने दोस्त को ज़ंग लगी पाइप हाथ में लिए हुए उसी खाई में बैठे देखा।

"अरे, तुम अभी तक यहां बैठे हो? तुम बॉबी की तलाश क्यों नहीं करते?" बोरीस ने बिगड़ते हुए पूछा।

"बॉबी, बॉबी! हाथ झटकते हुए उसके दोस्त ने जवाब दिया। "देखो! इस जगह इसका मुंह बन्द हो गया था। इसलिए यह राकेट नाकाम रहा। वह लड़की," ल्यूबा जिस दिशा में गई थी, उधर इशारा करते हुए उसने कहा, "सब जगह इसका

ढिंढोरा पीट देगी। उसने अनुमान कैसे लगाया? पर ख़ैर, कोई बात नहीं। असली चीज़ तो यह है कि आदमी हिम्मत न हारे। हम पाइप को साफ़ करके इसे फिर उड़ायेंगे। इस बार तजरबा नाकाम नहीं रहेगा।"

"पहले भी तुमने ऐसा ही कहा था। बेचारा बॉबी ज़ख़्मी हो गया और अब हम यह तक नहीं जानते कि वह है कहां..."

"परीक्षणकर्त्ता के चरित्र में लोहे की सी दृढ़ता होनी चाहिये," गेना ने उसकी बात काटते हुए कहा। "और तुम हो कि गली के एक आवारा कुत्ते के लिए चीख़चिल्ला रहे हो।"

"तो यह बात है?" बोरीस भड़क उठा। "अच्छा तो परीक्षणकर्त्ता साहब, बैठे रहो अपनी इस खाई में और अब से मैं तुम्हारा सहायक नहीं हूं, मेरा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है।"

वह घूमा और जंगल की ओर चल दिया।

"तुम अपना बस्ता भूले जा रहे हो!" गेना खाई में से चिल्लाया।

बोरीस नहीं लौटा।

गेना को ल्यूबा के पास जाना और उससे यह अनुरोध करना पड़ा कि वह उसके दोस्त का बस्ता घर ले जाये। अभिमानी आविष्कारक को इस तरह परेशान और हताश देखकर लड़की को बहुत हैरानी हुई। वह तो नाराज़ होना भी भूल गई।

"ठीक है, मैं पहुंचा दूंगी," उसने बात समझते हुए कहा। "सिर्फ़ यह वादा करो कि हम राकेट एक साथ छोड़ेंगे।"

गेना ने चुपचाप सिर हिलाकर हामी भरी।

ल्यूबा शाम को बस्ता लेकर बोरीस के घर गई। जब उसने घंटी बजाई तो पूरा स्मेलोव परिवार दरवाज़ा खोलने के लिए दौड़ा आया। परिवार के लोग बॉबी के लौटने की आशा कर रहे थे।

मगर बॉबी कभी घर नहीं लौटा।

कुत्तों की प्रदर्शनी में

काश आप यह जानते कि एक ही बार अपने सबसे अच्छे दो मित्र खो देने पर मन को कितना दुख होता है! काश कि आप यह जानते कि अपने पुराने मित्र के पास से गुज़रते हुए उदासीन रहने में मन पर क्या गुज़रती है! और फिर यह ख़्याल आने पर

दिल को और भी अधिक दुख होता है कि दूसरे मित्र को अपनी ही बेवक़ूफ़ी से गंवा दिया है।

काश कि आप यह जानते कि वह कितना अच्छा साथी था! वोल्गूशा नदी के तट पर उन दोनों की पहली मुलाक़ात हुई थी। ग्रीष्मकालीन पायनियर कैम्प इसी नदी के तट पर लगा था। बोरीस तैरने के लिए गया था और पानी से तर-ब-तर कांपते पिल्ले को अपनी बनियाइन में लपेटे हुए घर लौटा था। पिल्ला ख़ुद ही नदी में गिर गया था या किसी ज़ालिम आदमी ने उसे फेंक दिया था, यह कोई नहीं जानता था। बालकों ने उसे बॉबी का नाम दे दिया था। उसका स्वभाव बहुत अच्छा था और उसके कानों पर फूले-फूले रोयें थे, जो तौलिए की तरह नर्म थे। बोरीस को डर था कि उसके पिता को यह पिल्ला अच्छा नहीं लगेगा क्योंकि वह अच्छी नसल का नहीं था। मगर उसके पिता ने कहा कि गलियों के आवारा कुत्ते ही सबसे अच्छे होते हैं।

बॉबी जब बड़ा हुआ तो उसकी थूथनी कुछ लम्बी और पतली हो गई। ज़ाहिर था कि उसके माता-पिता में से कोई स्पिट्स नसल का कुत्ता था। उसके कान नोकदार हो गए और तन गए। उसके सफ़ेद नर्म रोयें लहरों की तरह लहराते रहते। बॉबी बहुत ही समझदार कुत्ता था। वह जल्दी ही समझ गया कि उसे रसोईघर में जाकर काम में ख़लल नहीं डालना चाहिये और बोरीस जब किताबें लेकर हरे लैम्प के पास बैठे तो उसे परेशान नहीं करना चाहिये। पर यदि उसे किसी चीज़ की ज़रूरत होती तो वह अपने मालिक के पास जा बैठता और अपनी चमकती हुई गहरी बादामी आंखों से उसे ताकता रहता और इस तरह उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता।

बॉबी का अपना बिस्तर और अपना प्याला था। वह परिवार के सभी समारोहों से परिचित था। डाकिया जब "फ़ौजी-डाक" की मोहर वाला नीला लिफ़ाफ़ा लेकर आता तो बॉबी उछलने लगता और भौंकता हुआ कमरे में इधर-उधर दौड़ता। तब कोई भी उसे डांटता-डपटता नहीं था। वे सभी एक बड़े कमरे में जमा हो जाते, यारोस्लाव स्मेलोव चश्मा चढ़ाता और ऊंची आवाज़ में अपने बड़े बेटे सेर्गेई का ख़त पढ़कर सुनाता।

और रविवार के दिन! बॉबी उन्हें भी पहचान लेता, उस दिन कुछ विशेष तरह की आवाज़ें सुनाई देतीं और रंगों में ख़ास आकर्षण होता।

जाड़ा मुरमुराते हुए गूंजते दिनों का वक़्त होता। बोरीस की स्कीज़ ठंडे सूरज से मुलाक़ात करने के लिए बर्फ़ की तहों को चीरती हुई मानो तैरती सी चली जातीं। आत्म-विभोर बॉबी भौंकता हुआ आगे-आगे दौड़ता रहता और स्कीज़ के निकट आ जाने तक बर्फ़ में लोट-पोट होता रहता। फिर वह कूदकर खड़ा होता, अपने मालिक की आंखों में झांकता तथा लम्बी-लम्बी छलांगें लगाता हुआ स्कीज़ के साथ-साथ दौड़ता जाता।

गर्मियों में इंजन फक-फक करते और बिजली की गाड़ियां धड़धड़ाती हुई गुज़रतीं। बॉबी लोगों से भरे हुए और गुलगपाड़े वाले डिब्बे में घर के अन्य लोगों के साथ दुबककर बैठता, फिर नगर के बाहर के रेलवे-स्टेशन की तख़्तों वाली सीढ़ी से दौड़ता हुआ नीचे उतरता और अन्त में पूरी तरह से आज़ाद होकर फ़र के जंगल की ओर तेज़ी से भाग जाता। फ़र का जंगल भालू की तरह झबरीला और झुका-सा होता। वहां वह भौंकता हुआ इधर-उधर दौड़ता, गिलहरियों और पक्षियों को डराता और बोरीस के खोये हुए गेंद को खोजने के लिए जहां-तहां घास को सूंघता रहता।

हर कोई उसकी ख़ुशी को अनुभव करता, हर कोई उसी की भांति ख़ुश और स्वतन्त्र तथा हंसने-हंसाने को तैयार रहता।

सड़कों पर या स्कूल के सामने एक भौंकता हुआ सफ़ेद बॉल ख़ुशी से बोरीस के पैरों में लोटता-पोटता रहता। घावों, ख़राशों और बालों के उखड़े हुए गुच्छों से यह अनुमान लगाना कठिन नहीं होता था कि उन ख़तरनाक सड़कों पर से गुज़रने और अजनबी फाटकों पर इन्तज़ार करने के लिए बॉबी को कितने साहस से काम लेना पड़ा था। किसी भी क्षण वहां से बड़े कुत्ते उसपर झपट सकते थे...

ओ बोरीस, तुमने अपने बॉबी की अच्छी तरह से देखभाल नहीं की। और अब तुम सड़कों पर अकेले भटकते फिर रहे हो और तुम्हें इस बात का भी ध्यान नहीं है कि पतझर आ गई है! सूर्य ख़ूब ज़ोर से चमक रहा है। पैरों के नीचे पत्ते सरसराते हैं,

हवा में सिहरन है और उसमें तरबूज़ के छिलकों की गन्ध घुली-मिली हुई है। यह तय करना मुश्किल है कि वृक्षों की चोटियों, फलों से भरे हुए स्टैंडों या बगीचों में दिखाई देनेवाले पतझर के फूलों में से क्या अधिक चमकदार है, अधिक रंगीनी लिए हुए है।

बोरीस तो सिर्फ़ सड़क पर जाते हुए कुत्तों को ही देख रहा था। अचानक उसने एक ख़ास बात अनुभव की। काले, सफ़ेद और लाल, सभी कुत्तों को उनके मालिक एक ही दिशा में ट्राम-लाइन के दूसरी ओर वाले पार्क की ओर ले जा रहे थे। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इतनी अधिक संख्या में वे उधर क्यों जा रहे थे।

उसके पास से एक गर्वीला, छोटे बालों वाला और मज़बूत नसल का ग्रेट डेन कुत्ता गुज़रा। उसके गले में चैम्पियन होने के सुनहरे तमग़े झलक दिखा रहे थे। सौदा-सुल्फ़ ख़रीदने के लिए इस्तेमाल की जानेवाली बेंत की टोकरी उठाये हुए एक हृष्ट-पुष्ट औरत उसे लिए जा रही थी। कुत्तों के कुछ प्रेमी थोड़े से फ़ासले पर चलते हुए इस चार टांगों वाले अजूबे की हर मांस-पेशी की चर्चा कर रहे थे। इस कुत्ते के आकर्षण के जादू में बंधा हुआ बोरीस अनजाने ही पार्क में जा पहुंचा और उसने अपने को कुत्तों की प्रदर्शनी में पाया।

खुले मैदान में सफ़ेद-हरे झंडे लहरा रहे थे, जिनपर जंगली मुर्गों और बारहसिंगों के सिरों की तसवीरें बनी हुई थीं और सभी ओर भौं-भौं का शोर बरपा था। बोरीस दंग रह गया — हर संभव नसल के और इतने अधिक कुत्ते! निर्णायक छोटी-छोटी मेज़ों के गिर्द बैठे थे। कमान की तरह तने हुए और लम्बी-लम्बी टांगों वाले रूसी शिकारी कुत्ते उनके सामने से ले जाये जा रहे थे। इनमें से किसी को अगर मैदान में छोड़ दिया जाये तो वह सीटी की तरह हवा को चीरता हुआ तीर की तरह जाये और आन की आन में ख़रगोश, लोमड़ी या भेड़िये को धर दबाये। प्रसिद्ध रूसी शिकारी कुत्ते की इज़्ज़त से चर्चा करते हुए कुत्तों के प्रेमी उसे "गोली-कुत्ता" कह रहे थे और दादों-परदादों तक इन कुत्तों की नसलों की चर्चा कर रहे थे।

कुत्तों के ये सभी प्रेमी सम्भवतः शिकारी थे। इनके बीच खड़ा हुआ बोरीस कुत्तों का पारखी सा लग रहा था। इनके बाद छोटी-छोटी टांगों वाले और झबरीले स्पेनियल कुत्ते सामने आये। रूसी शिकारी कुत्तों के बाद वे बहुत ही छोटे-छोटे प्रतीत हो रहे थे।

इन छोटे-छोटे स्पेनी कुत्तों के कान जमीन तक लटके हुए थ और इनकी छोटी-छोटी दुमें दीवाल-घड़ी के पेंडुलमों की भांति लगातार हिल-डुल रही थीं।

आतिशी लाल रंग के मृगयादर्शक कुत्ते आयरिश सेटर और पोइन्टर, जिनकी मांस-पेशियां खिलाड़ियों की तरह से सुडौल और सुघड़ थीं, निर्णायकों के सामने लाये गये। तेज़ और बहादुर कुत्ते फ़ॉक्स-टेरियर निर्णायकों के सामने से गुज़रे। उनकी थूथनियां कुल्हाड़ियों जैसी थीं। टेढ़ी-मेढ़ी, मगर मज़बूत टांगों और बिना बाल वाले काले डैक्सहांद कुत्ते बड़ी शान से अपना प्रदर्शन करते हुए गुज़रे। बोरीस अब तक इन्हें हरामख़ोर और भोंडे कुत्ते समझता रहा था। इनके मालिकों ने निर्णायकों के सामने इनके कारनामों की लम्बी-लम्बी सूचियां पेश कीं जिनमें बताया गया था कि उन्होंने कितनी संख्या में बिज्जुओं और लोमड़ियों को उनकी मांदों में से निकाला था या शिकारी को शिकार में मदद देने के लिए उन्हें घेरा था।

हां! डैक्सहांद कुत्तों ने बोरीस को सचमुच ही आश्चर्यचकित किया। मगर एस्कीमो कुत्ते देखकर उसका मन परेशान हो उठा। जब उसने फूले-फूले सुन्दर सफ़ेद रोयों, नुकीले कानों तथा पीठ पर कुंडलाकार दुमों वाले एस्कीमो कुत्ते देखे तो उसका मन टीस उठा। उसे अपने खोये हुए बॉबी की याद हो आई।

"ये सब तो कीड़े-मकोड़े हैं!" पुराने ढंग की बदरंग फ़ौजी टोपी पहने हुए एक बूढ़े ने बोरीस की विचार-श्रृंखला को भंग कर दिया। "अगर तुम कोई काम की चीज़ देखना चाहते हो तो शिकार-सम्बन्धी मंडप में जाओ। यदि चाहो तो मैं तुम्हें वहां ले चलता हूं।" वह बोरीस को अपने साथ शिकार-सम्बन्धी मंडप में ले गया।

शिकार-सम्बन्धी मंडप की दीवारों पर दोनाली बन्दूकें और लम्बी-लम्बी कटारें लटकी हुई थीं। मेज़ों पर रबड़ के बूट, फन्दे और जंगली बाज़ों के लिए थैले रखे हुए थे। मंडप के प्रवेश-द्वार पर गहरे बादामी रंग का एक लम्बा-चौड़ा भालू खड़ा था। यह भयानक और झबरीला भालू अपनी मांद से निकलकर सीधे एक शिकारी पर झपटता हुआ दिखाया गया था जो बन्दूक़ के घोड़े पर अपनी उंगली रखे हुए खड़ा था।

"ठीक दो मीटर!" फीते से मापकर उसे लहराते हुए बूढ़े ने गर्व से कहा। "और नाख़ून – छः सेंटीमीटर लम्बे! यह हुई न बात! ये तुम्हारे कीड़े-मकोड़ों जैसा कुत्ता नहीं है।"

"मगर भालू को पकड़ा तो कुत्तों ने ही," बोरीस ने कहा।

"शिकारी ने भालू को मारा!" बूढ़े ने ज़ोर दिया।

"यह तो यहां पर भी लिखा हुआ है," बोरीस ने कुत्ते के मान-सम्मान की रक्षा करते हुए अपनी बात जारी रखी। "मास्को के शिकारी-समाज के एक सदस्य स्त्रेलिनकोव ने ज़्वोन्काया और द्रूज्नाया एस्कीमो कुत्तों की मदद से इस भालू को नोवगोरोद के निकट मारा।"

"अच्छा, अगर यहां यही लिखा हुआ है, तब तुम्हारी बात सही है," बूढ़े ने हार मान ली। "मगर तुम सही क़िस्म के कुत्ते नहीं देख रहे थे। रक्षक कुत्ते, यह तो हुई न कोई बात।"

रक्षक कुत्तों के विभाग में बूढ़े ने मापने के फीते का इस्तेमाल नहीं किया। वहां का हर कुत्ता गतिशील था। गोदाम के बड़े-बड़े तालों जैसे बड़े जबड़ों वाले बॉक्सर कुत्ते, अपने भारी-भरकम जिस्म के बावजूद आश्चर्यचकित करनेवाली फ़ुर्ती से बाधा-दौड़ की सभी बाधाओं को आसानी से लांघते जा रहे थे। वे बड़ी शान से लट्ठों पर दौड़ते, खाइयों को फांदते, ऊंची दीवार पर छलांग लगाकर पहुंचते, अधिकाधिक ऊपर चढ़ते जाते और दर्शकों की ज़ोरदार तालियों की गड़गड़ाहट के बीच दो मीटर की ऊंचाई से छलांग लगाते।

कुछ फ़ासले पर बाड़ से घिरा हुआ एक छोटा सा मैदान था। बहुत ही लम्बी-लम्बी आस्तीनों वाली रूईदार मोटी जाकेट पहने हुए एक व्यक्ति वहां धीरे-धीरे हिल-डुल रहा था।

"हुश!" बेंत की टोकरी वाली उसी औरत ने जिसे बोरीस पहले भी देख चुका था, अपने कुत्ते को हुक्म दिया। बछड़े के आकार वाला ग्रेट डेन कुत्ता कुछ ही छलांगों में "उठाईगीरे" के पास जा पहुंचा, उसने झपटकर उसे नीचे गिरा दिया और अपनी विजय की घोषणा करते हुए अपना भारी पंजा उसकी छाती पर टिका दिया। दर्शकों को यह स्पष्ट हो

गया कि शीघ्र ही इस कुत्ते के पट्टे पर एक औ
सुनहरा तमग़ा चमकने लगेगा।

फ़ौजी टोपी वाले बूढ़े ने जब यह सुना कि बोरीस
गोद वाले छोटे कुत्तों को देखना चाहता है तो व
उसे छोड़कर अलग हो गया।

"वे तो रेज़गारी हैं, कीड़े-मकोड़े!" उस
अपना हाथ झटका और दूसरी तरफ़ चलता बना।

एक गोल मंडप के अन्दर से अनेक घंटियों के
टनटनाने के समान कुत्तों के भौंकने का सहगान सुना
दे रहा था। लड़कों का एक दल आंगन में कूदता
फांदता हुआ यह गा रहा था—

देखा तुमने ऐसा कुत्ता
जो बिल्कुल मेंढक सा लगता?
हा-हा, कुत्ता नहीं खिलौना
नहीं प्याले बीच डुबोना।

लड़के ज़रा भी अतिशयोक्ति से काम नहीं
रहे थे। निर्णायकों की मेज़ के सामने मंडप
बीचोंबीच एक व्यक्ति खिलौने के समान छोटा स
टेरियर कुत्ता अपनी हथेली पर रखे हुए खड़ा था
इस कुत्ते की आंखें गोल और फूली-फूली हुई थीं
इस व्यक्ति ने जैसे ही इस कुत्ते को फ़र्श पर रखा
वैसे ही उसने हवा में ऊंची कलाबाज़ी खाई—रस्स
पर कूदनेवाले एक पिस्सू की भांति! यह दृश्य देखक
भी निर्णायक कैसे गंभीर बने रहे, यह समझ पा
संभव नहीं था।

तब एक अजीब सा कुत्ता घेरे में आया। व
इतना झबरीला था कि उसके सिर-पैर का कुछ प
ही नहीं चलता था। वह चिल्लाया और उसने अप

मुंह खोला। इस तरह उसकी लम्बी मूंछें और दाढ़ी दिखाई दी। बोरीस ठठाकर हंस दिया। उसे फ़ौरन बाहर निकाल दिया गया। घड़ी भर बाद वह मंडप के बाहर उछलता-कूदता, निर्णायकों के काम में बाधा डालता हुआ और मस्त छोकरों के एक दल में शामिल होकर यह गाने लगा—

नाई कैंची तेज़ करो
आया एक अजीब शिकार।
काट-छांट कर लम्बी मूंछें
दाढ़ी देना ख़ूब संवार॥
कुत्ता है यह, हा-हा-हा।
एक नमूना गढ़ा हुआ॥

"तुम इसे घटिया कुत्ता मत समझो!" बोरीस के पीछे से किसी ने कहा। "यह बहुत ही मज़बूत और जानदार है।"

बोरीस ने मुड़कर देखा। टेरियर कुत्ते की सफ़ाई देनेवाला व्यक्ति उसे पहली नज़र में कोई विद्यार्थी प्रतीत हुआ—दुबला-पतला, गले का बटन खुला हुआ और चश्मे के मोटे-मोटे शीशों के पीछे चमकती हुई आंखें। उसके साथ एक लड़की थी—गर्मी का कोट पहने हुए, गोल चेहरा और गुलाबी गाल। वह भी विद्यार्थिनी ही लगती थी।

मगर शायद ही ये विद्यार्थी थे क्योंकि छाती पर लाल रिबन लगाये हुए एक निर्णायक ख़ुद उन्हें प्रदर्शनी दिखा रहा था।

"ये निकम्मे लड़के हर वक़्त सिर पर सवार रहते हैं!" निर्णायक ने ऊंची आवाज़ में मेहमानों से कहा। "आइये, मैं आपको कुछ और अधिक दिलचस्प कुत्ते दिखाऊं।"

"टेरियर कुत्ता तो मैं बिना सोचे-समझे ही ख़रीद लेता," लड़की को सम्बोधित करते हुए नौजवान ने धीरे से कहा। "मगर हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं। इसी रक़म में हमें चार कुत्ते ख़रीदने हैं। ओह! कितना कंजूस है हमारा ख़ज़ानची!"

कोई विशेष ध्यान दिये बिना बोरीस ने यह बातचीत सुनी और फिर मंडप के इर्द-गिर्द कूदने-फांदने लगा। काश! उसे मालूम होता कि ये लोग कौन हैं और उसके खोये हुए दोस्त बॉबी के जीवन में कैसी भूमिका अदा करनेवाले हैं! मगर वह फ़ौरन ही इस बातचीत के बारे में सब कुछ भूल गया। अन्य बालकों के साथ हंसता हुआ वह इधर-उधर उछलता-कूदता रहा।

मगर कुत्तों के मालिक यह बात समझ गये कि ये दोनों मेहमान साधारण नहीं थे। कारण कि स्वयं निर्णायक उन्हें पदक जीतनेवाले और चैम्पियन कुत्ते दिखा रहा था।

"ये देखिये, इसके बारे में क्या राय है?" निर्णायक ने मेहमानों को एक कोने में चुपचाप बैठे हुए अलसेशियन कुत्ते के पास ले जाकर पूछा। "बहुत ही बढ़िया कुत्ता है। सोने के पांच और चांदी का एक शानदार तमग़ा जीत चुका है।"

"सचमुच बहुत बढ़िया कुत्ता है!" अपनी कमज़ोर नज़र से इस मशहूर कुत्ते को ग़ौर से देखते हुए चश्मे वाले व्यक्ति ने प्रशंसा की। "मगर बड़े कुत्तों को तजरबे के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।"

"हां, हां, यह तो सही है," निर्णायक को याद आया, "आपने कहा था कि आपको छोटे कुत्ते की ज़रूरत है। ख़ैर, यह तो मैंने यूं ही आपको दिखा दिया। स्पेनियल के बारे में आपकी क्या राय है?"

"वह भी कुछ अधिक ही बड़ा है।"

"और फ़ॉक्स-टेरियर? वह बहुत बड़ा भी नहीं, हुक्म भी मानता है और चौकन्ना भी ख़ूब रहता है। पड़ोसी अगर बग़ल वाले कमरे में अख़बार खोलता है तो उसे वह भी सुनाई दे जाता है और वह फ़ौरन ज़ोर से भोंकने लगता है!"

"नहीं, नहीं! हमें उसकी ज़रूरत नहीं," लड़की ने निर्णायक रूप से इस प्रस्ताव को रद्द कर दिया। "हमें अधिक साधारण, अधिक सब्रवाले कुत्ते की ज़रूरत है।"

तभी उसके साथी ने टोककर कहा—

"वाल्या, उधर देखो! उसके बारे में क्या राय है?"

"हमें इसी की ज़रूरत है।"

दोनों मेहमान बाड़ की ओर बढ़े। वहां पीले पत्तों के ढेर पर एक छोटा सा और गन्दा-मन्दा अकेला कुत्ता लेटा हुआ था। उसकी पतली और छोटी सी थूंथनी स्पिट्स कुत्ते जैसी थी। उसके जिस्म पर घाव के निशान थे और उसके रोयें जो कभी नर्म और सफ़ेद रहे होंगे, इस समय उलझे-उलझाये और गुच्छे बने हुए लटक रहे थे।

"यह हमारा नहीं है, कोई आवारा कुत्ता है। वह काट सकता है," निर्णायक ने चेतावनी दी।

कुत्ता काटना नहीं चाहता था। वह उछलकर खड़ा हुआ, डरा-सहमा और बाड़ के नीचे दुबक गया।

"आपने उसे डरा क्यों दिया?" चश्मे वाले आदमी ने नाराज़ होते हुए कहा।

"हमें इसी तरह के कुत्ते की ज़रूरत है," लड़की ने बात स्पष्ट की। वह झुकी और कुत्ते को कई तरह के नामों से पुकारने लगी।

"मैं आपसे कह देना चाहता हूं कि हमारी प्रदर्शनी में आपको ऐसे कुत्ते नहीं मिलेंगे," निर्णायक ने कहा। "इसके लिए आपको किसी दूसरी जगह जाना होगा।"

निर्णायक ने छाती पर लगा हुआ लाल रिबन ठीक किया और अपने डेन तथा फ़ॉक्स-टेरियर कुत्तों की ओर चला गया।

"अब क्या किया जाए, वसीली?" वाल्या ने हताश होते हुए पूछा।

"कल मैं ज़रूर ही ख़ज़ानची से बातचीत करूंगा," उसने बिगड़ते हुए कहा। "वह जितनी रक़म देता है, उसमें बढ़िया नसल का कुत्ता भला ख़रीदा ही कैसे जा सकता है? मगर दिलचस्प बात यह है, वाल्या, कि हम वह रक़म भी ख़र्च नहीं कर पा रहे। बढ़िया नसल के सभी मज़बूत कुत्ते हमारे काम के लिए बड़े हैं। मैं सभी कुत्ता-प्रदर्शनियों और कुत्ता-पालक फ़ार्मों में हो आया हूं। मैं कैनिल क्लब में भी गया था और कुत्ते पालनेवाले अपने सभी दोस्तों के घरों में भी जा चुका हूं। किसी जगह भी मुझे ऐसा कुत्ता नज़र नहीं आया जो हमारे काम आ सकता हो।"

"अकेले तुम्हें ही यह परेशानी नहीं हुई है," वाल्या ने कहा। "हमारे सभी सहयोगी ऐसे कुत्तों की तलाश में घूम रहे हैं और उन्हें भी सफलता नहीं मिली है।"

"मगर तुम जानती हो कि ऐसे कुत्ते पूरे नगर भर में दौड़ते फिर रहे हैं," वसीली ने पूरे विश्वास के साथ कहा। "बिल्कुल इसी तरह के जैसा कि यह था जो अभी भाग गया है। मगर मैं उन्हें पकड़ नहीं सकता। निश्चय ही मेरे ऐसी कोशिश करने का

नतीजा होगा कि मैं औंधे मुंह गिर जाऊंगा और मेरा चश्मा टूट जायेगा। बिल्कुल यही बात है, मुझे इसका पूरा विश्वास है कि सिर्फ़ आवारा कुत्ते ही हमारे काम आयेंगे, बहुत साधारण और सड़कों पर घूमनेवाले कुत्ते।"

कटखना

कुत्तों की प्रदर्शनी में आनेवाले मेहमान अगली सुबह को एक पुराने दो मंज़िले मकान के प्रवेश-द्वार पर मिले। लोहे का जंगला और चिनार के वृक्षों की एक क़तार इस मकान को सड़क से अलग करती है।

"नमस्ते, वसीली!" वाल्या सड़क पर से ही चिल्लाई। "हमारी मुसीबत टल गई! मैं आज यहां कुछ पहले ही आ गई थी और मैं उन्हें देख भी चुकी हूं। हमारे पास कुछ कुत्ते आ गये हैं!"

"सच कह रही हो? कहां से?" वसीली की बाछें खिल गईं।

"तुम्हारी कल वाली भविष्यवाणी पूरी हो गई–आवारा कुत्ते ही लाये गये हैं। अब पैसे ख़र्च करने और ख़ज़ानची से झगड़ा मोल लेने की कोई आवश्यकता नहीं रही।"

"अरे हां! उनका तो भौंकना भी सुनाई दे रहा है!" नौजवान ने सन्तोष प्रगट करते हुए कहा।

वे अन्दर गये, सीढ़ियां चढ़कर एक छोटे से कमरे में पहुंचे और वहां उन्होंने सफ़ेद लबादे पहने। फिर वे एक लम्बे दालान को पार करके काले मोमजामे से ढके हुए एक दरवाज़े की ओर गये।

कुत्तों की ज़ोरदार भौं-भौं ने उनका स्वागत किया। लम्बे कमरे में पिंजरों की दो क़तारें थीं। कल शाम तक वे ख़ाली पड़े थे और आज उनकी लोहे की सलाखों के पीछे भौंकते-गुर्राते हुए छोटे कुत्ते अपना विरोध प्रगट कर रहे थे।

सड़कों पर घूमनेवाले ये छोटे-छोटे आवारा कुत्ते नाख़ुश थे। वे आदी थे स्वतन्त्र जीवन के, भौंकते हुए सड़कों पर दौड़ने के, राहगीरों के पैरों में लोटने-पोटने और फाटकों के आस-पास डटकर लड़ाइयां लड़ने के। निश्चय ही आज़ादी का जीवन कठोर था–वहां उन्हें भूख बर्दाश्त करनी पड़ती थी, बरसात में भीगना पड़ता था और जाड़े में ठंड से ठिठुरे हुए पैरों के साथ जीना होता था। मगर इस सबके बावजूद कितना मज़ा था पूरी तरह से अपने को आज़ाद महसूस करने में और नाज़ुक बन जानेवाले घरेलू कुत्तों को ठंड से कांपते हुए देखने में!

"डाक्टर, ये तो बेतहाशा भौंकते जाते हैं," कुत्तों की देखभाल करनेवाले कर्मचारी ने शिकायत की।

"भौंकना ही तो इनका काम है। ये कुत्ते जो ठहरे!" वसीली ने मज़ाक़ करते हुए जवाब दिया।

"छठे पिंजरे में एक बहुत ही छोटा और प्यारा सा कुत्ता है। वह बेघर, मगर बहुत ही स्नेही है! उससे तो मेरी दोस्ती भी हो चुकी है।"

"कोज़्याव्का (कीट)," लड़की ने उसके नाम की प्लेट पढ़ी। "कितना प्यारा है!"

छोटा और प्यारा सा कोज़्याव्का अपने पिंजरे में धीरे-धीरे इधर-उधर उछल-कूद रहा था, अपनी पिछली टांगों के बल खड़ा हो रहा था और दुम हिला रहा था। ज़ाहिर था कि वह आगन्तुकों को ख़ुश करना चाहता था।

"क्या प्रोफ़ेसर आज सुबह यहां आये थे?" वसीली ने पूछा।

"हां! उन्होंने सबसे पहले यही काम किया था," देखभाल करनेवाले कर्मचारी ने जवाब दिया। "जैसे ही उन्होंने इस छोटे से प्यारे कुत्ते को देखा, फ़ौरन इसका नाम कोज़्याव्का रख दिया।"

सफ़ेद लबादे वाला नौजवान एक के बाद एक हर पिंजरे के पास गया और उसने अपनी कमज़ोर नज़र से हर कुत्ते को बहुत ध्यान से देखा। छोटे-छोटे क़ैदी भी अपने पिंजरों में से उसे देखते रहे।

लम्बी थूंथनी वाले सफ़ेद कुत्ते ने इस व्यक्ति को औरों की तुलना में अधिक ग़ौर से देखा।

बाक़ी कुत्तों की तरह वह भी आवारा था। मगर बदक़िस्मती से आवारा बनने के पहले इसका अपना घर था, इसका मालिक था और इसका अपना नाम था बॉबी।

बॉबी ने चश्मे वाले आदमी और उसके साथ खड़ी हुई लड़की को पहचान लिया। पिछली शाम को बॉबी जब बाड़ के नीचे दुबका हुआ था तो कुछ लोगों ने उसे पकड़ लिया था, उसके गले में रस्सी डाल दी थी और चीख़ते हुए अन्य कुत्तों के साथ उसे भी धक्के खाती हुई एक मोटरगाड़ी में डालकर ले गये थे। कुत्तों के बाड़े में उसने अपने अन्य साथियों के साथ एक पिंजरे में रात बिताई और सुबह होने पर उसे एक मोटरगाड़ी में इस जगह पहुंचा दिया गया।

वह दूसरों की तरह भौंक नहीं रहा था। उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं थी और वह किसी पर विश्वास नहीं करता था।

"देखो, वाल्या! क्या यह वही कुत्ता नहीं है जिसे हमने कल प्रदर्शनी में देखा था?" बॉबी के पिंजरे के सामने रुकते हुए वसीली ने कहा।

वाल्या ने बहुत ध्यान से इस छोटे से कुत्ते को देखा।

ऐसा ही ख़्याल है तुम्हारा? हां, अब मैंने भी इसे पहचान लिया है। यह वही कुत्ता है। वह स्पिट्स नसल का लगता है। कल वह बहुत गन्दा-गन्दा था।"

वसीली ने जब दरवाज़े पर हाथ रखा तो बॉबी गुर्राने लगा।

"सावधानी से, डाक्टर," देखभाल करनेवाले कर्मचारी ने कहा। "यह कुत्ता ख़तरनाक है।"

वसीली सिर्फ़ मुस्करा दिया और पिंजरे के भीतर गया।

"अरे! हम तो पुराने दोस्त हैं..."

जैसे ही उसने अपना हाथ बॉबी की ओर बढ़ाया कि उसने काट लिया।

"ओह!" वाल्या ऐसे चिल्ला उठी मानो उसे ही काट लिया गया हो।

मगर वसीली ने सिर्फ़ बुरा सा मुंह बनाया।

"ओह! कटखने!"

"वहशी दरिन्दा!" देखभाल करनेवाला चिल्लाया। "लोगों को काटता है, अभी झाड़ू से तेरी अक्ल ठिकाने करता हूं!.." उसने झाड़ू उसकी तरफ़ बढ़ाया।

छोटा सा आवारा कुत्ता कोने में दुबक गया और उसके रोंगटे खड़े हो गये। वह ज़रा गुर्राया और फिर बेतहाशा भौंकने लगा। ऐसे लगता था मानो वह भौंकते-भौंकते दम तोड़ देगा। बाक़ी कुत्ते भी उसका साथ देने लगे। झाड़ू देखकर वे सभी गुस्से में आ गये थे।

"यह झाड़ू नीचे रख दो," वसीली ने देखभाल करनेवाले कर्मचारी को कड़ाई से कहा। "दोष मेरा ही है। देखो! इन कुत्तों को डांटना-डपटना नहीं। जहां तक झाड़ू का सम्बन्ध है तो इसे तो आज ही हमेशा के लिए एक तरफ़ रख दो। यहां शान्ति और ख़ामोशी रहनी चाहिये।"

वाल्या ने रूमाल से डाक्टर के हाथ पर पट्टी बांधी और वे वहां से चले गये।

देखभाल करनेवाला कर्मचारी देर तक यह कहता रहा कि कैसे कुछ कुत्ते भलमनसाहत और शरीफ़ाना बर्ताव का मतलब ही नहीं समझते और भले-बुरे लोगों के बीच भेदभाव नहीं कर सकते।

वह बड़बड़ाता हुआ रबड़ की नली से पिंजरों को धोता रहा। उसने हर कुत्ते के प्याले को पानी से भरा, उनके पिंजरों में थोड़ा घास-फूस बिछाया और फिर ज़ायक़ेदार और प्यारी गंध वाले शोरबे से भरे हुए प्याले रखे। उसने बॉबी के पिंजरे में भी शोरबे का प्याला रखा और फिर फ़ौरन कोज़्याव्का के पिंजरे की ओर चला गया।

"कहो, कोज़्याव्का, शोरबा पसन्द आया?" अपने मनपसन्द कुत्ते को थपथपाते हुए उसने पूछा। कोज़्याव्का इसी बीच बड़े सन्तोष से एक हड्डी चबा रहा था। "बड़े ख़ुशक़िस्मत हो तुम! सड़कों पर आवारागर्दी करते-करते सरकारी ख़र्च पर चलनेवाले अन्वेषण प्रतिष्ठान में आ गये हो। तुम जानते हो क्यों? इसलिए कि तुम बहुत छोटे हो। यहां छोटे कुत्तों की बड़ी ज़रूरत है।"

यह भलामानस कुछ अजीब बातें कह रहा था। कुत्तों की दुनिया में अभी तक बड़े कुत्तों को ही सबसे अच्छा माना जाता रहा है। उनके जिस्म पर दूसरे कुत्तों के काटने से घाव भी कम होते हैं और उन्हें खिलाया-पिलाया भी ख़ूब जाता है। किस छोटे कुत्ते ने भला ग्रेट डेन या अलसेशियन बनने का सपना नहीं देखा होगा। मगर यह देखभाल करनेवाला व्यक्ति उल्टी बातें कह रहा है...

बॉबी ने शोरबा तो खा लिया, मगर शान्त नहीं हुआ। वह शान्त हो भी कैसे सकता था! उसे तो उम्मीद थी कि बदतमीज़ी करने के लिए उसकी पिटाई होगी। इसके विपरीत उसे खिलाया-पिलाया जा रहा था! यह बात बॉबी की समझ में नहीं आ रही थी। शायद वे रात होने का इन्तज़ार कर रहे थे। तब वे उसे पकड़कर बांध देंगे और फिर झाड़ से उसकी पिटाई करेंगे?

बॉबी को धीरे-धीरे नींद आ गई। वह उखड़ी-उखड़ी नींद सोया, मगर फिर भी उसे यह न पता चला कि देखभाल करनेवाले कर्मचारी ने उसके पिंजरे पर किस वक़्त खड़िया से 'कटखना' लिख दिया।

अन्तरिक्ष का डाक्टर

वसीली का कुत्तों से पेश आने का ढंग वाल्या को पसन्द आया। वह न तो उन्हें कभी डांटता-डपटता और न ग़ुस्से में ही आता। वह उनके साथ ऐसे वर्ताव करता मानो वे कुत्ते न हों, छोटे-छोटे बच्चे हों!

कटखना कई दिनों तक सज़ा पाने के डर से भयभीत रहा। वह ज़ोर से धड़कते हुए दिल के साथ रात को जाग उठता, ज़ोर से छलांग लगाता, अपनी जान की रक्षा करने को तैयार रहता और धीरे-धीरे गुर्राता।

"उसे झाड़ू के सपने आते रहते हैं," वसीली ने वाल्या से कहा।

चश्मे के बीच से वसीली की आंखें कुत्ते को देखकर प्यार से चमकती रहतीं। ऐसे क्षणों में बॉबी को बड़ी परेशानी होती और वह दूसरी तरफ़ मुंह कर लेता। सिर्फ़ उसका नया नाम ही दुखद घटना की याद ताज़ा करता रहता। वह किसी तरह से भी अपने नये नाम 'कटखना' का आदी नहीं हो पा रहा था।

"कोई बात नहीं," डाक्टर ने सोचते हुए ऊंची आवाज़ में कहा। "वह शान्त हो जायेगा, घुल-मिल जायेगा और शानदार अन्तरिक्ष-नाविक बनेगा। ठीक है न, वाल्या?"

"अन्तरिक्ष-नाविक..." वाल्या ने मानो सपना सा देखते हुए जवाब दिया। "अन्तरिक्ष में उड़ान करेगा। कटखना नहीं जानता कि उसका भविष्य कितना रोमानी है। मैं तो किसी भी दिन ख़ुशी से उसकी जगह लेने को तैयार हो जाऊं।"

"यह बचकाना बातें हैं," वसीली ने बिगड़ते हुए कहा। "तुम अन्तरिक्षीय चिकित्सा-शास्त्र की विद्यार्थिनी हो, वाल्या, और कृपया यह कभी मत भूलना! जहाज़ का डाक्टर जहाज़ में रहता है। फ़ुटबॉल टीम का डाक्टर गोल के नज़दीक एक बेंच पर बैठा रहता है। सर्जन ऑपरेशन के कमरे में ऑपरेशन करता है। मगर अन्तरिक्ष के डाक्टर की जगह राकेट में नहीं, यन्त्रों के निकट होती है।"

"तुम तो ऐसे कह रहे हो मानो अन्तरिक्ष के डाक्टर ही बनकर पैदा हुए थे," प्रयोगशाला की सहायिका ने प्रत्युत्तर में कहा। "और जब तुम छोटे थे तो खिलौनों के बजाय उपकरणों से ही खेलते रहे होंगे।"

वसीली ज़ोर से हंस दिया।

"बिगड़ो नहीं, वाल्या। तुम तो जानती ही हो कि मैं बहुत ख़ुशक़िस्मत आदमी हूं। तुम्हारे लिए यह सब कुछ बहुत सीधा और साफ़ रास्ता है। कल तुम स्कूल में पढ़ती थीं, आज प्रयोगशाला में सहायिका हो और कल – तुम जानती हो कि कल तुम क्या होगी, क्योंकि तुम कॉलेज में पढ़ रही हो। मगर जब मैं विद्यार्थी था तो राकेटों की बात तो दूर, जेट हवाई जहाज़ भी नई चीज़ थे। मैं पशुओं का डाक्टर बनना चाहता था।"

"तब तुम अन्तरिक्ष के डाक्टर कैसे बन गये?"

"मैं तुम्हें बताता हूं। मैंने जब कॉलेज की पढ़ाई ख़त्म की तो मुझसे पूछा गया कि क्या मैं चिकित्सा और ज्योतिष, इन दो प्राचीन विज्ञानों को एकसाथ मिलाकर नवीनतम विज्ञान अन्तरिक्ष-सम्बन्धी चिकित्सा के क्षेत्र में काम करना चाहूंगा। मैंने फ़ौरन इस मौक़े का फ़ायदा उठाया। और इस तरह यहां आ पहुंचा।"

वसीली जब पशुओं की सर्जरी के कॉलेज का विद्यार्थी बना था तो किसी को कोई हैरानी नहीं हुई थी। घर पर, स्कूल में और शायद उसके हलक़े के सभी लोग जानते थे कि उसे जानवरों से बहुत प्यार है। दयालु मुस्कान, अस्त-व्यस्त बाल, लम्बे क़द और हड़ीले से इस नौजवान को देखते ही छोटे-छोटे लड़के चिल्लाने लगते –"ऊई, डाक्टर, दर्द होता है!" वे जानते थे कि वह नाराज़ नहीं होगा और इसलिए उसकी फली-फूली जेबों को टटोलने के लिए भागे हुए आते। बूढ़ी औरतें और गृहिणियां योल्किन परिवार के फ़्लैट में हमेशा पिल्ले और बिल्ली के अंधे बच्चे लाती

रहतीं। इन बेघर-बार वाले जानवरों को लकड़ी के बक्से में सबसे पहले अपना घर नसीब होता। वसीली के कमरों के कोनों में साहियां और वण्टमूष, कछुए तथा इसी तरह के दूसरे भले-स्वभाव के जानवर रहते।

कभी-कभार इस शौक़ के कारण मुसीबत का भी सामना करना पड़ता।

"एक बार हुआ क्या कि हमारे घर में अच्छा-ख़ासा हंगामा हो गया," वसीली ने कहा। "कूड़े-करकट की टोकरी में से सांप रेंगते हुए निकले और सारे आंगन में फैल गये। ख़ूब शोर मच गया! लोग चीख़ने-चिल्लाने लगे तथा सभी खिड़कियां और दरवाज़े बन्द कर दिये गये। किसी की भी बाहर निकलने की हिम्मत न हुई। एक मिलिशियामैन और चौकीदार लाठियां लिए हुए आये और उन्होंने मेरी मां से कहा कि आंगन से सांपों को हटाये। मैं उस वक़्त स्कूल में था। मेरी मां ने कहा–'हमारे फ़्लैट में सांप नहीं हैं। और तुम लोग हो कि हर बात के लिए मेरे बेटे को ही दोषी ठहराने को तैयार रहते हो! ख़ुद साफ़ कर लो आंगन को!' वे सीधे स्कूल पहुंचे और उन्होंने हेडमास्टर से कहा–'अपने प्राणीविज्ञ को हमारे हवाले कर दीजिये। लोगों को काम पर और सौदा-सुल्फ़ ख़रीदने के लिए बाज़ार जाना है। मगर किसी की भी घर से बाहर क़दम रखने की हिम्मत नहीं हो रही!"

"मैं फ़ौरन भांप गया कि क़िस्सा क्या है! पिछले रोज़ मैंने दलदल में से विषहीन सांपों के कुछ अंडे जमा किये थे और मेरी मां ने शायद उन्हें बाहर फेंक दिया था। बाहर धूप में रखी हुई कूड़े-करकट की टोकरी में फेंके गये ये अंडे गर्मी-गर्मी पाकर विषहिन सांप बन गये थे। रास्ते में मैंने मिलिशियामैन को यह बात समझाने की कोशिश की, मगर वह तो मेरी बात पर कान तक देने को तैयार न था। वह लगातार कहता रहा–'मकान में रहनेवाले किरायेदारों को ज़हरीले सांपों से डराते हो...' मैंने उन छोटे-छोटे सभी विषहीन सांपों को इकट्ठा करके यह साबित किया कि वे काटते नहीं हैं। मगर फिर भी हमें जुर्माना तो देना ही पड़ा... मुझे कभी इस बात का आभास नहीं हुआ था कि मेरा यह शौक़ किसी दिन मेरा पेशा बन जायेगा..."

वसीली ने किसी से भी इस बात की चर्चा नहीं की थी कि कभी उसने हवाबाज़ी के स्कूल में भरती होने की कोशिश की थी। वसीली के सबसे अच्छे दोस्त वीक्तोर चेरन्यायेव के सिवा कोई भी यह नहीं जानता था कि यह अजीब सा और दयालु योल्किन जिसे बालक 'ऊई, डाक्टर, दर्द होता है' के उपनाम से पुकारते थे, उसने प्राणीविज्ञ पशुओं का सर्जन या अफ़्रीका में जाकर कोई बड़ा शिकारी बनने के बजाय एक हवाबाज़ बनने का सपना देखा था। सभी लड़के हवाबाज़ बनना चाहते हैं। मगर बाद में, जब वे बड़े हो जाते हैं तो नई

चाहें पैदा हो जाती हैं और उनके सामने नये लक्ष्य आ जाते हैं। मगर वसीली और वीक्तोर ने स्कूल की अन्तिम परीक्षा होने के बाद हवाबाज़ी के स्कूल में अपनी अर्ज़ियां भेज दीं।

"नमस्ते, साथी... कप्तान," वसीली ने मेज़ के गिर्द बैठे हुए फ़ौजी को तिरछी नज़र से देखते और उसके कन्धे पर पद के सितारे गिनते हुए कहा।

"नमस्ते," नज़र ऊपर उठाये बिना ही कप्तान ने जवाब दिया और एक अख़बार हाथ में लिया। "यह शीर्षक पढ़ो, मगर नज़दीक नहीं आओ! जहां खड़े हो, वहीं से पढ़ो। तुम चश्मा लगाते हो? क्या तुम्हें यह मालूम नहीं था कि यहां तेज़ नज़र की ज़रूरत होती है? पर ख़ैर, मैं समझता हूं... लेकिन हवाबाज़ सिर्फ़ अपना ही चश्मा यानी हवाबाज़ की चौखूंटे शीशे की ऐनक ही पहनता है।"

वसीली के मित्र को हवाबाज़ी के स्कूल में ले लिया गया। अपनी ख़ुशी को दबाते हुए उसने इस तरह वसीली को सान्त्वना दी।

"देखो डाक्टर, बुरा नहीं मानते! डाक्टर अगर चश्मा पहने तो बहुत जचता है, अधिक सम्मानित प्रतीत होता है।"

ख़ुशक़िस्मत वीक्तोर ने जहाज़ों के बारे में सभी तरह की जानकारी प्राप्त की, पैराशूट के सहारे छलांगें लगाईं, प्रशिक्षण के हवाई जहाज़ में उड़ान करना सीखा और लड़ाकू जेट हवाई जहाज़ का हवाबाज़ बनने का प्रशिक्षण पा लिया। कुछ ही समय बाद उसे अलग से हवाई जहाज़ मिल गया और वह ऊंचाई से दुनिया को देखने लगा।

वीक्तोर के सहपाठी उससे ईर्ष्या करते। मगर वसीली जब अप्रत्याशित ही अन्तरिक्ष का डाक्टर बन गया तो उसकी ईर्ष्या ख़तम हो गई। वसीली के सामने वीक्तोर की तुलना में दुनिया का दूसरा ही चित्र उभरने लगा। वीक्तोर जंगलों, नदियों और नगरों के छोटे-छोटे चिन्हों के रूप में दुनिया को देखता था, मगर वसीली दुनिया को महाद्वीपों और सागरों की रूपरेखा वाले महान ग्लोब के रूप में देखने लगा। कारण कि वसीली को जिन लोगों को अन्तरिक्षीय उड़ानों के लिए तैयार करना था वे दुनिया को इसी रूप में देखेंगे।

अन्तरिक्ष के डाक्टर के रूप में वसीली सहर्ष काम करता था। सभी लोग उसे बहुत सम्मानपूर्वक उसका कुलनाम लेकर बुलाते थे और वह किसी प्रकार भी इसका अभ्यस्त नहीं हो पा रहा था। उसे झेंप महसूस होती और उसके चेहरे पर सुर्ख़ी दौड़ जाती। मगर बाद में उसने अपने मन को यह कहकर समझा लिया कि लोगों द्वारा व्यक्त किया जानेवाला सम्मान उसके व्यक्तित्व के प्रति नहीं, बल्कि नये विज्ञान के प्रति है। इस तरह वह शान्त हो गया।

डरो नहीं, डरने की कोई बात नहीं!

"हम कुत्तों से क्यों काम लेते हैं?". प्रयोगशाला की सहायिका ने एक दिन पूछा। "मेंढकों या बन्दरों का नहीं, कुत्तों का ही क्यों इस्तेमाल करते हैं?"

"मैं समझता हूं कि इसके बहुत से कारण हैं," वसीली ने कहा। "पहली बात तो यह है कि उनके शरीर की बनावट हमारे शरीर जैसी है। दूसरे वे जल्दी घुल-मिल जाते हैं और विश्वास करने लगते हैं। तीसरे वे तजरबों के वक़्त शान्त रहते हैं और घबराते नहीं। ज़रा ग़ौर करो, वाल्या, कि कुत्ते इन्सान के कितना अधिक काम आते हैं। शिकार के वक़्त, लड़ाई में और प्रयोगशालाओं में। खोज-कार्य के लिए हमेशा उन्हें ही भेजा जाता है। अन्तरिक्ष में भी अब वे ही खोजी बनकर जायेंगे। तो आओ, अब अपने इन कुत्तों के पास चलें और देखें कि इनका क्या हाल है।"

ये छोटे-छोटे खोजी ज़रा भी तो नहीं जानते थे कि वे कितने अधिक महत्त्वपूर्ण हैं और मज़े की ज़िन्दगी बिता रहे थे। उनके साथ बहुत अच्छा बर्ताव होता था जो उन्हें पसन्द था। पौष्टिक ख़ुराक उन्हें अच्छी लगती थी। उनकी ख़ुराक कुत्तों के ज़ायके को ध्यान में रखकर बनाई जाती थी और उसमें छोटी-छोटी हड्डियां, नर्म रेशे और मांस के टुकड़े तक भी शामिल होते थे। वे अगर भौंकते थे तो ख़ुशी और दोस्ती का भाव व्यक्त करते हुए।

कुछ ही समय पहले गलियों में आवारा घूमनेवाले इन कुत्तों को अब कई लोग प्यार से खिलाते-पिलाते थे, नहलाते और उनके बाल साफ़ करते थे, उनका वज़न करते थे, क़द मापते थे, घुमाने के लिए बाहर ले जाते थे और उन्हें साफ़-सुथरा रहना सिखाते थे! अगर किसी शैतान को कभी एक-आध चपत लग भी जाती तो वह भी सिर्फ़ मज़ाक में ही। इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं होती थी।

चितकबरा कहलानेवाला छोटा सा पंचरंगा कुत्ता भी अब शान्त हो गया था जो पहले ज़रा-ज़रा सी बात पर गला फाड़-फाड़कर भौंकने को तैयार रहता था। उसमें सिर्फ़ एक ही बुरी आदत रह गई थी। वह यह कि जब कोई पीछे से आता तो वह चौंक उठता और अपने दांत दिखाता हुआ गुर्राने लगता। ज़ाहिर था कि कभी किसी ज़ालिम आदमी ने दबे पांव पीछे से आकर उसकी बुरी तरह से पिटाई की थी। इसलिए चितकबरा जब हड्डी को खाने में व्यस्त होता या सोया रहता तो पहले से आवाज़ दिये बिना कोई भी उसके पास न जाता।

कोज़्याव्का सबका चहेता था। उसकी बहुत ही शानदार दुम थी जो उसकी कुत्ते की दयालु आत्मा के पूरे विस्तार को बहुत ही अच्छी तरह से व्यक्त करती थी। वह जब ख़ुश होता तो उसकी दुम चित्रकार की तूलिका की तरह हवा में लहराती। वह सैकड़ों बार, हज़ारों बार हिलती-डुलती और फिर भी न थकती! हां, थोड़ी देर के लिए उसकी पूंछ और सिर नीचे को झुक जाते। लाड़-दुलार की आशा करते हुए उसका सिर और दुम बिल्कुल शान्त रहते और उसके बाद फिर से उसकी दुम ऊपर को उठती और एक ख़ास ढंग से हिलती-डुलती मानो कह रही हो "बहुत सुखी हूं मैं अपने जीवन से!" जब वह लड़ने को तैयार होता तो उसकी दुम तन जाती और जब उससे कोई अपराध हो जाता तो शर्म से उसकी दुम टांगों के बीच दुबक जाती। देखभाल करनेवाला व्यक्ति जब खाने का प्याला लेकर आता तो उसकी दुम का सिरा—दुम की हड्डियों का आख़िरी हिस्सा—जिन भावनाओं को व्यक्त करता, उन्हें शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।

सुस्त-वजूद और धीरे-धीरे हिलने-डुलनेवाला पाल्मा, कोज़्याव्का के बिल्कुल उलट था। वह हमेशा जम्हाइयां और अंगड़ाइयां लेता रहता। उसके झबरीले और काले कान, उसकी सफ़ेद थूथनी के दोनों ओर ऐसे लटकते रहते मानो किसी लापरवाह दर्ज़ी ने उन्हें ग़लती से वहां सी दिया हो।

छोटे-छोटे बारीक बालों वाला 'छोकरा' कुत्ता अपनी काली-काली ईमानदार आंखों से टुकुर-टुकुर देखता रहता। अपनी आंखों में ऐसी ही मासूम अभिव्यक्ति लिए हुए वह जेब से बाहर निकले हुए रूमाल को चुरा भी लेता था। जब पकड़ा जाता तो गहरी सांस लेता और दुम झुका देता। मगर वह सामने खड़े व्यक्ति की आंखों में आंखें डालकर देखता रहता मानों साफ़ तौर पर कह रहा हो—"देखा
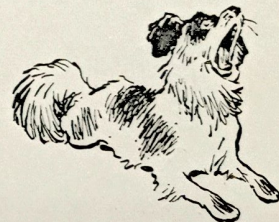
आपने! गली में आवारागर्दी करके क्या कुछ सीखा जा सकता है? मैं सब कुछ जानता-समझता हूं, मगर क्या करूं, आदत से मजबूर हूं..." कुछ क्षण तक उसे हार्दिक पश्चाताप होता रहता, मगर इसके बाद यह छोटा सा चोर फिर कोई चीज़ चुरा लेता। सचमुच छोकरे को तो नये सिरे से शिक्षा देने की बेहद ज़रूरत थी।

वक़्त गुज़रता गया और दूसरे कुत्तों की तरह बॉबी भी बदल गया। अब वह घबराया हुआ न रहकर शान्त रहने लगा था। वह बेहद चुपचाप हो गया था, शायद ही कभी भौंकता या गुस्से में आता और न अपने पड़ोसियों से लड़ता-झगड़ता। मगर उसके शान्त हो जाने का यह मतलब नहीं था कि वह उदासीन या सुस्त हो गया था। वह हमेशा बहुत सावधान रहता था। उसके नुकीले कान तीरों के सिरों की भांति तने रहते और उसकी नज़र हर छोटी से छोटी चीज़ को ताड़ती रहती। बॉबी यह समझने की कोशिश करता कि सफ़ेद लबादों वाले ये लोग उससे किस चीज़ की आशा करते हैं, वे इतने दयालु और उदार क्यों हैं? क्या उसे किसी नई कड़वाहट या मुसीबत का सामना करना होगा?

एक दिन वसीली सामान्य से अधिक देर तक उसके पिंजरे के सामने खड़ा रहा। कुछ देर तक खड़े रहने के बाद डाक्टर ने दृढ़तापूर्वक दरवाज़ा खोला।

"आओ कटखने!"

बॉबी खिल उठा। उसकी काली आंखें चमकने लगीं। आख़िर तो वह इस थका और ऊबा देनेवाले पिंजरे से बाहर निकल रहा था! मगर उसने अपनी ख़ुशी किसी तरह भी ज़ाहिर न की। वह धीरे से उठा और इत्मीनान से इस अजीब से व्यक्ति के पीछे-पीछे हो लिया जो उसे सज़ा देना भूल गया था। सिर झुकाये हुए वह लम्बे दालान में काली एड़ियों के पीछे-पीछे चलता रहा और इस मकान से परिचित होता रहा। शुरू में फ़र्श के पॉलिश की तेज़ गन्ध से उसकी नाक में झुरझुरी सी हुई, फिर रसोईघर से उसे भोजन की प्यारी-प्यारी गन्ध आई और इसके बाद उसने अपने को दवाइयों के निकट पाया।

वे एक कमरे में गये जहां कोई ख़ास गन्ध नहीं थी, मगर कुत्ते को मशीनी तेल की हल्की सी गन्ध मिल ही गई। दीवार के साथ काले और सफ़ेद बक्स रखे हुए थे। बॉबी ने बारी-बारी से उनको सूंघा और सुखद ठंडी धातु से अपनी नाक छुआई।

उसने घरघराहट की आवाज़ सुनी और वह रुक गया। एक छोटा सा डिब्बा भनभना रहा था और वसीली कभी उसे एक गाल के साथ लगाता तो कभी दूसरे से। बॉबी ने यह अजीब सी चीज़ पहली बार देखी थी।

"मैं हजामत बना लूं, तुम्हें कोई एतराज़ तो नहीं, कटखने?" ध्यान से अपनी ओर देखते हुए कुत्ते से वसीली ने पूछा। "पहले तो इस बिजली के रेज़र से परिचित हो जाओ और फिर अन्य यन्त्रों से तुम्हारा परिचय कराया जायेगा।"

हजामत बनाने के बाद वसीली ने तार लपेटा और रेज़र को अपनी जेब में डाल लिया। फिर वह एक बड़े काले बक्स के पास गया और उसने अपनी उंगली से एक बटन दबाया, "घर्र" बक्स में से आवाज़ होने लगी और कुत्ता उसे ध्यान से देखते हुए पीछे हट गया।

बॉबी इस मशीन को ध्यान से देख रहा था। ऐसा करते हुए उसकी थूथनी वास्तव से छोटी नज़र आ रही थी और उसकी पीठ के बाल तने हुए थे। कुत्ता अपने अनुभव से यह जानता था कि गड़गड़ाने और घरघरानेवाली कोई भी चीज़ कूदकर उसपर झपट सकती है।

इस मशीन के बन्द होते ही वसीली ने दूसरी मशीन चालू कर दी। यह मशीन एक पुराने और थके-हारे इंजन की तरह "फक-फक" करती थी। यह पम्प था जो उम्र भर अपने बाक़ी हिस्सों में तेल पहुंचाने का काम करता है और वह मानो "फक-फक" करते हुए अपने इस ऊबा देनेवाले काम की शिकायत कर रहा था। उसने आख़िरी बार ज़ोर से "फक-फक" की आवाज़ की और चुप हो गया।

बॉबी कमरे के बीचोंबीच बैठा हुआ आंखें झपका रहा था।

"तुम्हें इसका आदी होना होगा, कटखने," वसीली ने कहा, "तुम्हारा मशीनों से बहुत वास्ता पड़ेगा।"

वसीली तामचीनी के हलके रंग वाले एक बक्स के पास गया और उसने उसे चालू कर दिया। ज़ोर की चीख़ सी सुनाई दी और कुत्ता डरकर दरवाज़े की तरफ़ भाग गया। घड़ी भर बाद वह चीख़ बन्द हो गई और फिर उसके बाद सन्नाटे में यह शान्त सी आवाज़

सुनाई दी – "डरो नहीं! सबसे बड़ी बात तो यही है कि डरो नहीं, तुम बहादुर हो! यह कोई डरावनी चीज़ नहीं है।"

बॉबी दरवाज़े की ओर अपनी पीठ करके बैठ गया और उसने अपनी समझदार आंखें वसीली के चेहरे पर जमा दीं। वसीली यह सोचते हुए मुस्कराया – "यह कुत्ता डरपोक नहीं है।"

डाक्टर फिर बक्स के पास गया। इस बार कुत्ता तनिक भी हिला-डुला नहीं और उसने बहुत ही सब्र से वह भयानक चीख़ सुनी।

"बस, आज इतना ही काफ़ी है," वसीली ने कहा। बॉबी काले बूटों के पीछे-पीछे अपने पिंजरे की ओर लौट चला। उसके कानों में अभी तक वह चीख़ गूंज रही थी। इसलिए उसने दालान में फैली हुई गन्धों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

कटखने के पड़ोसियों को भी इस कमरे में ले जाया गया। उनमें से कुछ शान्त रहे, कुछ भौंकने लगे और कुछ तो शान्तिप्रिय पम्प की "फक-फक" से ही डर गये। मगर इस क्रम के कई बार दोहराये जाने के बाद सभी धीरे-धीरे इन आवाज़ों के आदी हो गये।

कुछ समय बाद अन्तरिक्ष के इन भावी खोजियों को ख़ास तरह के पिंजरों में अलग-अलग बैठाया गया। पिंजरों का आकार हर दिन छोटा होता गया। आख़िरी पिंजरा इतना छोटा था कि उसका जंगला कुत्ते के पहलुओं को छूता था और कुत्ते की नाक ठंडी धातु को छू सकती थी।

कुत्तों को यह बड़ा ही अटपटा सा खेल लगा, मगर वह कई दिनों तक जारी रहा। डाक्टरों के अनुसार यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण तजरबा था और वे इसे "स्वतन्त्रता पर पाबन्दी" कहते थे।

किसी कुत्ते को सूटकेस में बन्द करने की कोशिश तो कर देखिये! वह ऐसा गुल-गपाड़ा करे कि आप घर से बाहर भाग जायेंगे। और फिर जब आपको कुछ समय पहले तक गलियों में आवारा घूमनेवाले कुत्तों की आज़ादी पर पाबन्दी लगानी हो तो और भी सावधान रहने की ज़रूरत होती है। पिंजरे ने इन आवारा कुत्तों को सिखाया कि यह न तो चौक है, न कोई गली-सड़क, बल्कि तुम्हारा घर है। अगला पिंजरा और भी छोटा हो गया और उन्होंने नये सिरे से यह सीखा – यह गली नहीं है, रास्ता भी नहीं है, कल वाला घर भी नहीं है, तुम्हारा नया घर है। और बस चुप रहो!

यह तो सभी जानते हैं कि किसी भी चीज़ की आदत धीरे-धीरे पड़ती है। मिसाल के तौर पर यह कि कर्मचारी, लम्बी थाली के समान छोटी सी धातु की ट्रे के साथ कोज़्याव्का को रस्सी से बांध देते। कोज़्याव्का उसे फ़ौरन काट डालता। कर्मचारी फिर उसे धीरे से उसी पर बैठाकर बांध देते। वह फिर उसे काट डालता और प्यार से दुम हिलाता।

आख़िर किस की जीत होगी? कौन अधिक हठी सिद्ध होगा?

अन्त में वह दिन आया जब कोज़्याव्का रस्सी से बंधा हुआ चुपचाप बैठा रहने लगा और उसने अपने दांतों का इस्तेमाल बन्द कर दिया।

अब असली काम शुरू करना सम्भव था। प्रोफ़ेसर ने सभी डाक्टरों को बुलाया। उनकी सभा लड़ाई के पहले कमान्डरों की सभा की याद ताज़ा करती थी। हर डाक्टर अपना काम जानता था, मगर उसने अपने मुखिया के

आदेशों को सुनते हुए फिर से अपने कार्य को स्पष्ट किया ताकि महत्त्वपूर्ण तजरबे के समय कोई ग़लती न हो।

"मैं समझता हूं," प्रोफ़ेसर ने कहा, "रूपांकनकार शीघ्र ही हमें इस बात की सूचना देंगे कि अन्तरिक्ष-यान तैयार हो गया है। मगर हमारी इजाज़त के बिना मानव उसमें उड़ान नहीं करेगा। हम अन्तरिक्ष-यान में जानवरों की नई उड़ानों की योजना तैयार कर रहे हैं। हमारे खोजियों को पांच ख़तरों का सामना करना होगा – इंजनों के कम्पन, वेगवर्द्धन और परिमन्दन की भयानक शक्तियों, भारहीनता, बहुत अधिक उंचाई पर वातावरण के अभाव और अन्तरिक्ष में ख़तरनाक विकिरण का। अन्तरिक्ष-नाविकों के ये पांच अदृश्य शत्रु हैं और हमें निश्चित रूप से अवश्य ही यह जानना चाहिये कि वे शरीर पर क्या प्रभाव डालते हैं। कल से हमें कुत्तों को भावी उड़ानों के लिए तैयार करना चाहिये। यथा-संभव उन्हें हर चीज़ का यहीं तजरबा हासिल करना चाहिये।"

अब हम शुरू करते हैं...

उस सुबह को नर्म-नर्म और सफ़ेद हिमकण धीरे-धीरे आकाश से धरती पर उतर रहे थे। वसीली पिंजरों के पास से गुज़रता हुआ सामान्य से अधिक देर तक कुत्तों से बातें करता रहा। कटखने के पिंजरे के निकट खड़े होते हुए उसने प्यार से पूछा –

"क्या हाल-चाल है? तुम्हारे कान बता रहे हैं कि मज़े में हो! जाड़ा तुम्हें पसन्द है न, कटखने! आज हम अपना काम शुरू कर रहे हैं! शुरू कर रहे हैं हम अपना काम!" अपने वालों को सहलाते हुए वसीली ने दोहराया। "कटखने, छोकरे, कोज़्यावका, चलो मेरे साथ!"

उस सुबह को, जब पहली बर्फ़ गिरी थी कटखने के पिंजरे का दरवाज़ा खुला और उसने नये और कठिन, मगर सुखद संसार में प्रवेश किया।

वाल्या ने कुत्तों को हरे रंग के मोटे कपड़े की छोटी-छोटी क़मीज़ें और जांघिये पहना दिये। तनियां बांधते हुए उसे बहुत ख़ुशी हुई क्योंकि इन छोटे-छोटे सूटों का डिज़ाइन उसने ख़ुद ही तैयार किया था और उन्हें सिया भी ख़ुद ही था। कुत्ते अब छतरी-सैनिक जैसे दिखाई दे रहे थे और अपनी टांगों को चौड़ा किए हुए अटपटे ढंग से चल रहे थे।

"अब तुम सचमुच ही परीक्षण-कुत्ते बन गये हो!" वाल्या ने सन्तोष के साथ कहा।

कुत्तों को धातु की थालियों पर बैठाकर कई पट्टों से बांध दिया गया। उनकी पोशाकों के नीचे पिक-अप नामक छोटे-छोटे यन्त्र छिपे हुए थे। वे बहुत ही साधारण यन्त्र थे। उनमें से कुछ में काग़ज़ का एक छोटा सा पैकेट था जिसमें एक चक्करदार तार रखा हुआ था और कुछ में कोयले के चूरे से भरी हुई रबर की पतली सी नली थी। मगर काग़ज़ और तार या कोयले के चूर्ण से भरी नली – यह बहुत ही संवेदनशील यन्त्र था जो हृदय या मांस-पेशियों से आनेवाली हल्की से हल्की विद्युत-लहर को अनुभव करता था और उसे दोलनदर्शी की ओर प्रसारित कर देता था। मशीन जब चालू की गई तो कुत्तों वाली थालियां हिलने लगीं और पर्दे पर एक टेढ़ी-मेढ़ी हरी रेखा प्रगट हुई। फ़िल्म के एक टुकड़े के साथ-साथ उजली किरण का प्रकाश चल रहा था जो उस टेढ़ी-मेढ़ी रेखा को स्पष्ट करता जाता था – यह नब्ज़, सांस की गति और रक्तचाप के सम्बन्ध में पिक-अप द्वारा दी जानेवाली सूचना को पुनः प्रगट करता जाता था।

ख़ुर्दबीन की मदद से भी आप घास को उगते हुए नहीं देख सकते, मगर पिक-अप की मदद से ऐसा करना सम्भव है। घास की एक पत्ती के साथ पतले तार का एक छोटा सा टुकड़ा बांध दिया जाता है, घास की नई पत्ती अदृश्य रूप से निकलती है, मगर विद्युत-धारा इसे महसूस करती है। इस यन्त्र की सुई हिलती-डुलती है और एक इंच के करोड़वें भाग के रूप में उसकी माप स्पष्ट करती है।

वाल्या ने देखा कि कटखने की थाली कांपने और हिलने लगी है। कंपकंपाहट के तनाव से घबराकर कुत्ते ने अपने दांत भींच लिए और उसके

कान पीछे की ओर सिमट गये। वसीली उस समय यन्त्रों की ओर देख रहा था, इसलिए इस बात की ओर उसका ध्यान नहीं गया कि कटखना कितना भयभीत था।

"देखो प्यारे! आराम से लेटे रहो, घबराओ नहीं," वाल्या ने सहानुभूतिपूर्वक फुसफुसाकर कहा।

मशीन की गड़गड़ाहट में वाल्या की आवाज़ अच्छी तरह से सुनाई नहीं दी, फिर भी कटखने ने कुछ इत्मीनान ज़ाहिर किया। उसे आराम से लेटना सिखाया गया था, इसलिए उसने हिलती हुई थाली से कूद जाने की कोई कोशिश नहीं की।

मगर पिक-अप बता रहे थे कि कटखने की नब्ज़ तेज़ी से चल रही है और डाक्टरों ने पर्दे पर दिखाई देनेवाली छोटी सी हरी रोशनी की गड़बड़ी की ओर ध्यान दिया।

मकान की ड्योढ़ी पर लेटकर चौकीदारी करनेवाले वफ़ादार कुत्ते की तरह कटखने ने सब्र से सब कुछ सहा। आख़िर थाली ने हिलना-डुलना बन्द किया और सभी पट्टे तथा तार खोले गये तो वह अपनी ज़बान बाहर निकालकर फ़र्श पर लेट गया। कुछ देर आराम करने के बाद वह ऐसे उछलकर खड़ा हो गया मानो कुछ हुआ ही न हो।

"बहुत बहादुर हो!" वाल्या ने उसकी प्रशंसा की और उसे मिठाई खिलाई।

मगर कोज़्याव्का दर्दीली आवाज़ में कराहता रहा और बाद में भी बहुत देर तक कांपता रहा। चीनी की डली मिलने पर ही वह शान्त हुआ।

छोकरा तजरबे के बाद हांफता रहा और अपनी फूली-फूली आंखों में आश्चर्य की झलक लिए हुए सभी की ओर देखता रहा।

"तुम लोग जानते हो कि वह अब क्या सोच रहा है?" वसीली ने पूछा। उसकी आंखों में शरारत चमक रही थी। "वह ख़ुशी से यह मान लेगा कि कल वह एक क़ावला उड़ा ले गया था। उसे बहुत पहले ही अपनी इस हरकत पर अफ़सोस हो चुका था और वह सज़ा पाने को भी तैयार था। मगर एक मामूली क़ावले के लिए उसे इस प्रकार झकझोरा जायेगा, इसकी उसने निश्चय ही आशा नहीं की थी।"

हर कोई हंस दिया मगर प्रोफ़ेसर ने कहा—"जो भी हो पहला शत्रु, कम्पन या छोकरे कुत्ते के अनुभव के अनुसार झकझोरा जाना अन्तरिक्ष-नाविक का सबसे कमज़ोर दुश्मन है। जेट हवाई जहाज़ के हवावाज़ का यह कहीं अधिक गंभीर दुश्मन है। इसे "फ़्लटर" कहा जाता है। हवाई जहाज़ के पंख इस तरह से कांपने लगते हैं मानो वे प्लाईवुड के बने हों। हवावाज़ को ज़ोरों के झटके लगते हैं, हवाई जहाज़ टुकड़े-टुकड़े हो जाता है... कम्पन से राकेट तबाह नहीं होता, अन्तरिक्ष-नाविक को सिर्फ़ इसका आदी होना पड़ता है।"

हर दिन यह प्रशिक्षण होता। मशीन उन्हें अच्छी तरह से झकझोरती। पट्टों से बंधे हुए कुत्ते चुपचाप लेटे रहते और उनकी नम ज़बानें बाहर निकली हुई कुछ-कुछ कांपती रहतीं। वसीली पर्दे की ओर देखता रहता और हरी रेखाओं के रहस्यपूर्ण उतार-चढ़ाव से सन्तोष प्रगट करता।

मशीनें गड़गड़ाती रहतीं और इसी बीच वाल्या धीरे-धीरे गाती हुई पिक-अप के बारे में सोचती रहती। इस समय वे कटखने के साथ कांप रहे हैं, मगर बाद में वे एक राकेट में उसके साथ उड़ान करेंगे और आंखों देखा हाल बयान करनेवाले व्यक्ति से भी बेहतर ढंग से इस छोटे से यात्री की भावनाओं और यातनाओं का वर्णन करेंगे।

"फ़ुटबाल का डाक्टर खेल के मैदान में रहता है। जहाज़ का डाक्टर जहाज़ पर होता है। सर्जन अपने मरीज़ के पास रहता है। मगर अन्तरिक्ष का डाक्टर यन्त्रों के पास अन्तरिक्ष में नहीं रहता है।" वसीली की आवाज़ की नक़ल करते हुए वाल्या ने कहा। उसने गहरी सांस ली—"मगर मेरा क्या होगा? मैं क़मीज़ों और पतलूनों की सिलाई करती हूं, कुत्तों को कपड़े पहनाती और उतारती हूं। इस तरह मैं खोजों के निकट तो नहीं हो पाती।"

कई दिनों के बाद कुत्तों को एक चक्राकार हॉल में ले जाया गया। इस हाल के ठीक बीच में एक मशीन रखी हुई थी जो बहुत कुछ चक्कर-झूले से मिलती-जुलती थी। एक भारी खम्भे के सहारे एक ढांचा लगा हुआ था जिसके दोनों सिरों पर केबिन लटके हुए थे। कुत्तों का अब एक नई चीज़ से परिचय कराया जानेवाला था। यह मशीन सेन्ट्रीफ़्यूग
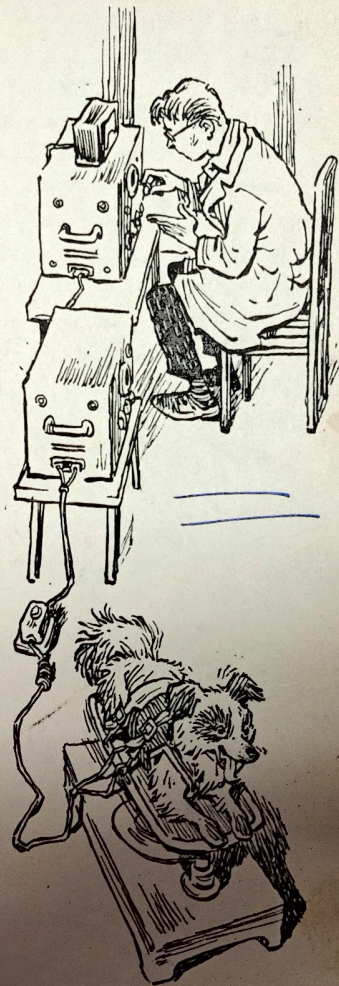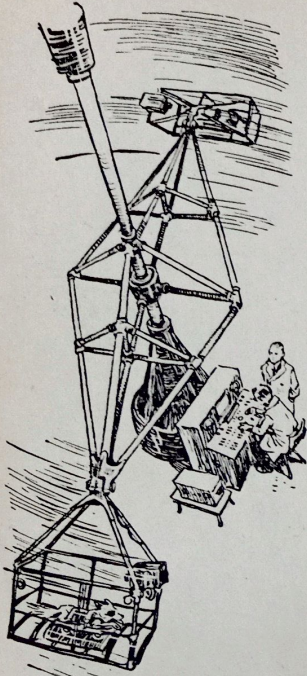
कहलाती है। वह अधिकाधिक तेज़ घूमती हुई गुरुत्वाकर्षण की शक्ति पैदा कर रही थी।

इस मशीन का संचालक था – डाक्टर द्रोनोव और उसकी सहायिका थी ज़ीना। पट्टों से बांधकर थाली में बिठाये गये कटखने को उन्होंने झूले जैसे केबिन में रखकर दरवाज़ा बन्द कर दिया।

"आराम से लेटे रहो और दुम नहीं हिलाओ," डाक्टर ने हुक्म दिया।

मोटर गड़गड़ाई, केबिन हिला-डुला और घूमने लगा। दीवारें कुत्ते की ओर आती सी प्रतीत हुईं और तेज़ी से उसके पास से गुज़रने लगीं। धीरे-धीरे वे एक रेखा में बदल गईं। हवा से उसके बाल उड़ रहे थे, उसकी नाक ठंडी हो गई थी। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह अपने सिर को हिला-डुला नहीं सकता क्योंकि हवा उसे नीचे की ओर दबा रही थी। केबिन घूमता हुआ धीरे-धीरे ऊपर को उठ रहा था और पहलू की ओर झुकता जा रहा था। डाक्टर और उसकी सहायिका इस मशीन के नीचे टेलीविज़न सेट और यन्त्रों के पास बैठे हुए थे। वहां से ऐसा लगता था मानो सर्कस के मोटर-साइकल-चालक की भांति, जो चक्र की भीतरी दीवारों पर अपनी मोटर दौड़ाता है, केबिन भी दीवारों पर चल रहा था।

केबिन जितनी अधिक तेज़ी से घूमता था, उतना ही अधिक ज़ोर से कोई अदृश्य देव कुत्ते को दबाता जा रहा था। कुत्ते का वज़न निरन्तर बढ़ रहा था। पांच किलोग्राम के कटखने का वज़न एक बड़े आवारा कुत्ते, एक शिकारी कुत्ते और फिर एक अलसेशियन कुत्ते के बराबर हुआ। मगर वह आकार में बड़ा न होकर इसके विपरीत छोटा हो गया। दबाव की शक्ति उसे दबाती जा रही थी।

यन्त्रों ने डाक्टर द्रोनोव को बताया कि कटखने का वज़न सात गुना बढ़ चुका था। टेलीविज़न के पर्दे पर एक छोटा और पतला सा चेहरा दिखाई दे रहा था जो यह ज़ाहिर करता था कि उसका ख़ून सीसे की भांति भारी हो चुका था। ओह, उसके दिल के लिये धड़कता रहना कितना मुश्किल हो रहा था! ऐसा लगता था मानो उसका दिल भी सीसे का बना हुआ था...

मशीन की मोटर बन्द कर दी गई, मगर ढांचा घूमता रहा। कुत्ते ने असाधारण हल्कापन महसूस किया, मानो वह हवा के ऊपर तैर रहा हो। उसे पता नहीं चला कि केबिन कब ठहर गया।

"ज़िन्दा हो?" केबिन में झांकते हुए डाक्टर द्रोनोव ने मज़ाक़ किया।

ज़िन्दा तो था! मगर ज़रा इसकी ओर देखो तो... वह अभी तक तेज़ी से हांफ रहा था, हतप्रभ सा आंखें झपका रहा था और उसके मुंह से ढेर सी लार बह रही थी।

"शाबाश!" हांफते हुए कुत्ते को थपथपाकर डाक्टर ने कहा। "यह है आवारा कुत्ता होने और ज़िन्दगी में सभी चीज़ों का तजरबा करने का मतलब! पूडल नसल का कुत्ता तो कभी इसे बर्दाश्त न कर पाता। मैं अच्छी तरह से जानता हूं एक पूडल को," द्रोनोव ध्यान से कुत्ते को देखते हुए और उससे बातें करते हुए कहता गया। "वह बहुत ही समझदार, सचमुच प्रतिभाशाली होता है। मगर उसकी प्रतिभा छोटी-छोटी चीज़ों, अपने मालिक के स्लीपर लाने में ही बरबाद हो जाती है। वह कभी भी सेन्ट्रीफ़्यूग के चक्कर बर्दाश्त न कर पाता।"
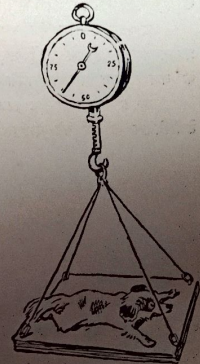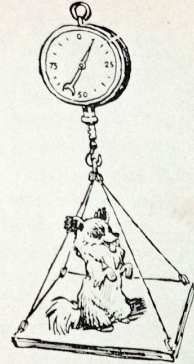
"और कटखने के बारे में आप क्या सोचते हैं? क्या वह कल इस मशीन को बर्दाश्त कर पायेगा?" ज़ीना ने पूछा।

"मुझे यक़ीन है कि जरूर कर पायेगा।"

अगले दिन अदृश्य देव और भी ज्यादा नाराज़ था। कटखने पर और भी ज्यादा भारी गुज़री। उसका सिर सामने की ओर करके उसे केबिन में बिठाया गया ताकि उसका सिर ही वज़न को सबसे पहले महसूस करे। उसका ख़ून पैरों की ओर दौड़ गया, उसकी आंखों के सामने अन्धेरा छा गया और वह बेहोश हो गया।

अगली बार ख़ून पीछे की ओर गया और उसकी आंखों के सामने काली फ़िल्म की जगह लाल फ़िल्म उभरी क्योंकि ख़ून तेजी से उसके सिर की ओर जा रहा था। निश्चय ही पाठक यह जानते हैं कि ऐसा इसलिये होता है कि शरीर का हर कोष्ठक अपने साथ वाले कोष्ठक को दबाता है और रक्त सबसे अधिक आसानी से गतिशील होने के कारण दबाव की प्रबल शक्ति से सबसे पहले प्रभावित होता है।

डाक्टर द्रोनोव जानता था कि इस समय कटखना कैसे महसूस कर रहा था। अपने अनुभव और अक्सीलिरोग्राफ़ के रिकार्डों से उसे काली और लाल फ़िल्मों की भी जानकारी थी। यह यन्त्र काग़ज़ पर दबाव (यानी, वज़न की वृद्धि) को और यह ज़ाहिर करनेवाली ऊबड़-खाबड़ रेखा खींचता जा रहा था कि हर अवस्था कितने सेकण्डों या मिनटों तक क़ायम रहती है।

डाक्टर द्रोनोव को यह भी मालूम था कि अदृश्य शक्तियां जब छाती या पीठ पर प्रहार करती हैं तो उन्हें सहन करना अपेक्षाकृत आसान होता है और यह कि पांव या सिर के बल उड़ान करना सबसे अधिक अरुचिकर होता है और प्राणी बेहोश हो जाता है।

इसके बावजूद डाक्टर ने कुत्तों को हर संभव अवस्था में मशीन में रखा और टेलीविज़न के पर्दे को देखता हुआ एक छोटा सा गीत गुनगुनाता रहा—

ला, ला, ला, ला
ली, ली, ली,
चले सफ़र पर हम तो जी।
दुश्मन हमें डराता है।
नज़र नहीं वह आता है॥

डाक्टर द्रोनोव की बग़ल में बैठी हुई ज़ीना प्रशिक्षण की कॉपी में टिप्पणियां लिखती जा रही थी। मगर यन्त्र स्वयं ही सबसे सही रिकार्ड दर्ज कर रहे थे। वे कुत्तों की छातियों, पहलुओं और पीठों पर प्रहार करनेवाले प्रभावों को रिकार्ड करते जा रहे थे।

ज़ीना ने डाक्टर द्रोनोव से यह नहीं पूछा कि किसलिये उन असम रेखाओं पर सैकड़ों मीटर फ़िल्म इस्तेमाल की जा रही थी। वह जानती थी कि डाक्टर द्रोनोव रिकार्डों की तुलना करना चाहता था। जब राकेट उड़ेंगे तो नये रिकार्ड यह ज़ाहिर करेंगे कि उस समय कुत्तों की क्या हालत रही। तब रिकार्डों की तुलना करके डाक्टर द्रोनोव मालूम कर लेगा कि कौनसी अदृश्य शक्तियां उड़ान के समय अन्तरिक्ष-नाविक पर प्रहार करती हैं।

ला, ला, ला, ला
ली, ली, ली,
चले सफ़र पर हम तो जी।

डाक्टर गा रहा था। ज़ीना गर्व से उसकी ओर देख रही थी। ऐसे ही लोगों ने, डाक्टरों और वैज्ञानिकों ने, हज़ारों परीक्षण और तजरबे किये थे। सेन्ट्रीफ़्यूग मशीन में कुत्तों को ही नहीं, बल्कि मज़बूत दिल वाले हवाबाज़ों को भी घुमाया जाता था। वे पांच से दस मिनट तक बारह गुना तक के वर्द्धन को आसानी से सहन कर लेते थे। उनकी स्थिति आरामदेह होती थी यानी कि दबाव छाती या पीठ पर चोट करता था। प्रोफ़ेसर के एक व्याख्यान के दौरान ज़ीना ने सुना था कि एक परीक्षणकर्त्ता ने गोताख़ोरों की पोशाक पहनकर पानी से भरे बड़े टब में ग़ोता लगा लिया था। टब को सेन्ट्रीफ़्यूग के साथ बांध दिया गया था और इस व्यक्ति ने कुछ सेकण्ड तक वज़न में तीस गुना तक की वृद्धि को सहन कर लिया था।

डाक्टर द्रोनोव ने ख़ाली समय में अपनी सहायिका
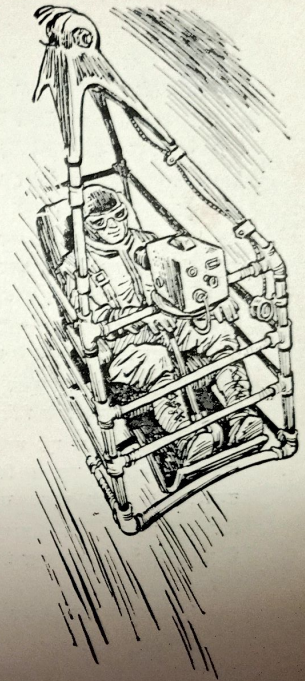
को सेन्ट्रीफ़्यूग में चक्कर लगानेवाले बन्दरों, मेंढकों, मछलीघर में मछलियों और यहां तक कि कीटाणुओं के बारे में भी बताया।

बन्दर की प्रतिक्रिया इन्सानों के समान ही थी। मछलीघर में छोटी-छोटी मछलियां इतनी रफ़्तार से घुमाई गई थीं कि उनका वज़न बड़ी-बड़ी मछलियों से भी अधिक हो गया था। तैरते हुए मेंढकों से भरे हुए टब के साथ सेन्ट्रीफ़्यूग मशीन ने और भी अधिक तेज़ी से चक्कर लगाये थे और हर मेंढक का वज़न १५० किलोग्राम से भी अधिक हो गया था। कीटाणुओं के साथ केबिन पागलों की भांति घूमा था और हर कीटाणु का वज़न दो लाख गुना बढ़ गया था, मगर उन्हें हानि नहीं पहुंची थी क्योंकि वे पानी में थे।

"यह बात अजीब सी लग सकती है," डाक्टर ने अपनी बात ख़तम करते हुए कहा, "कि पानी किसी भी अन्य वस्तु की तुलना में वेग-वर्द्धन की अदृश्य शक्ति से शरीर की अधिक अच्छी तरह रक्षा करता है। इसका मतलब यह है कि किसी ऐसी पोशाक या कक्ष का आविष्कार सम्भव होना चाहिये जो मनुष्य को दबाव के झटकों और दबाव के प्रभाव से बचा सके। त्सिओल्कोव्स्की ने बहुत ही पहले इसके बारे में लिखा था। मगर जब तक ऐसी चीज़ों का आविष्कार नहीं होता तब तक तो यह ज़रूरी था कि हमारे इन चौपाये मित्रों को अन्तरिक्षीय आश्चर्यों के लिये तैयार होने की शिक्षा दी जाये।"

कटखना हर दिन एक भारी कुत्ते में बदलता और फिर पहले जैसा हो जाता। वह यह नहीं समझ पा रहा था कि किसलिये ऐसा किया जाता था। मगर वह चुपचाप इन तजरबों को बर्दाश्त करता रहता। केबिन जब घूमने लगता तो वह चुपचाप अपना सिर पंजों पर रख देता और अदृश्य शक्तियों के दबाव का प्रतिरोध न करता। अन्त में मानो वह ऐसा कहता हुआ प्रतीत होता कि हम जीवन में किसी भी चीज़ के आदी हो जाते हैं।

इसके बाद बन्द केबिन में कटखने पर तजरबे किये गये। इस तरह उसे अन्तरिक्ष के तीसरे शत्रु यानी ब्रह्मांड के शून्य का सामना करने के लिये तैयार किया गया। कई कई दिनों तक उसे सब से अलग रखा जाता और इस तरह वह अकेला रहने का आदी हो गया। स्वसंचालित फ़ीडर द्वारा उसे खाना दिया जाता। पिंजरे में लौटने के बाद उसे इन नये तजरबों से निजात मिली। सोते हुए वह अपने पैर और कान झटकता और धीरे-धीरे भौंकता। रात की पाली में काम करनेवाली वाल्या उसके पिंजरे के पास जाती। कटखने का फ़ौरन एक और फिर दूसरा कान तन जाता और वह उसकी ओर घूमता। उसकी दुम

हिलने-डुलने लगती और वह उससे धीरे-धीरे फ़र्श को थपथपाता। कटखना अपनी आंखें खोलता और जानी-पहचानी आंखों में झांकता।

वाल्या सलाखों के बीच से कुत्ते को थपथपाती और घड़ी-भर बाद वहां से चली जाती। कटखना सुबह तक शान्तिपूर्वक सोया रहता।

असफल यात्रा

शामें उदास सी रहती थीं। अपने लचीले पंजों को झुकाये हुए कुत्ते फैलकर पड़े रहते। उनके पिंजरों से जम्हाइयां लेने की दबी-दबी आवाज़ें सुनाई देतीं। घड़ी-भर बाद वे सभी खुलकर जम्हाइयां लेने लगते। एक भौंकता, दूसरा छींकता और तीसरा दर्द भरी आवाज़ में कराह उठता।

मगर जैसे ही ड्यूटी वाला डाक्टर वहां आता, उनका मूड बदल जाता। डाक्टर उनसे दिलचस्प बातचीत और मज़ाक़ करता और उन्हें चीनी की डलियां खिलाता।

सबसे दिलचस्प बातचीत तो छोकरे से होती। वह अपने सिर को एक ओर झुकाये हुए बहुत ध्यान से डाक्टर को देखता।

"देखो छोकरे!" डाक्टर कहता। "यह क्या मामला है?"

"क्या?" छोकरे की ईमानदार आंखें पूछतीं।

"कल तो तुमने कमाल ही कर दिया। तुम एक सूरमा की तरह सेन्ट्रीफ़्यूग में जाकर बैठे!"

"आप मानते हैं न," अपनी काली नाक को गर्व से ऊपर उठाते हुए छोकरे ने अपनी ख़ुशी ज़ाहिर की।

"मगर आज? तुमने प्रयोगशाला में आते ही मेज़ पर छलांग लगाई और मेरे सारे काग़ज़ों पर पेशाब कर दिया।"

"मैंने?" छोकरा पीछे की ओर हट गया। उसका सारा शरीर अत्यधिक आश्चर्य व्यक्त कर रहा था।

"मेज़ पर छलांग लगाना क्या ज़रूरी था?"

"बेशक ज़रूरी नहीं था!" कुत्ते की दुम इस तरह हिल-डुल रही थी मानो उसने सारी बात समझ ली हो।

"मैं पूडल नसल के एक कुत्ते को जानता हूं," डाक्टर कहता गया, "बहुत ही समझदार कुत्ता होता है। वह इस क़िस्म की बदतमीज़ियां करने की बात सोच भी नहीं सकता। वह एक साधारण फ़्लैट में रहता है। मगर तुम एक संस्थान में रह रहे हो और इसलिये तुम्हें यह बात अधिक अच्छी तरह मालूम होनी चाहिये।"

डाक्टर का अन्दाज़ जितना अधिक भर्त्सनापूर्ण होता गया, छोकरा उतनी ही अधिक अपनी आंखें झपकाता रहा। वह धीरे से उठा, एक कोने में गया और टांगों के बीच अपनी दुम दबाकर वहां उदास सा खड़ा रहा।

सन्ध्या धीरे-धीरे रात में बदल जाती और कुत्ते सो जाते।

हर रात को ज़ोरों से बर्फ़ गिरती। बर्फ़ के ढेर अधिकाधिक बड़े होते गये और खिड़कियों को छूने लगे। नये वर्ष के आने में सिर्फ़ कुछ ही दिन बाक़ी रह गये थे और तब नया वर्ष बर्फ़ के ढेरों पर क़दम रखता हुआ घरों में प्रवेश करेगा।

एक दिन प्रशिक्षण के बजाय कटखने और दो अन्य कुत्तों—चितकबरे और छोकरे—को आंगन में दौड़ने-भागने की इजाज़त दे दी गई। फिर उनका वज़न किया गया, विश्लेषण के लिये रक्त के नमूने और उनकी छातियों के एक्सरे लिये गये। पहले भी ऐसा हो चुका था, मगर आज डाक्टरों की कार्रवाइयों में एक ख़ास तरह की संजीदगी थी।

बहुत समय से संस्थान में जिस क्षण की प्रतीक्षा की जा रही थी, वह अब आनेवाला था।

"वाल्या, चितकबरे के ख़ून की फिर से जांच करो। उसका परिणाम सन्तोषजनक क्यों नहीं है?" वसीली ने चिन्तित होते हुए कहा।

"बड़ी अजीब सी बात है," वाल्या ने जवाब दिया। "ऊंची केलोरी वाला भोजन दिया जाता है और इसे नींद भी अच्छी आती है। मैं इसका कारण नहीं जानती।"

चितकबरा क्या बीमार था?

वसीली ने कुत्ते की जांच की, वह इधर-उधर कमरे में टहलता रहा, मगर कारण उसकी समझ में न आया।

"ओह, मैं समझ गई!" आधे घंटे के बाद वाल्या चिल्लाई। "कोज़्याव्का ने उसे काट लिया था। ज़ीना ने चितकबरे को मिठाई का टुकड़ा दिया था जो कोज़्याव्का छीन लेना चाहता था। यह कोई परेशानी की बात नहीं है। वह कल तक ठीक हो जायेगा।"

वसीली ने मानो भर्त्सना करते हुए अपना सिर झटका। मगर वाल्या ख़ुश थी कि चितकबरा बीमार नहीं था और यह कि उसकी बीमारी का रहस्यपूर्ण कारण बहुत ही मामूली था।

उस रात को हिम दादा ने खिड़कियों पर बहुत ही अजीब तरह की चित्रकारी कर डाली।
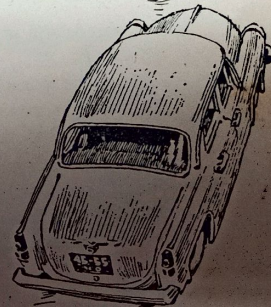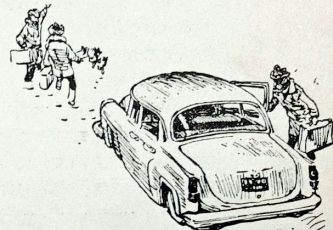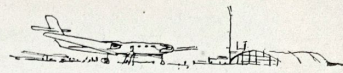
अगली सुबह को वसीली ने फ़र का कोट पहना, फ़र की फूली हुई टोपी और फ़ेल्ट बूट पहने, कटखने, चितकबरे और छोकरे को ज़ंजीर से बांधा और बाहर आंगन में ले गया। वहां तीन डाक्टर उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। सभी कर्मचारी खिड़कियों के गिर्द जमा थे। वाल्या, ज़ीना, डाक्टर द्रोनोव, प्रोफ़ेसर और अन्य वे सभी लोग जिनके दयालु हाथों ने झबरीले परीक्षण-कुत्तों की देखभाल की थी, अब खिड़कियों में से हाथ हिलाते और चिल्लाते हुए उन्हें विदा कर रहे थे।

दो 'वोल्गा' मोटरगाड़ियां फाटक पर खड़ी थीं। एक में वसीली और कुत्ते और दूसरी मोटर में डाक्टर बैठे। ऐसे गम्भीर क्षणों में जिस प्रकार का वातावरण हो जाता है, वैसे ही वातावरण में यह यात्रा चुपचाप शुरू हुई। एक लय में लगातार घरघराती हुई मोटरें आगे बढ़ती जा रही थीं।

आख़िर 'वोल्गा' गाड़ियों के दरवाज़े खुले। कुत्ते खुला मैदान देखकर आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने इधर-उधर नज़र दौड़ाई और यह न समझ पाये कि गलियां और मकान कहां ग़ायब हो गये, नगर का क्या हुआ! उनके सामने बर्फ़ से ढका हुआ एक समतल मैदान था जिसपर बड़े-बड़े पंखों वाले हवाई जहाज़ खड़े थे।

"वे पहली बार हवाई जहाज़ को देख रहे हैं," वसीली ने चिन्तित होते हुए सोचा, "और इस हवाई अड्डे को भी... हो सकता है कि उनमें आवारा कुत्तों की सी प्रवृत्ति फिर जाग उठे? वे भौंकना शुरू कर दें?"

मगर वे भौंके नहीं। वे हवाई जहाज़ के नज़दीक गये और बड़े इत्मीनान से सीढ़ी पर चढ़े।

मुसाफ़िर पहले से ही अपनी जगहों पर बैठे हुए थे। ये मुसाफ़िर थे राकेट-इंजीनियर, टेक्नीशियन और रूपांकनकार! उन्होंने कटखने, चितकबरे और छोकरे का ऐसा हार्दिक स्वागत किया कि कुत्ते बेहद प्रभावित हुए और जितनी भी जल्दी सम्भव हो सका, वसीली की टांगों के पास जाकर बैठ गये। इंजन गड़गड़ाये, हवाई जहाज़ हिला-डुला और धीरे-धीरे चल दिया। फिर वह रुका, उसने कुछ इन्तज़ार किया और तेज़ी से दौड़ लगाई। उसकी रफ़्तार बढ़ी और बिना झटके-हिचकोले के इस तरह हवा में ऊपर उठ गया कि मुसाफ़िरों को पता तक भी नहीं लगा।

दो घंटे बाद रेडियो द्वारा यह सूचना मिली कि आगे बर्फ़ का तूफ़ान आ रहा है। इसलिये हवाई जहाज़ को अपनी मंज़िल पर पहुंचने के पहले ही एक हवाई अड्डे पर मजबूरन नीचे उतरना पड़ा। यात्रियों और हवाबाज़ों का दल हवाई अड्डे के छोटे से होटल में ठहर

गया। कुछ देर बाद होटल को बर्फ़ के तूफ़ान ने घेर लिया और हवाई अड्डा तथा बाक़ी तमाम दुनिया आंखों से ओझल हो गई।

सुबह के वक़्त भी खिड़कियों में से सिर्फ़ इधर-उधर उड़ते हुए हिमकण ही दिखाई देते रहे। यह इकतीस दिसम्बर का दिन था। इन लोगों ने होटल में ही नया साल मनाने का इरादा बना लिया। तभी अचानक यह समाचार आया कि बुरे मौसम के कारण राकेट को उड़ाने का कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया है।

ये लोग गाड़ी द्वारा या तूफ़ान रुक जाने पर हवाई जहाज़ से मास्को लौट सकते थे। खिड़की से बाहर झांकने के बाद मास्कोवासियों ने कहा—"हम तो गाड़ी से ही जायेंगे।" उन्होंने अपनी चीज़ें समेटनी शुरू कीं।

"हमें क्या करना चाहिये?" वसीली ने चितकबरे, कटखने और छोकरे से सलाह-मशविरा किया। "कैंटीन इस वक़्त बन्द है और मेरी भूख के मारे जान निकली जा रही है। सूटकेस यहां छोड़कर तुम्हारे साथ अगर कॉफ़े में जाया जाये तो कैसा रहे? नहीं, वे तुम्हें अन्दर नहीं जाने देंगे। तुम्हें यहां छोड़ दूं और मैं भागकर कुछ खा आऊं? नहीं! गाड़ी छूटने के पहले मेरे पास यहां लौटने का वक़्त नहीं होगा... मेरे ख़्याल में मुझे सूटकेस उठा लेना चाहिये और हम सब को एकसाथ ही कॉफ़े में चलना चाहिये। जो होगा, देखा जायेगा..."

कॉफ़े के दरवाज़े पर खड़े हुए चौकीदार ने कुत्तों की ओर सन्देह की नज़र से देखा। मगर वे ज़ंजीर से बंधे हुए थे, इसलिये उसने कुछ नहीं कहा और सूटकेस लेकर रख लिया।

परिचारिका मेज़ के पास आई और कुत्तों पर पांव रखते-रखते बची। वह चौंककर पीछे हटी और फुर्ती से नीचे बैठकर उसने उन सभी को थपथपाते हुए कहा – "ओह, बड़े प्यारे हैं!"

वह वसीली के लिए चीनी की तश्तरी में और "प्यारे कुत्तों" के लिये टीन की तश्तरियों में शोरबा लाई। वसीली ने मेज़ पर और कुत्तों ने फ़र्श पर खाना खाया। जैसा कि होना चाहिए, ओट्स का शोरबा ठंडा था। इसके अलावा समझदार बावर्ची ने कुत्तों की तश्तरियों में कुछ हड्डियां भी डाल दी थीं। खाना खूब बढ़िया रहा!

गाड़ी छूटने ही वाली थी जब ये लोग प्लेटफ़ार्म पर पहुंचे। वे भागते हुए आठवें डिब्बे के क़रीब गये। कंडक्टर ने टिकट की जांच की और कुत्तों वाले मुसाफ़िर को टिकट लौटाते हुए बहुत कड़ाई से कहा –

"नौजवान, तुम अपने साथ तीन कुत्ते नहीं ले जा सकते। नियमानुसार सिर्फ़ दो कुत्ते ही तुम्हारे साथ जा सकते हैं। मैं कुछ नहीं कर सकता।"

वसीली जानता था कि दो मिनट बाद गाड़ी छूट जायेगी, मगर ऐसे क्षण में भी वह गुस्से में नहीं आया और उसने बहुत नम्रतापूर्वक कंडक्टर से कहा –

"क्षमा कीजिये! मगर मैं ख़ुद को दो हिस्सों में तो विभाजित नहीं कर सकता। हमें नियमों को तोड़ना ही होगा।"

इतना कहकर उसने सूटकेस अन्दर फेंका, छोकरे को, फिर चितकबरे और उसके बाद कटखने को अन्दर किया। गाड़ी चल दी।

गाड़ी का डिब्बा कक्षों के बिना था और उसमें लोगों की भारी भीड़ थी। तीन कुत्तों के साथ जब यह नौजवान अपनी सीट की ओर बढ़ा तो उसके साथ-साथ लोगों में ख़ुशी की एक लहर सी दौड़ गई। अचानक बहुत से बच्चे नज़र आये, ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे सभी सूटकेसों में से निकल आये थे। वसीली अपनी सीट पर बैठा ही था कि एक बूढ़े ने अपने पड़ोसी को फ़ेल्ट बूट और फ़र का कोट पहने हुए देखकर पूछ-ताछ शुरू की।

"मैं समझता हूं कि आप शिकारी हैं। मगर माफ़ कीजिये आप ये गलियों के आवारा कुत्ते क्यों अपने साथ लिये हुए हैं? क्या भालुओं के शिकार में इनसे मदद मिल सकती है? क्या यह शिकारी कुत्तों जैसा काम कर सकते हैं?"

चाहे-अनचाहे वसीली को एक शिकारी की कहानी का ताना-बाना बुनना पड़ा। कुत्तों को हाजत रफ़ा करवाने के हेतु ले जाने के लिये वह बीच-बीच में कहानी का सिलसिला बन्द कर देता। वह बूढ़े को यह नहीं बता सकता था कि ये साधारण आवारा कुत्ते नहीं, बल्कि

अन्तरिक्ष-नाविक हैं। कोई भी यह मानने को तैयार न होता कि ऐसे महत्त्वपूर्ण प्राणियों को साधारण गाड़ी में ले जाया जा रहा है।

शिकार की कहानी इतनी लम्बी थी कि गाड़ी के मास्को पहुंच जाने पर ही ख़त्म हुई।

मास्को पहुंचकर वसीली ने जब अपनी घड़ी पर नज़र डाली तो वह बहुत बेचैन हो उठा। बारह बजने में सिर्फ़ आधा घंटा बाक़ी था।

"अपने घर पर ही नया साल मनायेंगे!" उसने अपने साथियों से कहा। "मैं तुम्हें सॉसेज खिलाकर बिस्तर में सुला दूंगा।"

नया साल शुरू होने के समय ही ये लोग फ़्लैट में पहुंचे। वसीली की पत्नी, उसकी मां और आठ वर्षीय बेटे साशा को बेहद ख़ुशी हुई। वसीली ने उन्हें चूमा, नये वर्ष की बधाई दी और कहा –

"ओह, फ़र-वृक्ष की सुगन्ध कितनी प्यारी है!"

जहां तक कटखने, छोकरे और चितकबरे का सवाल था तो उन्हें तो सॉसेज की गन्ध ही सबसे अधिक प्यारी लगी। कुछ समय बाद उन्हें सॉसेज खिलाये गये। खाने के बाद वे साशा से खेलने लगे और गाड़ी के बारे में सब कुछ भूल गये।

अगली सुबह को वसीली कुत्तों को वापस संस्थान में ले गया। उनके पिंजरों में अब नये आवारा कुत्ते आ गये थे। वे पशु-केन्द्र से लाये गये थे। तीनों यात्रियों को एक अलग कमरे में, एक ही पिंजरे में रखा गया। उनके लिये यह आरामदेह नहीं था। और वह भी तब जब कि इस कमरे में एक ख़ाली पिंजरा पड़ा हुआ था।

मगर वसीली ने इस पिंजरे को खोलने की बात नहीं सोची। वह पिंजरे के दरवाज़े पर लगी हुई जानी-पहचानी प्लेट को ध्यान से देखता हुआ कुछ देर वहां चुपचाप खड़ा रहा और फिर वहां से चला गया।

ख़ाली पिंजरे पर लिखा हुआ था – "लाइका यहां रहता था।"

लाइका यहां रहता था

ख़ाली पिंजरे की कहानी बताने के लिये हमें कुछ वर्ष पहले यानी १९५७ से इसे शुरू करना होगा।

३ अक्तूबर १९५७ का दिन दुनिया के लिये एक साधारण दिन था। बालक स्कूलों में पढ़ रहे थे, मज़दूर खरादों पर काम कर रहे थे और हवाबाज़ ध्वनि की गति से अधिक

तेज़ी के साथ उड़ान कर रहे थे। सोने के पहले किसी ने इस बात की कल्पना तक नहीं की थी कि वे एक नये युग में अपनी पलकें खोलेंगे।

४ अक्तूबर की सुबह को दुनिया यह समाचार सुनकर ख़ुशी से नाच उठी कि एक रुपहला गोला पृथ्वी के गिर्द चक्कर लगा रहा है! यह प्रथम अन्तरिक्षीय गोला बहुत बड़ा नहीं था। हर कोई यह जानता था कि उसका वज़न ८३ किलोग्राम ६०० ग्राम और घेरा ५८ सेंटिमीटर है। लोग समझ रहे थे कि यह कितनी महत्त्वपूर्ण घटना घटी है। यह घटना अग्नि को वश में करने, भाप-इंजन के अस्तित्व में आने, हवाई जहाज़ के पहली उड़ान भरने या बिजली अथवा अणु-शक्ति का आविष्कार होने के समान ही महत्त्वपूर्ण थी।

दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने अपने सोवियत सहयोगियों को बधाई दी। मजदूरों को इस बात पर गर्व हो रहा था कि उन्हीं के हाथों ने इस चमत्कार की रचना की थी। हवाबाज़ उसकी अन्तरिक्षीय रफ़्तार से ईर्ष्या कर रहे थे। कल्पनातीत रफ़्तार थी इस गोले की – एक सेकंड में ८ किलोमीटर। लड़के अपनी स्कूली डेस्कों पर बैठे हुए अन्तरिक्ष में उड़ने के सपने देख रहे थे।

इन्सान के लिये सितारों की ओर जाने का मार्ग तैयार हो गया था! यह मार्ग असीम ब्रह्मांड की ओर जाता था। और इस मार्ग का आरम्भ हुआ पांच कोनों वाले लाल सितारे के देश से!

"एक नया सितारा!", "उड़ान भरती हुई कल्पना!", "सोवियत चांद!.." सभी देशों के समाचारपत्र इस सनसनीख़ेज घटना को व्यक्त करने के लि: शब्द गढ़ रहे थे। उन सभी ने एक ही नाम

तय किया – स्पूत्निक! इस रूसी शब्द की गूंज उन्हें पसन्द आई, "तोवारिश्च" (साथी) शब्द की तरह!

ढेरों पत्र आये।

"मास्को। स्पूत्निक। मैं अन्तरिक्ष में उड़ान करना चाहता हूं।"

"मास्को। स्पूत्निक। कृपया मुझे अन्तरिक्ष-नाविकों की सूची में शामिल कर लीजिये।"

"मास्को। स्पूत्निक। विज्ञान की प्रगति के लिये मैं अपना जीवन देने को तैयार हूं।"

ऐसे पत्र हवाबाज़ों, विद्यार्थियों और किशोर पायनियरों से प्राप्त हुए। हज़ारों लोग अन्तरिक्ष पर विजय पाने को उत्सुक थे।

इसी समय मास्को की एक चुपचाप सड़क पर स्थित एक मकान में दस परीक्षण-कुत्तों का प्रशिक्षण हो रहा था। उनमें से एक को नये स्पूत्निक में उड़ना था। दस आज्ञाकारी कुत्ते पट्टों से बंधे हुए सेन्ट्रीफ़्यूग मशीन के केबिन में चक्कर खाते, तरह-तरह का शोर सुनते, तंग पिंजरों में बैठते, सभी तकलीफ़ें सब्र से बर्दाश्त करते और जीवन का मज़ा भी लूटते – संक्षेप में यह कि उन्होंने वह सभी कुछ देखा-जाना जो बाद में कटखने और हमारे अन्य नायकों को सहन करना पड़ा।

उन दस में से एक कुत्ता चुना गया – लाइका।

क्यों उन्होंने उसे यह नाम दिया, इसका किसी के पास कोई जवाब नहीं है। लाइका का मतलब है भौंकू। मगर लाइका कभी किसी पर भौंकता नहीं था। वह तो सिर्फ़ एक बार अन्धेरी और तंग सीढ़ी पर ही भौंका था। वह ऊपर जा रहा था और एक लड़की भागती हुई नीचे आ रही थी। लाइका एक तरफ़ को हो गया ताकि लड़की गुज़र जाये, मगर लड़की का उसकी तरफ़ ध्यान नहीं गया और उसने लाइका के पंजे पर अपना पांव रख दिया। लाइका धीरे से चीख़ उठा और लड़की डर गई। लड़की ज़ोर से चीख़ उठी जिससे लाइका डर गया। तब वह अपने जीवन में पहली बार पूरे ज़ोर से भौंका था।

भोला-भाला तथा पतली-पतली टांगों और आश्चर्यभरी थूथनी वाला यह नौउम्र आवारा कुत्ता सबसे अधिक मजबूत साबित हुआ। डाक्टर द्रोनोव ने जब अपनी मशीन चालू की तो उसके माथे पर बल पड़े हुए थे, वह अपना सिर हिला रहा था। वह अत्यधिक प्रबल शक्तियों का आह्वान कर रहा था और नहीं जानता था कि कुत्ता उन्हें सहन कर पायेगा या नहीं। अन्तरिक्ष-सम्बन्धी चिकित्सा उसे कुछ भी तो नहीं बता सकती थी। किसी ने भी तो इसके पहले ऐसे तजरबे नहीं किये थे, किसी ने भी तो स्पूत्निकों के लिए यात्रियों को तैयार नहीं किया था।

मगर लाइका ने वह सब कुछ बर्दाश्त कर लिया, मशीन का आख़िरी चक्कर तक। डाक्टर द्रोनोव ने दरवाज़ा खोला और प्यार से कुत्ते को बाहों में लेते हुए अपने रूमाल से उसकी थूथनी साफ़ की। लाइका के झुके हुए कान खड़े हो गये। हां, कोई भी ताक़त नोकदार कानों वाले इस छोटे से कुत्ते की हिम्मत को नहीं कुचल सकती थी!

"उड़ान के वक़्त अन्तरिक्ष-नाविक के लिए लेटे रहना आवश्यक है," डाक्टर द्रोनोव ने निष्कर्ष निकाला, "ताकि गुरुत्वाकर्षण की शक्ति छाती और पीठ पर प्रहार करे। स्पूत्निक की कक्षा पर पहुंचने के बाद हर चीज़ भारहीन हो जायेगी। तब कुत्ता उचककर बैठ जायेगा या खड़ा हो जायेगा।"

"लेटना, बैठना, खड़े होना," वसीली ने दोहराया। "और यह सब एक छोटे से केबिन में। हमें एक ख़ास तरह की पोशाक की ज़रूरत होगी जो एक फन्दे की तरह शरीर को कसे रहेगी, मगर साथ ही हिलने-डुलने की सम्भावना देगी।"

"ख़ूराक! यह नहीं भूलना चाहिये कि हमें उसे खिलाना-पिलाना भी है!" संस्थान के मिस्त्री सेर्गेई ने कहा। "जब हर चीज़ भारहीन हो जायेगी तब हम उसे खिलायें-पिलायेंगे कैसे? हम प्याले में पानी नहीं डाल सकेंगे क्योंकि वह बह जायेगा। तश्तरी में सॉसेज रखेंगे तो वह तैरने लगेगी। जब उसकी पोशाक उसे कसे रहेगी और वह हिल-डुल नहीं सकेगा तो वह सॉसेज को पकड़ेगा कैसे?"

डाक्टर, वैज्ञानिक और सहायक, हर कोई आविष्कारक बन गया। उन्होंने छोटी-छोटी पोशाकें काटीं और उनकी सिलाई की। उन्होंने यह हिसाब लगाया कि यह कुत्ता दिन में कितनी ख़ूराक खाता है और कितनी शक्ति ख़र्च करता है। उन्होंने कई तरह के भोजन तैयार किये और उन्हें कुत्तों पर आज़माया। अन्त में उन्होंने भोजन की जो सूची तैयार की, वह थी – सख़्त क्रैकर, मांस का चूर्ण, गाय की चर्बी और पानी। मगर समस्या यह थी कि अन्तरिक्षीय भोजन को केबिन में इधर-उधर तैरने से कैसे रोका जाये?

किसी के दिमाग़ में एक लेसदार पदार्थ का विचार आया। इसे 'अगर-अगर' कहते हैं और यह लाल रंग की समुद्री घास से बनता है।

पिसा हुआ 'अगर-अगर' का चूर्ण अद्भुत पदार्थ सिद्ध हुआ। इसने खाने की सभी चीज़ों और पानी को पौष्टिक जैली के रूप में जमा दिया। तजरबा करने से मालूम हुआ कि जैली के रूप में खाने-पीने की चीज़ें प्याले से बाहर नहीं गिरती थीं। इसके अलावा यह जैली मज़ेदार और पौष्टिक भी थी।

कारख़ाने में लाइका के लिए गोल खिड़की वाला वर्तुलाकार केबिन बनाया गया। इस केबिन में निरीक्षण-यन्त्र, जैली-भोजन के भण्डार के साथ स्वसंचालित फ़ीडर, ऑक्सीजन पैदा करने और कॉर्बन-डाइआक्साइड को जज़्ब करनेवाले रसायन थे। यात्री के लिए एक विशेष सीट की व्यवस्था थी। हल्की पोशाक पहने हुए लाइका इस सीट पर आगे और पीछे हिल-डुल सकता था, बैठ, लेट और खड़ा हो सकता था। निष्कर्ष यह कि यह केबिन गोल ढक्कन वाले कसकर बन्द किये हुए एक बड़े पीपे के समान था। इस छोटे से घर में लाइका को अन्तरिक्ष की भयानक शून्यता अनुभव नहीं होती थी।

प्रशिक्षण के दौरान लाइका कई दिनों तक लगातार इसी केबिन में बैठा रहता। फ़ीडर उसे खाना
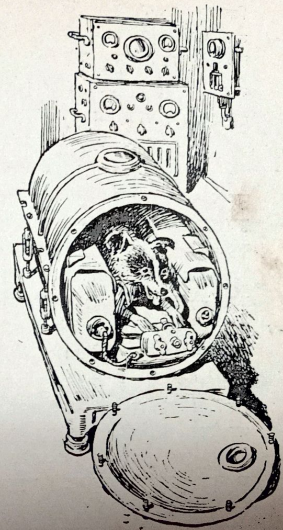
खिलाता, रसायन ऑक्सीजन देते और धातु के बने हुए केबिन में पूरी ख़ामोशी रहती। बस, यही कुछ होता! जाहिर है कि डाक्टर जब तब झरोखे में से झांककर भीतर देखते, मगर लाइका उन्हें नहीं देख पाता था। वह अकेले रहने का आदी हो गया था और बहुत ही अच्छे ढंग से अपने कार्य को पूरा करता था। जब खाने का वक़्त होता तो वह खाने की खाली तश्तरी की ओर देखता और अपने होंठ चाटता।

पृथ्वी पर तो सभी कुछ बहुत बढ़िया था, मगर अन्तरिक्ष में क्या होगा?

डाक्टरों को सबसे अधिक चिन्ता तो थी भारहीनता की स्थिति की। गुरुत्वाकर्षण की अदृश्य शक्तियों द्वारा अन्तरिक्ष-नाविक के बुरी तरह परेशान किये जाने के बाद वह अचानक पूरी तरह से भारहीन हो जायेगा और हवा में तैरने लगेगा। तब उसका हृदय कैसे काम करेगा? अचानक होनेवाले इस अजीब परिवर्तन को वह कैसे बर्दाश्त करेगा?

कुछ विदेशी वैज्ञानिकों ने यह दुखद भविष्यवाणी कर दी थी कि भारहीनता की स्थिति में जीवन केवल कुछ ही मिनटों तक क़ायम रह सकेगा। उनका कहना था कि तब रक्त भारहीन होकर रुधिर वाहिकाओं की परतों पर दबाव डालना बन्द कर देगा और हृदय की गति बन्द हो जायेगी।

दुनिया भर के अन्तरिक्षीय डाक्टरों को यही बात परेशान कर रही थी कि क्या इन वैज्ञानिकों की बात सही थी? बहुत अफ़सोस की बात तो यह थी कि प्रयोगशाला में भारहीनता की ऐसी स्थिति पैदा करना असम्भव था। पृथ्वी पर सिर्फ़ गोलक के ठीक मध्य में ही ऐसी जगह है जहां शरीर भारहीन हो जाता है। वहां गुरुत्वाकर्षण की शक्ति का सभी ओर से समान दबाव पड़ता है और ये दबाव एक दूसरे को प्रभावहीन बना देते हैं। मगर वहां पहुंचा कैसे जाये? इसके लिए लगभग छः हज़ार किलोमीटर गहरी सुरंग खोदना ज़रूरी था। यह असाध्य कार्य था।

जेट हवाई जहाज जब तेज़ी से हवा में ऊपर की ओर उड़ते हैं तो बहुत ऊंचाई पर पहुंचकर एक अतिकाय अर्धचक्र बनाते हुए, फेंके गये पत्थर की भांति नीचे की ओर आते हैं। इसे एकेन्द्रीय उड़ान कहते हैं और इसकी ऊपरी सीमा पर, यानी हवाई जहाज़ जब शिखर-बिन्दु पर पहुंचता है तो हवाबाज़ को घड़ी भर के लिए भारहीनता की अनुभति होती है। दो शक्तियां एक साथ ही उसपर प्रभाव डालती हैं—केन्द्रीपयूगल शक्ति उसे पृथ्वी से दूर धकेलने की कोशिश करती है और पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति उसे नीचे की ओर खींचती है। ये दोनों शक्तियां एक दूसरी को प्रभावहीन बनाती हैं, मनुष्य भारहीन हो जाता है और ऐसे में वह बिना किसी सहारे के कुछ सेकंड तक हवा में बैठा रह सकता है।

हवाबाज़ इस अनुभूति को कई तरह से व्यक्त कर चुके हैं। कुछ का सिर चकराने लगा था और मतली होने लगी थी जैसे कि समुद्र में यात्रा करते समय होता है। कुछ का अपनी बाहों और टांगों पर नियन्त्रण नहीं रहा था। कुछ अन्य हवाबाज़ों ने ऐसे अनुभव किया था मानों झूले में लेटे हुए हों। उन्हें यह स्थिति बेहद अच्छी लगी थी और उनके मतानुसार भारहीनता की स्थिति स्वास्थ्य-केन्द्र में आराम करने से भी कहीं अधिक आरामदेह होती है।

मगर हो सकता है कि ये अन्तिम हवाबाज़ सही न हों? हो सकता है कि उन्होंने ख़तरे को महसूस न किया हो।

फिर आकाश में राकेट उड़ाये गये। उनके पहले यात्री थे कछुये, चूहे और कुत्ते। एकेन्द्रीय उड़ान में न केवल कुछ सेकंड के लिए, बल्कि कई मिनटों तक वे भारहीनता की स्थिति में रहे। ये जानवर पैराशूट द्वारा धरती पर सही-सलामत लौटे।

वे तीन, पांच या दस मिनटों तक भारहीनता की स्थिति में रहे। पर यदि यह स्थिति कई घंटों या दिनों तक क़ायम रहे तब क्या होगा?

ज़ाहिर है कि डाक्टर द्रोनोव, प्रोफ़ेसर, वसीली और अन्य जिन लोगों ने लाइका को उड़ान के लिए तैयार किया था, उन्हें यह आशा थी कि अन्तरिक्ष-यात्री का हृदय कई घंटों और कई दिनों तक धड़कता रहेगा। मगर इनके सामने कुछ अन्य परेशानियां भी थीं। फ़र्श के साथ सम्पर्क न रहने पर लाइका का क्या हाल होगा। जानवरों के बादशाह, बबरशेर को भी जब सर्कस में झूले पर चढ़ा दिया जाता है तो डर के मारे उसकी भी घिग्घी बंध जाती है। उस समय उसे यदि दर्शकों के सिर के ऊपर भी चक्कर
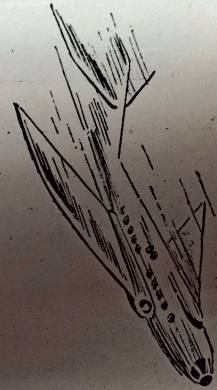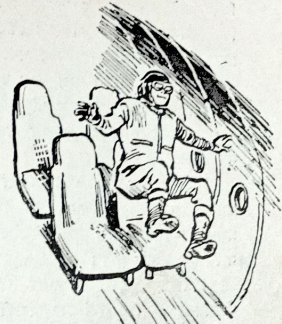
दिये जायें तो यह ख़तरनाक नहीं होगा, क्योंकि बबरशेर इतना डरा हुआ होता है कि हिल-डुल भी नहीं सकता। फिर उन्हें उस शेर का भी ध्यान आया जिसे हवाई जहाज़ द्वारा चिड़ियाघर में भेजा गया था और डर के मारे उसकी फ़र ग़ायब हो गई थी।

क्या लाइका भी इसी तरह डर जायेगा? क्या वह हिले-डुलेगा, खाये-पियेगा? डाक्टरों के लिये यह सब कुछ एक पहेली के समान था।

लाइका को एक बहुस्तरीय राकेट में – राकेटों की पूरी गाड़ी ही कहिये – उड़ाया गया।

३ नवम्बर १६५७ को लोगों को इस छोटे से बहादुर कुत्ते के बारे में पता चला। उन्होंने अख़बारों में उसका चित्र देखा, उन्हें ख़ुशी भी हुई और दुख भी। ख़ुशी उन्हें हुई प्रथम अन्तरिक्ष-नाविक कुत्ते को देखकर और दुख इस बात की चेतना से कि यह अन्तरिक्ष-नाविक लौटेगा नहीं।

लाइका, प्यारे वफ़ादार लाइका, कितनी ख़ुशी प्रदान की तुमने दुनिया भर के वैज्ञानिकों को! हज़ारों किलोमीटरों की दूरी से सुनाई देनेवाली तुम्हारे दिल की हल्की
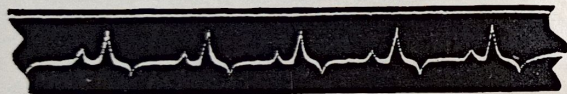
आवाज़ ही उनके लिये सब कुछ थी, जिसमें दुनिया भर की सारी आवाज़ें डूबकर रह गई थीं।

रिकार्ड करनेवाले एक यन्त्र के टेप पर एक ऐसा रेखाचित्र सा बन गया जो क्षितिज पर नज़र आनेवाले उस नगर के समान था जिसकी ऊंची इमारतों के शिखर उभरे हुए हों।

अन्तरिक्ष में इस नाविक का हृदय धड़कता रहा, धड़कता ही रहा!

संस्थान में इन दिनों ख़ुशी मनाई जा रही थी। अन्तरिक्ष में सबसे पहला प्राणी उड़ान कर रहा था जिसे दो प्राचीन ग्रीक शब्दों – कोस्मोस (अन्तरिक्ष) और नौटिका (तैरना) द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। अन्तरिक्ष में तैरनेवाला यानी कोस्मोनौट (अन्तरिक्ष-नाविक)। यह अन्तरिक्ष-नाविक इसी संस्थान में से गया था।

टेलीमीट्रिक टेप ने डाक्टरों को यह बताया कि राकेट कितने ज़ोर से गड़गड़ाये थे और लाइका यह शोर सुनकर कितना डर गया था। (सिर्फ़ लाइका ही नहीं, कभी-कभी

अनुभवी हवाबाज़ भी उड़ान करने के समय इंजनों की गड़गड़ाहट से परेशान हो उठते हैं।) लाइका कुछ देर तक इधर-उधर अपना सिर घुमाता रहा, फिर एक बहुत ही ज़ोरदार शक्ति ने उसे दबाकर फ़र्श के साथ चिपका दिया और उसका हृदय तीन गुना तेज़ी से धड़कने लगा। राकेटों की गाड़ी वातावरण को चीरती हुई बढ़ती चली गई और फिर अचानक हर चीज़ शान्त हो गई। कुत्ता गतिहीन शून्य में पहुंच गया था।

यह तो अच्छा ही था कि डाक्टर द्रोनोव ने लाइका को सीसे के समान भारी शरीर को अनुभव करने का आदी बना दिया था। सेन्ट्रीफ़्यूग मशीन पर चक्कर खाने के समय जैसा होता था वैसे ही अब भी लाइका की छाती फैल गई और उसका हृदय सामान्य रूप से धड़कने लगा। पृथ्वी पर उसने हल्केपन की इतनी अजीब परिस्थिति अनुभव नहीं की थी, फिर भी वह डरा नहीं। कुछ आराम करने के बाद उसने अपने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ाई। फिर उसके पंजे हिले-डुले और उसने भारहीनता की स्थिति में पहले क़दम उठाये।

डाक्टरों ने परेशान करनेवाला सवाल निश्चित रूप से हल कर लिया – भारहीनता जीवन के लिये ख़तरनाक नहीं है! निश्चय ही लाइका की तुलना में किसी इन्सान के लिये इस तथ्य का अभ्यस्त होना अधिक कठिन है कि पैरों के नीचे न तो कोई आधार हो, न कुछ ऊपर हो और न नीचे। कुछ लोग जब खड्ड के सिरे पर खड़े होते हैं तो उनका सिर चकराने लगता है। इस विचार मात्र से कि शायद वे गिर जायें, उन्हें चक्कर आने लगते हैं। मगर इन्सान अपनी भावनाओं, भावावेशों और आदतों का स्वामी है। बैले-नर्तक को अपने शरीर पर अद्भुत नियन्त्रण प्राप्त
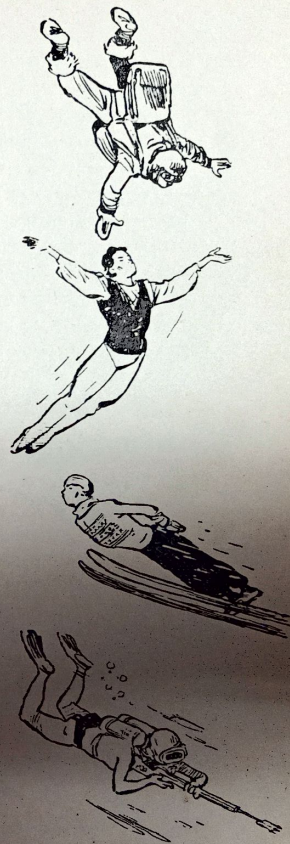
होता है। स्कीइंग करनेवाला पूरे विश्वास के साथ स्कीज़ पर उड़ान करता है। गोताख़ोर हाथ में हारपून (मछली मारने का भाला) लिये हुए मछली का पीछा करता है; हवाबाज़ अत्यधिक ऊंचाई से नहीं डरता है। आदमी हवा में तैरना सीख सकता है। वह अपनी बाहों और टांगों का, जो कि असाधारण रूप से मज़बूत हो जाती हैं, उपयोग करने का अभ्यस्त हो जाता है, नर्म प्लास्टिक की बोतलों से तरल पदार्थ पीना सीख सकता है और चुम्बकीय जूतों के सहारे कड़ियों पर चलनेवाली मक्खी की तरह औंधे सिर भी चल सकता है।

अब आदमी उड़कर चांद पर पहुंच सकता है – शायद हृदय के रोगियों के लिये अन्तरिक्ष में एक स्वास्थ्य-केन्द्र खोला जाये! यह सब लाइका की खोजों द्वारा सम्भव हुआ है।

वह सात दिन तक स्पूत्निक में रहा। आठवें दिन ऑक्सीजन ख़त्म हो गई...

संस्थान में एक पिंजरा ख़ाली पड़ा है।

वहां एक बोर्ड लगा दिया गया है – "लाइका यहां रहता था।" अन्य किसी कुत्ते को इस पिंजरे में नहीं जाने दिया गया।

यह पिंजरा इस बात की याद दिलाता रहा कि अगले अन्तरिक्ष-नाविक को अवश्य ही धरती पर लौटना है।

मददगार पेंसिल

बोरीस की गली में बर्फ़ के टीले खड़े हो गये थे। सुबह जब उसकी आंख खुलती तो वह पटरी की बर्फ़ समेटते हुए चौकीदारों के फावड़ों की आवाज़ सुनता।

मकान के परे, मैदान में, एक स्केटिंग-रिंक बना दिया गया था। इस रिंक के ठीक बीचोंबीच जहां कभी दो शैतानों ने राकेट उड़ाया था, मकान के प्रबन्धक ने एक फ़र-वृक्ष लगा दिया था। बोरीस ने एक दिन अपनी आंखों से गेना और ल्यूबा को एक-दूसरे का हाथ थामे हुए वहां स्केटिंग करते देखा। गेना एक स्केट पर चक्कर खा रहा था। लाल स्वैटर तथा टोपी पहने हुए ल्यूबा भी ऐसा ही कर रही थी। फिर वे बातचीत करते हुए वहां खड़े रहे। ल्यूबा की टोपी पर हिमकण चमक रहे थे। ल्यूबा गेना को देखकर ऐसे मुस्करा रही थी मानो वह महज़ ल्यूबा न होकर कोई परी हो।

हर कोई ख़ुश था, यहां तक कि मकान का प्रबन्धक भी। वह धमाके वाली घटना को बिल्कुल भूल चुका था। मगर बोरीस के फ़्लैट में एक दुखद घटना के कुछ मूक साक्षी क़ायम थे जो उसे परेशान करते रहते थे। कौच के पीछे एक छोटी सी धारीदार चटाई पड़ी हुई थी। बॉबी यहां सोता था। रसोईघर में टीन का प्याला था जिसमें बोरीस की

मां हड्डियां और रोटी के टुकड़े डालती थी। जब कभी घर में इस बात की चर्चा होने लगती कि बॉबी कितना स्नेहपूर्ण और समझदार था तो बोरीस के दिल पर बहुत भारी गुज़रती। ऐसी बातचीत सुनकर वह विचलित हो उठता, अपनी टोपी लेता और कुछ कहे-सुने बिना ही चुपचाप घर से बाहर चला जाता। बॉबी को फिर से पाने की सैकड़ों योजनायें बनाते हुए वह सड़कों पर चक्कर काटता रहता। वह अपने विचारों में इतना डूब जाता कि उसे शाम हो जाने की भी ख़बर न रहती और वह उस समय घर लौटता जब ऊंची दस मंज़िली इमारत रोशनियों से जगमगाती होती।

"यह रही ऊंची और रोशनियों से जगमगाती इमारत," खिड़कियों की ओर देखते हुए बोरीस गहरी सांस लेता। "शायद यहां दो हज़ार या इससे भी ज़्यादा लोग रहते हैं। मगर किसी को भी तो इस बात की परवाह नहीं है कि बेचारा बॉबी कहीं ठंड से जमा जा रहा होगा। और गेना? उसके बारे में तो मैं सोचना ही नहीं चाहता। वह शायद घर में बैठा हुआ राकेट का रूपांकन तैयार कर रहा है, या फिर अपने पिता के साथ पत्र-पत्रिकायें देख-पढ़ रहा है। करातोव परिवार में इतने अधिक पत्र-पत्रिकायें आते हैं कि उन सबके नाम तक याद रखना भी सम्भव नहीं।"

कुछ समय पहले तक बोरीस को गेना से ईर्ष्या होती थी, क्योंकि गेना का पिता पत्रकार था और उसका अपना पिता एक साधारण ख़रादी। मगर जब छठी 'क' श्रेणी के सभी विद्यार्थी 'बॉल' (बोरीस के पिता के मित्र अपने बॉल-बेयरिंग कारख़ाने को इसी नाम से पुकारते थे) को देखने गये और बोरीस ने
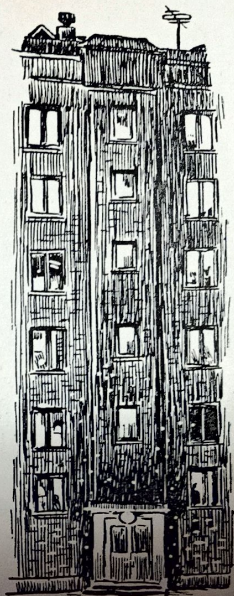
वर्कशॉप में एक बहुत बड़ा पोस्टर देखा जिसपर लिखा था—"स्मेलोव हमारे लिये मिसाल है!"—तब उसकी आंखें खुलीं।

उस शाम को जब उसके पिता सदा की भांति एक बड़े से फूलदार प्याले में चाय पी रहा था तो बोरीस सामने बैठा हुआ उसकी भौंहों, आंखों और नाक को ऐसे टकटकी बांधकर देखता रहा कि पिता परेशान हो उठा।

"तुम इस तरह मुझे क्यों घूर रहे हो?" उसने हैरान होते हुए कहा, "तुम मुझे क्या समझते हो युसुफ़? जाओ, जाकर सो जाओ।"

बोरीस अपने हृदय में इस बात की मधुर भावना लिये हुए सोने चला गया कि उसी घर में एक ऐसा आदमी रहता है जो दूसरों के लिये मिसाल है...

"शायद मुझे घर जाकर पिता जी से शतरंज की एक बाज़ी खेलनी चाहिये?" बोरीस ने अपने फ़्लैट की खिड़की पर नज़र डाली और फ़ौरन इरादा बदल लिया। "नहीं, मैं अभी कुछ देर तक और बाहर टहलूंगा। हरा लैम्प जल रहा है—इसका मतलब है कि पिता जी अभी रेखाचित्र बनाने में जुटे हुए हैं।"

इन्सान जब अकेला और उदास होता है तो उसके मन में विचारों का तांता सा लगा रहता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मकान, जंगले और सड़क पर जलनेवाले लैम्प, सभी बहुत ध्यान से उसकी बात सुन रहे हैं। चीज़ें शानदार मित्र होती हैं और वे आपकी विचार-शृंखला में कभी बाधा नहीं डालतीं। अगर आप पैनी नज़र रखते हैं तो वे आपको कुछ बता भी सकती हैं।

खिड़कियों से झांकनेवाली बत्तियों से बोरीस को बहुत सी बातों का पता चल जाता था, दुखद और सुखद बातों का! दूसरी मंज़िल की एक खिड़की में से नज़र आनेवाली लाल बत्ती को देखकर बोरीस यह बता सकता था कि जानवरों को सधानेवाली सोफ़िया लेप घर लौट आई है या नहीं, या सिर्फ़ उसकी बूढ़ी नौकरानी अनफ़ीसा ही घर पर है। मितव्ययी अनफ़ीसा हमेशा मद्धम रोशनी जलाये रखती थी, जबकि सोफ़िया लेप को तेज़ रोशनी पसन्द थी। सधे हुए कई कुत्ते उसके पास रहते थे। सुनने में आया था कि उनमें से एक "छी" और "बकवास" तक कह सकता था। सोफ़िया लेप से अगर बॉबी की चर्चा की जाये तो कितना अच्छा हो! मगर हर बार जब वह अपने सधे हुए किसी कुत्ते के साथ दरवाज़े पर नज़र आती तो बोरीस घबरा जाता और बॉबी की चर्चा करने का मौक़ा हाथ से निकल जाता। सोफ़िया लेप आन की आन में मुड़कर आंखों से ओझल हो जाती।

तीसरी मंज़िल के छज्जेवाले दो फ़्लैटों में से एक में एक अवकाश-प्राप्त जनरल रहता था और दूसरे में एक प्रसिद्ध चित्रकार। अगर जनरल के कमरे में रोशनी होती और

चित्रकार के कमरे में अन्धेरा तो इसका यह मतलब होता कि चित्रकार जनरल के कमरे में बैठा है। इसके विपरीत अगर जनरल के कमरे में अन्धेरा होता तो चित्रकार के कमरे में नारंगी रंग का लैम्प जलता होता।

चित्रकार कोन्स्तान्तीन रोगोव तो ख़ास ही आदमी था। पेंसिल और रंगों से उसने कई सौ हासजनक बौने रच डाले थे। उसके ये चित्र लड़के-लड़कियों को बेहद अच्छे लगते थे। रोगोव अपनी कृतियों के प्रति उदार था और उनमें से सबसे अधिक अटपटा पात्र भी बहुत दिलचस्प था।

रोगोव हर मौसम में गर्म बूट और भारी कोट पहने तथा गुलूबन्द लगाये हुए छज्जे में खड़ा रहता। उसके हाथों में दूरबीन होती। कुछ लोग इस अजीब से आदमी को देखकर कनकौए से उसकी तुलना करते। मगर फ़ौरन उन्हें अपने शब्दों पर अफ़सोस होता, क्योंकि इस मकान में रहनेवाले लड़के उस व्यक्ति को क्षमा न करते जो उनके चित्रकार की खिल्ली उड़ाता।

बात यह थी कि चित्रकार बहुत सख़्त बीमार था और डाक्टरों ने उसे घर से बाहर निकलने से मना कर दिया था। दूरबीन की मदद से वह चबूतरे पर बैठे रहनेवाले जहाज़ के कप्तान की भांति दूर तक की चीज़ों को देख सकता था। दूरबीन से वह सड़कों और गलियों को देखता और उसे जवान तथा बूढ़े, ख़ुश और विचारों में डूबे हुए सैकड़ों चेहरों की झलक मिलती। चित्रकार के चेहरे पर हर वक़्त मुस्कान खिली रहती जिससे उसके पीले चेहरे पर चमक आ जाती और उसकी दयालु आंखों की चमक अधिक स्पष्ट हो उठती।

लीजिये – उसे भीड़ में कोई दिलचस्प चीज़ नज़र आ गई! चित्रकार एक हाथ में दूरबीन थामे रहता और दूसरे हाथ में तेज़ नोक वाली पेंसिल हिलने-डुलने लगती है!

कुछ मिनट गुज़रते और सफ़ेद काग़ज़ पर एक मातहत कर्मचारी का चेहरा उभर आता जो अपने अधिकारी की ओर कुत्ते की सी वफ़ादार नज़र से देखता दिखाई देता। चौड़े घेरे वाला कोट पहने हुए और बारीक नोक वाली सैंडलों की एड़ियां बजाती हुई किसी बनी-ठनी युवा नारी का चित्र नज़र आने लगता। अपने छोटे से थैले के बोझ से दबते हुए किसी नौकरशाह की शक्ल नज़र आने लगती।

रोगोव के चित्रों को देखकर बहुत से लोग खुलकर हंसते, मगर फिर अपनी सूरत पहचानकर अचानक चुप हो जाते।

बोरीस को याद आया कि कैसे उसी सुबह को जब वह रोगोव के दरवाज़े के पास से गुज़र रहा था तो एक लम्बे आदमी से टकरा गया था जो हंसी के मारे बेहाल हुआ जा रहा था। ज़ाहिर था कि उसने फ़्लैट में ही हंसना शुरू कर दिया था और अब किसी तरह भी हंसी पर क़ाबू पाने में असमर्थ था। इस अजनबी ने अपना सिर झटका और ख़ुशी के कारण छलक आनेवाले आंसू पोंछे। ज़रा संभलने पर उसने अपना थैला खोला, फिर से व्यंग्यचित्र को देखा और ज़ोर से ठहाकर हंस पड़ा।

बोरीस जिज्ञासा के कारण बेहद बेचैन हो रहा था, उसने उचककर उस व्यंग्यचित्र को देखा और ज़ोर से हंस पड़ा। उसे महसूस हुआ मानो कोई अदृश्य व्यक्ति उसे भीतर से गुदगुदा रहा है। व्यंग्यचित्र में तोते जैसी सूरत वाले एक बांके-छैले को दिखाया गया था।

रोगोव से परिचित इस व्यक्ति ने बोरीस को आंख मारी और सीढ़ियों से नीचे उतर गया। बाहर पहुंचते ही उसने हाथ हिलाकर एक टैक्सी रोकी। वह बहुत जल्दी से अख़बार के कार्यालय में पहुंच जाना चाहता था। उसकी फ़ुर्ती पर ही यह बात निर्भर करती थी कि रोगोव का व्यंग्यचित्र अगले दिन के समाचारपत्रों में छपेगा या नहीं। अगर वह वक़्त पर पहुंच गया तो हज़ारों नहीं, करोड़ों लोग अगले दिन बेवक़ूफ़ी भरे बांकपन पर हंसेंगे। और यह तो हर कोई जानता है कि हंसना दवाई का सा असर रखता है।

"अगर रोगोव बॉबी का चित्र बना दे तो ये करोड़ों लोग उसे खोजने में सहायता दे सकेंगे!"

इस विचार के अचानक दिमाग़ में आते ही बोरीस की सांस फूल उठी। उसने जगमगाते हुए मकान पर नज़र डाली। रोगोव के कमरे की बत्ती जल रही थी। वह तेज़ी से ऊपर गया।

"नमस्ते, नौजवान। कहो, क्या सेवा करूं तुम्हारी?" चित्रकार की भूरी आंखों और उनके गिर्द नज़र आनेवाली मुस्कराती हुई झुर्रियों ने बोरीस को प्रोत्साहन दिया और वह दरवाज़ा लांघते हुए ही जल्दी-जल्दी बॉबी और राकेट की कहानी सुनाने लगा। बोरीस को न टोकते हुए चित्रकार अपने स्टूडियो में चला गया, मेहमान को अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया और असली बिल्ली से बहुत कुछ मिलती-जुलती मख़मल की लाल बिल्ली की बग़ल में नर्म कौच पर बैठने को कहा। स्वयं चित्रकार पेंसिलों, काग़ज़ों और रंगों से पूरी तरह अटी हुई मेज़ के गिर्द बोरीस के सामने बैठ गया।

"यह तो बड़ी दुखद कहानी है," रोगोव ने इस तरह सिर हिलाया मानो सारी बात समझ ली हो। "ज़ाहिर है कि जो कुछ दिलचस्प और मनोरंजक होता है, लोग इसकी ओर अधिक तेज़ी से खिंचते हैं। हम कोशिश करेंगे, ज़रूर कोशिश करेंगे। हम इसी वक़्त इस काम को शुरू करते हैं।"

रोगोव ने अपनी पेंसिल उठाई। उसने बड़े-बड़े और तेज़ झटकों के साथ इस अन्दाज़ से कुछ रेखायें खींचीं मानो वह काग़ज़ रूपी रणक्षेत्र पर धावा बोल रहा हो। कुछ देर बाद उसने बोरीस को एल्बम दिखाया।

"बॉबी से मिलता-जुलता है यह?"

"हू-ब-हू वैसा ही है!" बोरीस ने बहुत ख़ुश और आश्चर्यचकित होते हुए कहा। उसके सामने उसका बॉबी था, बिल्कुल उसका अपना बॉबी। बोरीस सैकड़ों अन्य कुत्तों के बीच उसकी लम्बी सी थूथनी, उसकी काली स्नेहपूर्ण आंखें पहचान सकता था जो

मानो उससे पूछती सी लगती थीं, "मैं तुम्हारा मित्र हूं, क्या तुम मेरे मित्र हो?"

"मेरे सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रालोचक ने यह कह दिया है कि इसकी शक्ल बॉबी से बहुत कुछ मिलती-जुलती है इसलिये ग्रब मैं ग्रपना चित्र बनाना शुरू कर सकता हूं," रोगोव ने ख़ुश होते हुए कहा।

"क्या मतलब?" बोरीस समझ नहीं पा रहा था। "बनाना शुरू करेंगे? क्या बना नहीं चुके?"

"नहीं, बेटे, ग्रभी चित्र नहीं बना। यह तो सिर्फ़ ख़ाका है। तुम्हें ज़रा सब्र से काम लेना होगा।"

बोरीस सोफ़े पर चुपचाप बैठा रहा ग्रौर रोगोव ने चित्र बनाना शुरू किया। ग्रब वह ग्रधिक धीरे-धीरे रेखायें खींच रहा था, जबतब रुक जाता था ग्रौर किसी ऐसी बात को सोचकर मुस्कराता था जिसे सिर्फ़ वही जानता था।

मेहमान को जब यह विश्वास हो गया कि चित्रकार उसे बिल्कुल भूल चुका है तभी रोगोव ने ग्रचानक उसे सम्बोधित करते हुए कहा—

"हां तो ग्रालोचक, ग्रब ज़रा इसपर नज़र डालो!"

ग्रालोचक ने रेखाचित्र पर नज़र डाली, उसे ध्यान से देखा ग्रौर चुप्पी साधे रह गया। वह एकदम स्तम्भित हो गया था। उसकी समझ में नहीं ग्रा रहा था कि ख़ुश हो या नाराज़।

वह इस चित्र को देखते हुए सोच में डूब गया था, उसका मामूली सा कुत्ता बॉबी एक ग्रन्तरिक्ष-नाविक के रूप में बदल गया था। चित्र में दिखाया गया था कि वह एक राकेट में उड़ रहा था ग्रौर हवा उसके कानों को एक झण्डे की भ्रांति फड़फड़ा रही थी।

यह तो कुछ बुरा नहीं था। मगर वहां जो टेढ़ी-मेढ़ी ग्रांखों वाले ख़रगोश, भेड़िये, फूली-फूली दुमों वाली गिलहरियां ग्रौर लोमड़ियां ग्रपने पंजे हिलाती, कलाबाज़ियां लगाती ग्रौर उछल-कूद करती हुई, नज़र ग्रा रही थीं, वे कहां से ग्रा गई थीं? तब बोरीस ने चित्र को ग्रधिक ध्यान से देखा ग्रौर यह बात उसकी समझ में ग्राई कि ये तरह-तरह के जानवर बॉबी का ग्रभिनन्दन करने के लिये ग्राये थे। बादामी रंग का एक भालू गुलदस्ता उठाये खड़ा था। कुछ डरपोक चूहे, एक-दूसरे की दुम से दुम सटाये हुए नज़र ग्रा रहे थे। एक बेवक़ूफ़ ग्रौर गम्भीर सा सारस ग्रपने पंख फड़फड़ाता हुग्रा दिखाया गया था। उसका इस बात की ग्रोर भी ध्यान नहीं जा रहा था कि एक छोटा सा मेंढक, जो उसने जल्दी में दलदल से खींच लिया था, उसकी लम्बी-लम्बी टांगों से चिपका हुग्रा इधर-उधर झूल रहा था।

बोरीस खिलखिलाकर हंस पड़ा, फिर उसने ग्रपनी हंसी रोक ली—क्या यह हंसने की बात थी? उसके माथे पर बल पड़ गये ग्रौर उसने एक बार फिर मेंढक की ग्रोर देखा। यह तो सचमुच ही बहुत ग्रजीब चीज़ थी... बोरीस को ज़बरदस्ती हंसी ग्रा गई। लगातार बोरीस की ग्रोर देखते रहनेवाले रोगोव ने सन्तोष की सांस ली... उसे लगा कि तीर निशाने पर बैठा है।

ग्रसली चीज़ तो यह थी कि चित्र की ग्रोर लोगों का ध्यान ग्राकर्षित हो। पाठक चित्र को ग़ौर से देखने लगेंगे ग्रौर फिर नीचे दिये गये विवरण को पढ़ेंगे। विवरण में खोये हुए कुत्ते की संक्षिप्त कहानी ग्रौर यह ग्रनुरोध होगा कि पाठक सम्पादकीय कार्यालय में इस बात की सूचना दें कि उन्होंने बॉबी नाम के कुत्ते को कहां ग्रौर कब देखा।

एक हफ़्ता बीत गया। बालकों की सबसे ग्रधिक दिलचस्प पत्रिका में यह नया चित्र प्रकाशित हुग्रा। सम्पादक के दफ़्तर में साधारण ग्रौर फ़ौरी सैंकड़ों पत्र ग्राये। सम्पादक ने सभी पत्रों को मेज़ पर रखा, उनमें से जो हाथ में ग्राता गया उसे ही पढ़ता गया—"प्रिय सम्पादक!" क्रास्नोप्रूद्नाया सड़क पर रहनेवाले एक कुत्ते के स्वामी ने बड़े-बड़े गोल ग्रक्षरों में सम्पादक को सम्बोधित किया था। "मैं चित्रकार को धन्यवाद देता हूं कि उसने मेरे शारिक नाम के कुत्ते का चित्र बनाया है। मैं दस तक ग्रौर मेरा कुत्ता तीन तक गिनती जानता है।"

सम्पादक ने एक ग्रर्थपूर्ण "हुम" की ग्रौर ग्रगला पत्र उठाया। लिफ़ाफ़े में से एक गठे हुए ग्रौर मज़बूत बुलडॉग का चित्र नीचे गिरा। रोगोव ने पतली थूथनी वाले जिस कुत्ते का चित्र बनाया था, बुलडॉग की सूरत उससे बिल्कुल मेल नहीं खाती थी तथापि

पत्र भेजनेवाले को इस बात का पूरा विश्वास था कि चित्रकार ने उसी के कुत्ते का चित्र बनाया था।

ढेर सारे पत्रों को पढ़ने के बाद सम्पादक कुछ देर तक आंखें मूंदे हुए बैठा रहा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो मास्को में सब ओर कुत्ते ही कुत्ते हैं और वे सब एक-दूसरे से बिल्कुल मिलते-जुलते हैं। इन कुत्तों के मालिकों ने लिखा था कि उनके कुत्तों ने जलती हुई इमारतों में से बच्चों को निकाला था, वे उठाईगीरों से उलझे थे, वे मज़बूत, बहादुर और वफ़ादार थे – मतलब यह कि वे बहुत दूर-दराज़ के ग्रहों तक उड़ान कर सकते थे। मगर उनमें से कोई भी ऐसा नहीं था जिसे आवारागर्दी करते हुए सड़क पर से पकड़ा गया हो। उन्हें छोटे-छोटे पिल्लों से ही पाल-पोसकर बड़ा किया गया था। संक्षेप में यह कि उनमें से कोई भी बॉबी नहीं था।

ख़ुद रोगोव ने बोरीस को यह सब कुछ बताया। बोरीस पहले दिन की तरह मख़मल की बनी लाल बिल्ली की बग़ल में कौच पर बैठा हुआ यह सब कुछ सुनता रहा।

"तो यह मामला है, बेटे! हमें अपने लक्ष्य में सफलता नहीं मिली," रोगोव ने अपनी बात ख़तम की और एक अपराधी की भांति मुस्करा दिया। "शायद तुम मेरे पुस्तकालय पर नज़र डालना पसन्द करोगे?"

"नहीं, धन्यवाद! मैं जाना चाहता हूं," बोरीस ने उदासी से कहा। यद्यपि दोपहर का समय था तथापि उसने चित्रकार से "शुभरात्रि" कहा और चला गया।

रोगोव को इस बात से बिल्कुल हैरानी नहीं हुई। परेशानी के आलम में कोई कुछ भी कह सकता है ...

क्लोरेला

ल्यूबा को इस बात का विश्वास था कि उसके घर से बाहर जाते ही कुछ असाधारण घटनायें होंगी और उसे कुछ साहसी कारनामों का साक्षी होना पड़ेगा। नुक्कड़ पर ख़ुशी की घंटियां बज उठेंगी और किसी राज़ पर से पर्दा हट जायेगा, जिससे उसे हैरानी और ख़ुशी होगी। इसलिए जैसे ही उसने बोरीस स्मेलोव को चित्रकार के फ़्लैट से आते देखा, वैसे ही उसने कहा – "तो वह घटनाक्रम शुरू हो रहा है ..." दरवाज़े पर लगी हुई नाम की प्लेट पर 'क० प० रोगोव' को ध्यान से देखकर उसने अपनी पैनी नज़र बोरीस के चेहरे पर जमा दी और मक्कारी के अन्दाज़ में ऐसे अपनी आंखें सिकोड़ीं मानो कह रही हो कि मैं सब कुछ जानती हूं। मगर चूंकि वास्तव में वह कुछ भी नहीं जानती थी, इसलिए सिर्फ़ इतना ही कह पाई –

"क्या तुम स्केटिंग करने जा रहे हो?"

उसकी ओर देखे बिना ही बोरीस सीढ़ियां उतरने लगा।

वे चुपचाप बाहर पहुंचे। रविवार का दिन था। धूप खिली हुई थी, गुलाबी पाला था, स्कीज़ किचकिच की आवाज़ पैदा कर रही थीं और चिड़ियां चहचहा रही थीं। ल्यूबा कहने ही वाली थी – "बस, काफ़ी नाराज़ हो लिए," कि अचानक गेना करातोव पर उसकी नज़र पड़ी और वह रुक गई। आविष्कारक का चेहरा ऐसे ज़र्द था मानो उस वक़्त लाल बुख़ार से निजात पाकर बाहर आया हो। "वह दुखी रहता है," ल्यूबा ने सोचा। "मुझे इसे और बोरीस को फिर से मित्र बनाने का कोई न कोई उपाय सोचना ही चाहिये।"

"क्या स्केटिंग करने जा रहे हो?"

गेना ने इस तरह अपने कन्धे झटके मानो ल्यूबा से कह रहा हो कि यह कैसा बेहूदा सवाल तुमने पूछा है।

"तुम यह समझती हो कि मुझे और कोई काम ही नहीं?" एक व्यस्त आदमी के अन्दाज़ में उसने प्रत्युत्तर में पूछा।

"शायद तुम चांद पर उड़ान करनेवाले हो?" ल्यूबा ने खीझकर कहा।

"जिज्ञासा के कारण बिल्ली को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था," गेना ने अपने भूतपूर्व मित्र को, जो पास ही खड़ा था, चोर नज़र से देखते हुए जवाब दिया।

जवाब सुनकर बोरीस ने सीटी बजाई और चल दिया।

नहीं, आज श्रीगणेश अच्छा नहीं हुआ। ल्यूबा ने तय कर लिया कि आज का दिन उदासी भरा और मामूली रहेगा। उसे इस बात का आभास भी नहीं हुआ कि वह जिस रहस्य की खोज में थी वह उसके बिल्कुल निकट ही खड़ा था।

गेना करातोव तो सचमुच ही अन्तरिक्षीय उड़ान की तैयारी कर रहा था। पिछले कुछ समय से वह अपने को साध रहा था तथा अपनी संकल्प-शक्ति को दृढ़ बना रहा था। कौन जाने अन्तरिक्ष-यान में उसे कैसी-कैसी मुसीबतों और मुश्किलों का सामना करना पड़े! हो सकता है कि अन्तरिक्ष-यान एक-दो दिन के लिए नहीं, बल्कि बहुत ही दूर के किसी ग्रह तक पहुंचने के लिए लगातार साल भर उड़ता रहे। इस लम्बे वक़्त के दौरान उसे खाना-पीना और सांस तो लेना ही होगा। गेना ने हिसाब लगाया कि इन्सान हर घन्टे में एक पीपे के बराबर हवा का सेवन करता है और इस तरह चौबीस घंटों में चौबीस पीपों का उपयोग करता है। साल भर उड़ान करने के लिए हवा के कितने पीपों की ज़रूरत होगी? एक राकेट में इतनी सामग्री ले जाना संभव नहीं होगा। क्लोरेला – यही अन्तरिक्ष-

6—3955

नाविक की प्राण-रक्षा करेगी! क्लोरेला ऑक्सीजन पैदा करती है, उसे खाया जा सकता है और वह दुगुनी तेज़ी से बढ़ती है।

गेना ने शीशे के बक्स में इस जल-पौधे को उगाया। अपने शरीर पर क्लोरेला के प्रभाव की जांच करने के लिए उसने तीन दिन तक कुछ भी न खाने का फ़ैसला किया। वह सिर्फ़ क्लोरेला खायेगा और कुछ भी नहीं!

ल्यूबा काज़ाकोवा से बात करते समय भूख के मारे उसका दम निकला जा रहा था, मगर उसने अपनी तबीयत ख़राब होने की कोई चर्चा न की। दृढ़ क़दमों से स्केटिंग रिंक की ओर जाती हुई ल्यूबा को गेना ने ईर्ष्या की नज़र से देखा। मगर वह निश्चय ही वहां नहीं जायेगा। अन्तरिक्ष-नाविक को दृढ़-संकल्प का, पक्के इरादेवाला इन्सान होना चाहिये। बहुत बुरी बात है कि कोई भी तो, यहां तक कि मां भी इस बात को नहीं समझती। वह हर समय उसके पीछे पड़ी रहती है—यह खाओ, वह खाओ!

गेना ने गहरी सांस ली, खिड़की के दासे पर बैठी हुई एक चिड़िया पर बर्फ़ का गोला फेंका और घर चला गया।

मां चूल्हे पर कुछ पकाने में व्यस्त थी। गर्मी से उसका चेहरा लाल हो रहा था और उसने अपनी आस्तीनें कोहनियों तक ऊपर चढ़ाई हुई थी। सारे घर में सेब की कचौरियों की प्यारी-प्यारी गन्ध फैली हुई थी। गेना के मुंह में पानी भर आया। जहां भी उसने नज़र दौड़ाई, वहां ही उसे बादामी पपड़ी और सुनहरे सेब से भरी हुई सुन्दर और लाल कचौरी नज़र आई। कचौरी को अपनी आंखों के सामने से हटाने के लिए गेना ने सिर झटका।

दिल को मज़बूत बनाये रखने के लिये वह अपनी मेज़ के पास गया और उसने त्सिओल्कोव्स्की की किताब उठाकर पढ़नी शुरू कर दी।

"'ख़ुद अपने पर तजरबे किये...'" एक कोने से दूसरे कोने तक दृढ़तापूर्वक चहलक़दमी करते और लगातार कचौरी के बारे में सोचते हुए उसने ऊंची आवाज़ में पढ़ा, "'कई दिनों तक मैंने न तो कुछ खाया, न पिया।' ज़रा ख़्याल कीजिये, कई दिनों तक कुछ भी नहीं खाया-पिया। और मैं? और मैं इसे एक दिन के बाद ही ख़तम कर देना चाहता हूं। यह सच है कि त्सिओल्कोव्स्की को इतनी ज़्यादा मुसीबत का सामना नहीं करना पड़ा था। कोई उसे खाने-पीने के लिए मजबूर नहीं करता था। मेरी तरह उसे अपने मां-बाप से इसके लिए झगड़ा नहीं करना पड़ता था। अगर तीश्का न होती तो सारा तजरबा ही चौपट हो गया होता...

"तीश्का, इधर आओ तीश्का," गेना ने पुकारा।

फूले-फूले रोयों वाली बिल्ली अपने होंठ चाटती हुई इतमीनान से अलमारी के पीछे से निकली। गेना ने जब से क्लोरेला खानी शुरू की थी, तीश्का स्पष्टतः मोटी हो गई थी।

"अब हम शाम का खाना खायेंगे," उसने बिल्ली को चेतावनी दी।

गेना शीशे के बक्स के पास गया और उसने धुंधले, हरे पानी को अनमने मन से देखा। क्लोरेला खाने को उसका मन नहीं हो रहा था। मगर फिर भी उसने एक गिलास लिया और एक छाननी में से उसे छानने लगा जिसमें उसने स्याही चूस रखा हुआ था। साथ ही उसने तीश्का को विश्वास दिलाया—

"तीश्का, क्लोरेला में सभी कुछ है – प्रोटीन, चर्बी, कार्बोहाइड्रेट और विटामिन ए, बी और सी। इसलिए हम मरेंगे नहीं!"

तीश्का म्याऊं-म्याऊं करके उसकी हर बात के साथ सहमति प्रगट कर देती थी।

हिम्मत से क्लोरेला को निगलकर गेना उकड़ूं बैठ गया और उसने मेज़ के नीचे से एक प्लेट निकाली जिसमें कटलेट था।

"इधर आओ तीश्का, इधर आओ," उसने बिल्ली को प्यार से अपने पास बुलाया।

तीश्का ने कटलेट को सूंघा, मगर खाया नहीं। (वह गेना का नाश्ता और दोपहर का खाना खा चुकी थी।)

"तुम्हें मालूम है यह तुम क्या कर रही हो? मेरा भण्डाफोड़ करना चाहती हो?" गेना चीख़ उठा। वह हताश होकर लगभग चिल्लाने लगा था। बिल्ली डरकर अलमारी के नीचे दुबक गई। मगर गेना भी बात को ख़तम करने के मूड में नहीं था। उसने बिल्ली को दुम से पकड़कर बाहर निकाला और घसीटता हुआ तश्तरी के पास ले गया।

"खाओ! खाओ इसे, विश्वासघातिनी," वह चिल्लाया।

मां ने जब यह शोर सुना तो रसोईघर से भागी हुई आई। उसने देखा कि फ़ाक़ा करता हुआ गेना उकड़ूं बैठा था और बिल्ली उसकी बाहों के बीच थी। उनके सामने तश्तरी में ठण्डा कटलेट रखा था। बिल्ली कटलेट खाने को तैयार नहीं थी।

अब गेना को सारी बात माननी पड़ी। मां ने धमकी दी कि अगर वह उसी वक़्त भोजन नहीं

करेगा तो शीशे के बक्स समेत क्लोरेला खिड़की से बाहर फेंक दी जायेगी। गेना सेब की कुछ कचौरियां खाने को राज़ी हो गया।

यद्यपि सेब की कचौरियां क्लोरेला की तुलना में मज़ेदार थीं तथापि भावी अन्तरिक्ष-नाविक ने बहुत ही भारी मन से उन्हें खाया। उसे लगातार इस बात का ध्यान आता रहा कि अन्तरिक्षीय उड़ान के समय कचौरियों की तुलना में क्लोरेला कहीं अधिक उपयोगी होगी।

तोप या राकेट?

जीवन में अजीब संयोग होते रहते हैं। मान लीजिये कि कुछ लोग लैम्पों के नीचे विभिन्न कमरों में बैठे हैं। उनमें से किसी एक को अचानक ऊब अनुभव होने लगती है। देखते ही देखते दूसरा भी उसी तरह से ऊब महसूस करने लगता है और उसके बाद तीसरा भी। जम्हाई की तरह ऊब भी एक आदमी से दूसरे आदमी के पास पहुंच जाती है। वयस्क अकेले ही ऊबना अधिक पसन्द करते हैं, मगर तेरह वर्षीय बालकों का अन्दाज़ दूसरा ही होता है। अगर वे घर पर करने के लिए दिया गया स्कूल का काम ख़तम कर चुके हैं और अगर शेर्लोक होम्ज़ सम्बन्धी किताब तथा 'ट्रय्यर आइलैंड' और डाक-टिकटों के एल्बम का उन्हें ध्यान नहीं आता, अगर स्केटिंग रिंक की बर्फ़ एक दिन पहले आनेवाले तूफ़ान की वजह से ऊबड़-खाबड़ हो गई है और कोई भी आत्म-सम्मान रखनेवाला स्केटर स्केटिंग करने की बात नहीं सोचेगा तो ऐसी शामों को वे छोटे-छोटे दलों में ड्योढ़ी के पास

जमा हो जाते हैं और दूर-दराज के सितारों से आनेवाले रहस्यपूर्ण संकेतों, अदृश्य नायकों, अमरत्व के रहस्यों और उन ख़ुशनसीबों के बारे में बातचीत करते हैं जो एक हज़ार वर्ष बाद, इन्हीं की भांति शाम के झुटपुटे में ड्योढ़ी के पास खड़े होकर बातचीत करेंगे। इन बालकों की यह अन्तहीन बातचीत जारी ही रहती है हत्ता कि किसी न किसी मंज़िल की खिड़की खुलती है और किसी लड़के की मां डांटकर कहती है – "ग्यारह बज गये हैं, बातूनी! अब आकर सो जाओ!"

बिल्कुल ऐसे ही, किसी पूर्व निश्चय के बिना ही, हमारे तीनों नायक राहगीरों द्वारा लापरवाही से बर्फ़ में बना दिये गये एक रास्ते पर सन्ध्या को मिले। अप्रत्याशित ही सामने आ जाने पर उन्हें मजबूर होकर एक दूसरे का अभिवादन करना पड़ा, मगर साथ ही हरेक ने इस तरह से कन्नी काटने की कोशिश की मानो वे 'हंस, पाइक मछली और केकड़ा'* नामक लोककथा का कोई दृश्य पेश कर रहे हों। मगर वे मन ही मन एक-दूसरे से बातचीत करना चाह रहे थे इसलिए अपनी-अपनी जगह पर खड़े रहे। प्रत्येक यह आशा कर रहा था कि दूसरा वह जादूभरा शब्द कह देगा जिसके बाद हर किसी के मन से बोझ हट जायेगा और वे बिना तनाव के एक-दूसरे की आंखों में झांक सकेंगे। ल्यूबा ने ही सबसे पहले वह शब्द ढूंढ़ निकाला।

"देखो," अपनी नज़र आसमान की ओर उठाते हुए उसने कहा, "ध्रुवतारा हमारे घर के ऊपर है!"

उसकी दृष्टि का अनुकरण करते हुए लड़कों ने भी आकाश की ओर देखा।

"अगर बादल न होते तो मैं तुम दोनों को सभी चमकदार सितारे दिखा देता," गेना ने कहा।

"तुम दोनों को" बोरीस ने इन शब्दों की ओर विशेष ध्यान दिया।

ध्रुवतारा उदासी से इनके घर के ऊपर चमक रहा था और गेना ने जिन सितारों – "अलगल, रोहिणी, अल्तायर, एलसिओन, ज्येष्ठा, स्वाति..." के नाम लिये, उनके नामों में भी उदासीनता की झलक थी। मगर बोरीस को ऐसे लगा मानो वातावरण में कुछ गर्मी आ गई थी।

---

*यह रूसी कवि क्रिलोव द्वारा लिखित एक मशहूर लोककथा है जिसमें हंस, पाइक मछली और केकड़े को एक छकड़े के साथ बांध दिया जाता है। छकड़ा आगे की ओर नहीं चलता, क्योंकि हंस उड़ने की, मछली तैरने की और केकड़ा पीछे जाने की कोशिश करता है। –सं०

"गर्मी ही नहीं, बहुत अधिक गर्मी," वह अचानक और अप्रत्याशित कह उठा।

"मगर चांद पर बेहद ठंडक है। नवीनतम सूचना के अनुसार वहां शून्य से २७० दर्जे नीचे तापमान रहता है," बोरीस के भूतपूर्व मित्र ने कहा।

इसी बीच ल्यूबा, जो फ़ेल्ट के सफ़ेद बूट पहने हुए थी बर्फ़ से ढके और बन्द पड़े हुए एक स्टाल की ओर बढ़ गई। पतझर में इस स्टाल पर सेब बिकते थे। वह उछलकर काउंटर पर बैठ गई।

"ओह, यहां तो बड़ा मज़ा है! ज़रा भी हवा नहीं। यहां आ जाओ!"

बोरीस और गेना बर्फ़ को फांदते और उसे अपने पैरों तले पीसते हुए स्टाल की तरफ़ भाग चले। जब वे स्टाल के क़रीब पहुंचे तो उनके बूट बर्फ़ से भरे हुए थे। एक टांग पर उछलते और एक हाथ से स्टाल को थामते हुए उन्होंने अपने बूटों को झटककर बर्फ़ बाहर निकाली और ल्यूबा को बर्फ़ के ढेर में धकेलने की धमकी दी। ल्यूबा कोई भी तकलीफ़ बर्दाश्त करने को तैयार थी। उसे इस बात की ख़ुशी थी कि गेना और बोरीस के बीच अब पहले का सा तनाव नहीं था।

"ठहरो! हम अभी तुम्हें मज़ा चखाते हैं!" बोरीस ने चिल्लाकर कहा और उसे "हम" शब्द कहकर बहुत ख़ुशी हुई। उसने अपनी पूरी ताक़त से प्लाईवुड की दीवार पर बर्फ़ का एक गोला फेंका। गेना ने भी कुछ बर्फ़ उठाई।

"यह है स्पूत्निक नम्बर १, यह है स्पूत्निक नम्बर २ और यह है स्पूत्निक नम्बर ३!" बर्फ़ का गोला फेंकते हुए गेना ने हर बार कहा। "और यह है राकेट 'कल्पना'!"

स्टाल पर बर्फ़ का तूफ़ान सा आ गया। ल्यूबा चिल्लाती और स्टाल में छिपती गई।

"ए, अब बस करो!" उसने अपने छिपने की जगह से चिल्लाकर कहा। "आओ, अब कुछ सवाल सोचें। हर कोई जीवन-सम्बन्धी सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल सोचे और फिर हम उस पर बहस करेंगे। अच्छा, अब सोचो।"

"यह और लो!" बोरीस चिल्लाया और फिर अचानक ही चुप हो गया क्योंकि गेना हंसा नहीं था।

स्टाल का सहारा लिए हुए बोरीस लैम्प के प्रकाश में चमकते हुए हिमकणों के छोटे-छोटे पैराशूटों को देख रहा था। वे चक्कर खाते, एक दूसरे से टकराते, फिर से उड़ते और धरती पर गिरकर अपने भाइयों के ढेर में ग़ायब हो जाते थे और इस तरह पृथ्वी को ढकनेवाला एक महान पैराशूट बन जाते थे। बोरीस के दिमाग़ में फ़ौरन ऐसे सवालों की झड़ी लग गई जिनका तत्काल ही उत्तर ढूंढ़ना ज़रूरी था। उसे हर सवाल ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता था और लगता था कि अगर उसका फ़ौरन ही जवाब नहीं मिलेगा तो दुनिया में रहना असम्भव हो जायेगा।

"नमस्ते, हिम-पक्षियो!" अचानक निकट ही एक अपरिचित आवाज़ सुनाई दी। लाल रंग का फ़र कोट और जचता हुआ फ़र का टोपा पहने हुए एक आदमी स्टाल के पीछे से सामने आया। वह जेबों में हाथ डाले हुए था। उसने उन्हें चमकती हुई आंखों से देखा। "हुं... तो क्या हो रहा है? पिछले साल के सेब खोजे जा रहे हैं? देखो, देखो, इस तरह ग़ुस्से में नहीं आओ!" बोरीस के माथे पर बल पड़ते देखकर उसने कहा। "मैं तो मज़ाक कर रहा था। तुमसे थोड़ी बातचीत करके मुझे ख़ुशी हो रही है। मैं तो तुम्हें दो-एक जादू के खेल भी दिखा सकता हूं। चाहते हो कि मैं यह अनुमान लगाऊं कि तुम लोग क्या सोच रहे हो? अरे हां, मैं तो लोगों के दिलों में झांक सकता हूं। देखो तुम," उसने ल्यूबा की आस्तीन को अपनी उंगली से छूते हुए कहा, "तुम अपने पैर झुला रही हो और यह सोच रही हो कि क्या दुनिया में बिल्कुल तुम्हारे जैसा ही कोई दूसरा व्यक्ति भी है जो ठीक इसी समय किसी स्टाल के काऊंटर पर बैठा अपने पैर झुलाता हुआ यह सोच रहा हो कि अगर छिपकली की दुम काटकर इतनी दूर फेंक दी जाये कि वह मिल न सके तो क्या उसकी दुम फिर से निकल आयेगी?"

ल्यूबा का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया।

"तुम क्या जादूगर हो?" उसने गम्भीरतापूर्वक पूछा।

"अरी नहीं बुद्धू! तुम्हारी इस चपटी नाक ने ही मुझे सब कुछ बता दिया है। और तुम," वह मुड़ा और उसने बोरीस के कन्धे पर हाथ रखा, "तुम अदृश्य व्यक्ति

बनने का सपना देख रहे हो... और तुम," उसने गेना के पास जाकर कहा, "तुम यह सोच रहे हो, 'क्या ऐसी औषधि का आविष्कार करना सम्भव है जिससे इन्सान में बबरशेर की ताक़त और बारहसिंगे की रफ़्तार आ जाये?' ये सभी सवाल बेतुके हैं। अच्छा हो यदि तुम यह अनुमान लगाओ कि आदमी चांद पर कैसे पहुंचेगा? तोप या राकेट द्वारा?"

यह सवाल पेश करके अजनबी मुड़ा और जवाब का इन्तज़ार किये बिना वहां से चलता बना।

"भई वाह!" बोरीस ने ख़ुश होते हुए गहरी सांस ली। "काश कि मैं इस तरह से लोगों के मन की बात जान सकता।"

"अरे, ऐसी कोई बात नहीं है। उसने हर चीज़ का सही अनुमान नहीं लगाया है। मसलन मैं बारहसिंगे के बारे में नहीं सोच रहा था," गेना ने कहा।

"मगर उसने छिपकली के बारे में कैसे अनुमान लगाया?" ल्यूबा के चेहरे पर अभी तक आश्चर्य की छाप अंकित थी।

"बहुत बुरी बात है कि वह इतनी जल्दी चला गया, वरना मैं उसे जवाब देता, तोप या राकेट द्वारा!" बोरीस ने जोश से अपनी बाहें हिलाते हुए कहा।

"क्या जवाब दिया होता तुमने उसे?" गेना ने जानना चाहा।

"मैं उससे पूछता कि क्या उसे 'तोप-क्लब' के प्रधान बर्बिकेन के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध स्तुतिगान याद है?" इतना कहकर बोरीस ने मुद्रा बनाते हुए यह स्तुतिगान शुरू किया, "रे, अद्भुत तोप के गोले! अद्भुत गोले! मैं सपना देख रहा हूं ऊपर–आकाश में–तुम्हारा वहां पृथ्वी के दूत के यथायोग्य आदर-सत्कार होगा!"

"यह क्या कोई कविता है? और यह बर्बिकेन कौन है?" काऊंटर से नीचे उतरते हुए ल्यूबा ने पूछा।

"बुद्धू लड़की," गेना ने कन्धा झटका। "क्या तुमने ज्यूलेस वेर्नस की किताबें 'पृथ्वी से चांद पर' और 'चांद के गिर्द' नहीं पढ़ीं।"

"टोको नहीं!" बोरीस ने गेना को रोकते हुए कहा। "मैं ख़ुद उसे बताऊंगा। इस किताब में 'तोप-क्लब' के प्रधान बर्बिकेन के बारे में बताया गया है। वह और उसके दोस्त चांद पर तोप का एक गोला भेजना चाहते थे। उन्होंने एक अतिकाय तोप बनाई और उसे 'कोलुम्बियादा' का नाम दिया। उन्होंने उड़ान का दिन निश्चित किया। लोगों की भारी भीड़ जमा हुई। हर कोई चांद के निकलने का इन्तज़ार कर रहा था।

आख़िर चांद निकला और मिथुन राशि के नज़दीक पहुंचा। तब एक धमाका हुआ और गोला अन्तरिक्ष की ओर छूटा..."

"मगर वह कभी चांद पर नहीं पहुंचा!" गेना हंस दिया।

"क्यों नहीं पहुंचा? क्यों नहीं?" ल्यूबा परेशान हो उठी। "यह तो बहुत ही दिलचस्प काम था..."

"वह झूठ बोल रहा है!" बोरीस ने अपना पैर पटकते हुए कहा। "गोला वहां पहुंचा था। ज्यूलेस वेर्नस की किताब में तो ज़ोर देकर यह कहा गया है कि गोला चांद पर पहुंचा था।"

"यह तो सिर्फ़ ज्यूलेस वेर्नस की किताब में कहा गया है। मगर वास्तव में..."

"वास्तव में क्या? तुम्हारे ख़्याल में वास्तव में क्या हुआ होगा?" बोरीस ने सावधानी से पूछा।

"वास्तव में," गेना ने स्पष्ट करना शुरू किया, "किसी तरह की भी तोप से चांद पर गोला नहीं भेजा जा सकता। इसके लिए बहुत ही तेज़ रफ़्तार–प्रति सेकंड ११ किलोमीटर की रफ़्तार–की ज़रूरत होती है। तुम्हें तोप के गोले की रफ़्तार मालूम है? मालूम है तुम्हें?"

"हां, मालूम है। प्रति सेकंड ३ किलोमीटर। मेरे भाई ने मुझे बताया था।"

"यह ठीक है। एक सेकंड में ३ किलोमीटर, अब तुम हिसाब लगा लो। तुम चांद पर पहुंचोगे या नहीं? कभी नहीं!"

"मुझे तुम्हारा यह लहजा पसन्द नहीं!" बोरीस ने चेतावनी दी।

"बिगड़ो नहीं! यह तो महज़ बहस है, जैसा कि यूनानी कहते हैं बाइज़्ज़त बहस है।"

"बेशक बहस ही है!" ल्यूबा ने गेना के स्वर में स्वर मिलाते हुए कहा।

"अगर यह बाइज़्ज़त बहस है," ज्यूलेस वेर्नस के हिमायती ने खीझते हुए कहा, "तो तुम इस बात को ध्यान में क्यों नहीं रखते कि 'कोलुम्बियादा' कोई साधारण नहीं, बल्कि ख़ास तोप थी जिसकी नली ३०० मीटर लम्बी थी?"

"यह तो और भी बुरी बात है," गेना ने शान्त भाव से आपत्ति की। "तुम्हारा बर्बिकेन और उसके दोस्त अगर उस तोप के गोले पर बैठते तो झुलसकर रह जाते। तुम मेरी बात पर यक़ीन नहीं करते? शायद तुम्हें फ़ांसीसी वैज्ञानिक रावर्ट एस्नोल्ट-पेल्टेरी पर भी विश्वास नहीं? उसने भी ज्यूलेस वेर्नस की किताब पढ़ी और हर चीज़ का हिसाब-किताब जोड़ा। उसने कहा कि ऐसी लम्बी नली से बहुत ही ज्यादा वेग-वर्द्धन हो जायेगा और गोले में बैठे हुए लोगों का वज़न पृथ्वी पर उनके वज़न की तुलना में हज़ारों गुना

अधिक हो जायेगा। तुम मेरी बात समझे? तुम्हारे उस क्लब के प्रधान के टोप का वज़न ही कई टन हो जायेगा और उसी के भार से उसका भुरकस निकल जायेगा!"

"असम्भव!" ल्यूबा ने विश्वास और अविश्वास करते हुए ऊंची आवाज़ में कहा।

"तुम्हारा मतलब है कि मैं झूठा हूं? या यह कि वैज्ञानिक झूठ बोलते हैं? तुम बुद्धू लड़की हो!" गेना को कोई और कड़ा शब्द नहीं सूझा। बुद्धू लड़की का चेहरा लटक गया।

फ़ांसीसी वैज्ञानिक रावर्ट एस्नोल्ट-पेल्टेरी के नाम ने विश्वास तो पैदा किया, मगर बोरीस ज्यूलेस वेर्नस का पक्ष-पोषण करने को उत्सुक था। चांद-सम्बन्धी उड़ान की सारी तफ़सीलों को याद करते हुए उसने गेना की दलीलों से उनकी तुलना की। आख़िर उसे एक बात मिल ही गई–

"पानी, पानी!" वह ऐसे चिल्लाया मानो कहीं रेगिस्तान में हो।

"क्या हुआ बोरीस?" ल्यूबा ने चिन्तित आवाज़ में पूछा। "क्या तुम बीमार हो?"

मगर बोरीस ने उसे परे हटा दिया।

"देखो," उसने जोश के साथ कहा, "मैं पानी के बारे में तो बिल्कुल भूल ही गया था। "वे गोले के फ़र्श पर लेटे हुए थे और फ़र्श के नीचे पानी था। पानी ने उनकी जान बचाई। इस तरह से हुआ था यह सारा क़िस्सा!"

"पानी का गद्दा? हां, यह सही है!" उसका विरोधी अप्रत्याशित ही सहमत हो गया। "सिर्फ़ इसी पर बहुत अधिक भरोसा करना ठीक नहीं होगा। उनकी मृत्यु तो हर हालत में लाज़िमी

है। मगर यह विचार सही है। त्सिओल्कोव्स्की ने भी यह माना है कि पानी आदमी को दबाव से बचा सकता है। अन्तरिक्ष-नाविक अगर पानी के टब में उड़ान करे तो वह जिन्दा रह सकेगा। कुल मिलाकर यह कि त्सिओल्कोव्स्की ने हर चीज़ का पहले से ही अनुमान लगा लिया था।"

"त्सिओल्कोव्स्की के सम्मान में ही तुम स्कूल में बहरे होने का ढोंग किया करते हो?" ल्यूबा ने मज़ाक़ उड़ाया।

गेना ने ऐसे ज़ाहिर किया मानो उसने कुछ सुना ही न हो।

"येफ़्रेमोव की किताब 'ऐन्ड्रोमेडा नीहारिका' में..." लड़कों में से एक ने कहना शुरू किया, मगर ल्यूबा अब यह बातचीत और बर्दाश्त न कर पाई।

"बहुत चर्चा हो चुकी अब येफ़्रेमोव और त्सिओल्कोव्स्की की! मेरे पांव बर्फ़ हो गये हैं!"

"अब हम भारहीनता का तजरबा और पैरों को गर्म करेंगे," गेना ने कहा। वह स्टाल के काउंटर पर खड़ा हुआ और उसकी छत पर चढ़ गया। उसके बाद बोरीस स्टाल की छत पर पहुंचा और उन्होंने मिलकर ल्यूबा को ऊपर खींच लिया।

"मैं सबसे पहले छलांग लगाऊंगी," डर से अपनी आंखों को फैलाते हुए ल्यूबा ने कहा और छलांग लगा दी।

"क्यों, क्या महसूस हुआ? भारहीनता अनुभव हुई?" गेना ने झुकते हुए पूछा।

नीचे, बर्फ़ के ढेर में, कोई इधर-उधर लुढ़कता हुआ छींक रहा था।

"मुझे लगता है कि मेरे घुटने पर चोट आ गई है।"

"ज़रा ठहरो! हम आ रहे हैं!" दोनों विवादी कूदे। वे भारहीनता को अनुभव किये बिना ही नीचे जा पहुंचे।

"यह ऊंचाई काफ़ी नहीं है," त्सिओल्कोव्स्की के प्रशंसक ने बात स्पष्ट की।

"हां! ऐसा ही है," ज्यूलेस वेर्नस के हिमायती ने सहमति प्रगट की।

ल्यूबा बर्फ़ के ढेर से बाहर निकल आई थी और धीरे-धीरे ड्योढ़ी की ओर बढ़ रही थी।

तारों को ताकनेवाले इत्मीनान से चबूतरे पर बैठ गये।

"ज्यूलेस वेर्नस ने भी भारहीनता का वर्णन किया है," बोरीस ने इस तरह से अपनी बात कही मानो बातचीत का सिलसिला जारी रहा हो। "ज़रा कल्पना करो! वे गोले में पानी में तैरनेवाली मछली की तरह तैरते रहे और डियाना नाम का कुत्ता उनके साथ रहा। फिर उन्होंने शराब पी। उन्होंने जामों को हवा में खड़ा किया और बोतल से उनमें शराब ढालकर पी।"

"और एक बूंद भी नहीं पी पाये," गेना ने मानो अपने आपसे बात करते हुए कहा।

"लो, तुमने फिर शुरू कर दिया मीन-मेख निकालना!" ल्यूबा गेना पर बिगड़ी।

"हां! उनके लिए एक बूंद भी पीना असम्भव होता," गेना ने ज़ोर देते हुए अपनी बात दोहराई। "शराब बोतल में से निकलकर बिखर गई होती, छोटे-छोटे क़तरों की शक्ल में फैलकर उनके नाक, कानों और आंखों में घुस गई होती। उनमें से हरेक

को खांसी आने लगती और वे छींकने लगते। इतना ही नहीं उन्हें निमोनिया तक हो गया होता। तुम्हारा बर्बिकेन यह नहीं जानता था कि भारहीनता की स्थिति में तरल पदार्थ गिलास में नहीं रह सकता। अगर मैं अध्यापक होता तो उसे फ़ेल कर देता।"

"मगर तुम भूल गये हो कि बर्बिकेन आज से सौ साल पहले हुआ था?" तोप के गोले के हिमायती ने कहा।

गेना ने घड़ी भर सोचा, टोपी को खींचकर माथे पर किया और अपने गणित के अध्यापक के अन्दाज़ में कहा–"मैं रिपोर्ट-बुक में लिख रहा हूं–छात्र बर्बिकेन को एक बहुत ही उचित कारणवश तरल पदार्थों पर भारहीनता के प्रभाव की जानकारी नहीं थी। बस, ख़तम।"

"मैं भी बहस बन्द करता हूं," बोरीस ने कहा, "अब तोप की बात ख़त्म होती है। वैसे ज्यूलेस वेर्नस को मैं अभी भी पसन्द करता हूं।"

"राकेट में उड़ान करो और तब तुम कोई भूल नहीं करोगे," गेना ने सुझाव दिया। "'कल्पना' राकेट कैसे सूरज पर पहुंचा? तुमने देखा? सारी दुनिया दम साधे हुए है। मगर त्सिओल्कोव्स्की ने इस चीज़ की पूर्वकल्पना कर ली थी। उसके सभी सूत्र उपयोगी सिद्ध हुए हैं। मेरे पिता का कहना है कि त्सिओल्कोव्स्की जेट-इंजन के सिद्धान्त के जनक थे। इसलिये तुम राकेट में बेधड़क उड़ान कर सकते हो!"

"यह कहना तो बहुत आसान है कि उड़ान कर सकते हो, मगर यह वहां खायेगा क्या?" ल्यूबा ने पूछा।

"क्या खायेगा? वह खायेगा मज़ेदार और महकते हुए केले। वे काच-गृह में उगाये जायेंगे। इसमें हंसने की कोई बात नहीं है! ख़ुद त्सिओल्कोव्स्की ने अन्तरिक्ष-यानों में काच-गृह बनाने का सुझाव दिया था। उन्होंने केलों का भी ज़िक्र किया है। जहां तक मेरा सवाल है, मैं तो क्लोरेला खाऊंगा। सुना कभी यह नाम? यह एककोष्ठीय घास है जो विटामिनों से भरपूर है। जानते हो यह कितनी तेज़ी से बढ़ती है? चौबीस घन्टे में हज़ार गुना बढ़ सकती है! मैं इसे घर पर उगा रहा हूं।"

"किस जगह?" श्रोता चिल्ला उठे।

"शीशे के बक्स में! मैं तुम्हें दिखा सकता हूं। चलो, मेरे घर!"

गेना की मेज़ एक छोटी सी प्रयोगशाला थी। सिर्फ़ प्रयोगशाला में ही इतने भभके, नलियां, सिलेंडर और दूसरी ऐसी बहुत सी चीज़ें मिल सकती हैं जिनका पहली नज़र में अर्थ समझना असम्भव होता है। भभके बहुत ही बुरे ढंग से गड्डमड्ड हुए पड़े थे। ल्यूबा का ध्यान फ़ौरन इस गड़बड़ की ओर गया। मगर गेना ने यह दलील पेश की कि

त्सिओल्कोव्स्की के अध्ययन-कक्ष में भी बहुत गड़बड़ रहती थी और वे कभी किसी को अपनी मेज़ से कोई चीज़ नहीं हिलाने देते थे।

"इस गड़बड़ में भी एक व्यवस्था है," उसने गर्व से कहा। "मैं अपनी ज़रूरत की कोई भी चीज़ फ़ौरन हासिल कर सकता हूं।"

क्लोरेला, अरुचिकर सी दिखाई देनेवाली हरे रंग की लप्सी जैसी थी। पारदर्शी प्लास्टिक से ढकी हुई वह शीशे के बक्स में तैर रही थी। मुड़ी हुई शीशे की एक नली ढक्कन में से बाहर निकली हुई थी। वह पानी के एक मर्त्तबान की ओर जाती थी जहां उसका सिरा एक भभके में रखा हुआ था। मेहमान जब इस अजीब से ढांचे को देख रहे थे तो गेना भागता हुआ रसोईघर में गया और एक सुलगती हुई चैली लेकर लौटा।

"मैं तुम्हें दिखाता हूं कि क्लोरेला क्या कमाल कर सकती है," भभके को लेते हुए और उसमें चैली रखते हुए उसने कहा। सुलगती हुई चैली एक स्थिर चिंगारी के रूप में जलने लगी।

"देखा तुमने? यह आॅक्सीजन है! इसे क्लोरेला ने बनाया है। यह जल-पौधे तो अन्तरिक्ष-नाविकों के लिये ख़ज़ाना हैं। इन्हें खाया भी जा सकता है। मैं इन्हें आज़माकर देख चुका हूं और मेरे ख़्याल में ये बुरे नहीं हैं... मगर तुम लोग बैठ जाओ, बुत बने क्यों खड़े हो? मैं तुम्हें पानी के टब में अन्तरिक्ष-नाविक की उड़ान का तजरबा करके दिखाऊंगा। मां!" गेना ने खुले दरवाज़े में से पुकारा, "मुझे एक अंडा दे जाओ!"

मां ने कोई जवाब न दिया।

"ज़रा ठहरो, मैं अभी आता हूं!" गेना इतना कहकर बाहर चला गया।

अगर मेहमान रसोईघर में जाकर देखते तो उन्हें यह देखने-सुनने को मिलता।

"मां, मुझे एक अंडा दो!"

"मैं कह चुकी हूं कि नहीं है।"

"मगर मैं जानता हूं कि है!"

"और मैं कह चुकी हूं कि नहीं है।"

"अगर यही बात है तो लो!" एक कुर्सी के सहारे गेना खुले दरवाज़े पर चढ़ गया। वह पेट के बल सेवईं की तरह दरवाज़े पर लटक गया। "जब तक अंडा नहीं दोगी मैं यहीं लटका रहूंगा," उसने चुनौती दी।

दरवाज़ा चरचराया। गेना की मां चुपचाप क्रीम फेंटती रही। गेना एक मर्द बच्चे की भांति हिम्मत से सिर नीचे की ओर किये हुए लटका रहा।

"घनचक्कर!" उसकी मां ने दुखी होते हुए कहा। "यह ले अंडा!"

गेना झटपट नीचे कूदा। अंडा, मग और नमकदानी लिये हुए झटपट लौटा। वह अस्तव्यस्त बालों के साथ अपने कमरे में आया, जहां उसके मित्र सब्र से उसका इन्तज़ार कर रहे थे। गेना ने बड़ी शान से उन्हें अंडा दिखाया।

"देखो! मैं पानी में नमक मिला रहा हूं। यह मग अन्तरिक्ष-नाविक का जल-कक्ष है," प्रयोगकर्त्ता ने समझाया। "अंडा, अन्तरिक्ष-नाविक है। मैं अन्तरिक्ष-नाविक को कक्ष में डाल देता हूं और..." गेना ने मग को ज़ोर से खिड़की के दासे पर पटका।

"ओह!" ल्यूबा चिल्ला उठी।

पानी के कुछ क़तरे फ़र्श पर गिर गये।

"ख़ुद अपने हाथों से छूकर तसल्ली कर लो। अन्तरिक्ष-नाविक सही-सलामत है। देख लो, छूकर," गेना ने सुझाव दिया।

बोरीस और ल्यूबा ने मग में झांका।

"ज़रा चटका भी नहीं," अंडे को घुमाते हुए बोरीस ने कहा। "तुम तो बिल्कुल प्रोफ़ेसर हो।"

"यह मेरे दिमाग़ की उपज नहीं है," गेना ने स्वीकार किया। यह त्सिओल्कोव्स्की का ही तजरबा है। अगर तुम अक्सर आया करोगे तो मैं तुम्हें कई ऐसी चीज़ें दिखा सकूंगा... आओ, हम फिर से दोस्त बन जायें," उसने अप्रत्याशित ही सुझाव पेश किया।

ल्यूबा के चेहरे पर ख़ुशी की सुर्ख़ी दौड़ गई। आख़िर वे दोस्त बन ही गये! वह कभी एक को और कभी दूसरे को देख रही थी। दोनों झेंप रहे थे और दोनों ख़ुश थे।

"और अब हम फिर कभी नहीं झगड़ेंगे," गेना कहता गया, "ठीक है न?"

"हां, ठीक है," बोरीस ने जवाब दिया।

"बिल्कुल ठीक है," गेना के हाथ में अपना हाथ रखते हुए ल्यूबा ने पुष्टि की।

... झन! बर्फ़ के टुकड़े दरवाज़े के पास गिर रहे थे। एक-एक करके मकान की सभी बत्तियां बुझ रही थीं। यह लो, वह हरी बत्ती भी टिमटिमाई और बुझ गई। उसने बुझते हुए सभी को यह सूचना दी कि बोरीस स्मेलोव बिस्तर में चला गया है।

झन! फिर ख़ामोशी छा गई। यह क्या है? यह बर्फ़ का टुकड़ा है जो नीचे गिरा है या मेज पर पड़ा कोई भभका टनटनाया है? गेना करातोव बिस्तर में लेटा हुआ करवटें बदल रहा था। वह जाग उठा और उसने देखा कि चीनी मान्दारीन वांग हू रेशमी पोशाक पहने हुए एक कुर्सी पर आगे-पीछे झूल रहा है। दो विराटकाय अज़दहे चुपचाप उसके पैरों के पास पड़े हुए हैं।

"तोप या राकेट, तोप या राकेट?" चीनी मान्दारीन ने एक ख़ुशमिज़ाज अजनबी की आवाज़ में उससे पूछा। जब वह झूलता था तो उसकी पतली सी चोटी हिलती-डुलती थी।

"राकेट, निश्चय ही राकेट," गेना कहना चाहता था, मगर उसके होंठ केवल फुसफुसाते हुए हिल-डुल रहे थे।

चीनी मान्दारीन अधिक ज़ोर से झूलने लगा और अज़दहे फूलने लगे। फिर उन्होंने वांग हू समेत कुर्सी को फ़र्श से ऊपर उठा लिया। झन! खिड़की सपाट खुल गई और अज़दहे उड़ गये। वांग हू का रेशमी लबादा सोने की तरह चमक रहा था। गेना ने बोरीस

के बॉबी को उसकी बाहों में पाया। "रुको, ज़रा रुको!" वह पूरे ज़ोर से चिल्लाया और उसकी आंख खुल गई।

कमरे में अन्धेरा था। कुर्सी अपनी जगह पर थी और बाहर हवा में हिलने-डुलनेवाली सड़क की बत्ती की एक सुनहरी किरण दीवार पर कांप रही थी। "ओह, यह तो सिर्फ़ सपना ही था," गेना ने राहत की सांस ली। "ख़ैर, जो भी हो हमें बॉबी को खोजना ही होगा।"

तीन ... दो ... उड़ाओ!

पिछले साल की सूखी हुई घास के कारण लाल-लाल नज़र आनेवाले मैदान के बीच राकेट एक सन्तरी की तरह खड़ा था। इसका तेज़ सिरा आकाश के नीले गुम्बज के केन्द्र की ओर निशाना साधे था। राकेट का ऊंचा झरोखा अपनी काली आंख से खुले मैदान, इधर-उधर दौड़-धूप करते हुए लोगों, राकेट के चिकने बदन के साथ-साथ ऊपर-नीचे आती-जाती लिफ़्ट और भद्दे ढंग से रेंगती हुई मोटर-गाड़ियों को देख रहा था।

सिर्फ़ एक व्यक्ति था जो न तो कोई काम कर रहा था और न जिसे किसी तरह की कोई उतावली थी। घुटने तक के बूट पहने और टांगों को चौड़ा किये हुए वह राकेट के काले झरोखे को देख रहा था।

यह डाक्टर द्रोनोव था। वह व्यस्त नहीं था, क्योंकि न तो वह इंजीनियर था और न मिस्त्री! इंजीनियर और मिस्त्री राकेट के इर्द-गिर्द दौड़ रहे थे, लिफ़्ट में ऊपर नीचे आते-जाते थे, इस या उस चीज़ की जांच करते थे और अपने हाथों से रची गई इस प्यारी चीज़ को हर तरफ़ से देख-परख रहे थे। डाक्टर अपनी बारी के इन्तज़ार में था। वह सिर्फ़ दर्शक ही नहीं था।

"साइक्लोप्स!" (एक आंख वाला विराटकाय यूनानी देवता) राकेट के रुपहले सिरे को प्रशंसा की दृष्टि से देखते हुए डाक्टर द्रोनोव ने सोचा। "ख़ूबसूरत काने देव! कितने हैं तुम्हारे जन्मदाता और तुम्हारी दाइयां! वैज्ञानिक अनगिनत दिनों और रातों तक तुम्हारे ही बारे में सोचते रहे हैं। इंजीनियरों और मिस्त्रियों ने तुम्हें काग़ज़ पर रचा, – रेखाचित्रों, तालिकाओं और आंकड़ों के रूप में। तुम्हारे विराट इस्पाती शरीर में अभी तक कामगारों के हाथों की गर्मी क़ायम है। तुम्हारा मज़बूत दिल जिसमें गड़गड़ानेवाले इंजन एक हज़ार दर्जे की गर्मी पैदा करेंगे, धातुकर्मियों की भट्ठियों में बनाया गया।

तुम्हारा रक्त, तुम्हें जीवन देनेवाला रक्त रसायनविज्ञों ने तुम्हारे शरीर में डाला। मगर ऐ महान देव! तुम उड़कर कहां जाते अगर तुम्हारे पास मस्तिष्क न होता? तुम समझ-बूझ रखनेवाले यन्त्रों और स्वसंचालित मशीनों के लिये भौतिकशास्त्रियों को धन्यवाद दो। हां! और अपनी यात्रा के समय गणितशास्त्रियों को कभी न भूलना – हर क़दम पर उन्होंने तुम्हें रास्ता दिखाया है।

"इतने अधिक हैं तुम्हारे जन्मदाता कि तुम उन सब को याद नहीं रख सकते। इतालवियों ने जब तुम्हें 'राकेट' का नाम दिया (उनकी भाषा में जिसका अर्थ साधारण पाइप है) तो उन्होंने कभी यह कल्पना तक नहीं की थी कि तुम इतने शक्तिशाली बन जाओगे। अब तो ख़ुद धरती भी हिल उठेगी और कांपेगी। ओ! शक्तिशाली राकेट, अब तुम पृथ्वी से उड़कर अन्तरिक्ष में पहुंचोगे और अपनी एक आंख से सितारों को देखोगे। ख़ूब!"

"वक़्त हो गया," किसी की आवाज़ ने डाक्टर द्रोनोव की विचार-श्रृंखला भंग कर दी। वसीली और वाल्या उसके क़रीब खड़े थे। वे कुत्तों को बांहों में उठाये हुए थे। वे प्रयोगशाला के सफ़ेद लबादे पहने थे। उन्होंने उसी समय उनके रक्त की जांच की थी, उन्हें तोला था, टेप पर उनकी नब्ज़ रिकार्ड की थी और उनका टेम्परेचर लिया था। तश्तरियों पर पट्टों से बांध दिये गये कटखना और पाल्मा कुत्ते शान्त थे। डाक्टर द्रोनोव को पहचानकर वे सिर्फ़ अपनी दुमें हिला रहे थे।

"मैं तैयार हूं," डाक्टर द्रोनोव ने जवाब दिया। वे राकेट की तरफ़ बढ़े।
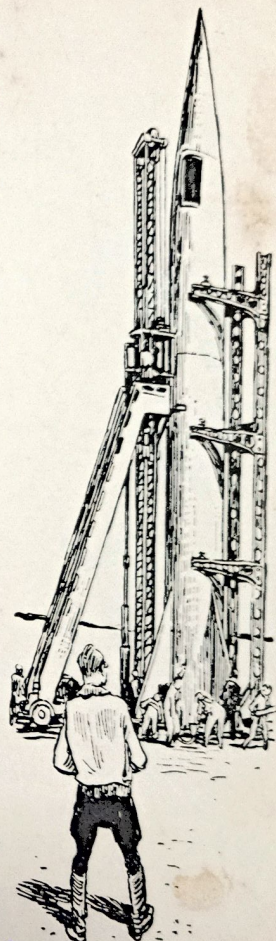
लिफ़्ट ऊपर जा रही थी। कुत्ते तेज़ी से दूर होती हुई घास की ओर देख रहे थे, मगर उनके साथ जानेवाले लोगों की नज़र ऊपर की ओर थी।

लिफ़्ट झरोखे के पास जाकर रुकी। डाक्टरों ने कुत्तों की तश्तरियों को राकेट के कैप्सूल के साथ बांध दिया। उन्होंने अन्तरिक्ष-नाविकों की पोशाक के नीचे से निकले हुए तारों को यन्त्रों से जोड़ दिया। केबिन को बहुत ध्यान से देखते हुए उन्होंने हर चीज़ की जांच की।

टोप के आकार से मिलते-जुलते इस कैप्सूल की अच्छी तरह से जांच करके उन्होंने इस बात की तसल्ली कर ली कि उसमें हर चीज़ ठीक-ठाक है। कैप्सूल के अन्दर एक अपनी ही छोटी सी दुनिया थी। वहां काच के तागे का तापावरोध था जिसे गर्मी से अन्तरिक्ष-नाविकों की रक्षा करने के लिये लगाया गया था। कारण कि उड़ान के दौरान राकेट का खोल चूल्हे पर उबलती हुई केतली की तरह गर्म हो जायेगा। सांस लेने के लिए वायुमिश्रित ऑक्सीजन के गुब्बारे की व्यवस्था की गयी थी। इसमें नियन्त्रण-यन्त्र थे, जो कुत्तों की स्थिति के बारे में पिक-अपों द्वारा दी जानेवाली सूचना को रिकार्ड करेंगे और रेडियो द्वारा प्रसारित करेंगे। वहां अन्तरिक्ष-यात्रियों का वफ़ादार साथी एक्सी-लेरोग्राफ़ भी विद्यमान था जिसकी उछलती हुई रेखा आकर्षण की अदृश्य शक्तियों के बारे में बतायेगी। यात्रियों के सिरों पर लटकनेवाला चलचित्र कैमरा पहले क्षण से अन्तिम क्षण तक चित्र लेगा। साथ ही वह घड़ी का चित्र भी खींचेगा और इस तरह डाक्टरों को यह मालूम हो जायेगा कि किस वक़्त हर चीज हुई और वे यन्त्रों के विवरण से फ़िल्म की तुलना कर सकेंगे।

सिर्फ़ पैराशूट दिखाई नहीं दे रहा था। वह कहीं फ़र्श के नीचे एक ठोस कैप्सूल में बन्द था। ज़रूरत होने पर वह खुल जायेगा।

"क्यों, क्या ख़्याल है इसके बारे में तुम्हारा?" डाक्टर द्रोनोव ने पूछा।

"मेरी समझ में तो बस कमाल ही है," वसीली ने जवाब दिया। "'तू-१०४' में उड़ान करने के समान है। हां तो परिचारिका अलविदा कहो।"

"विदा कटखने! विदा पाल्मा!" वाल्या ने कहा, "घबराओ नहीं, सब कुछ ठीक-ठाक होगा!"

"फिर मुलाक़ात होने तक!" पुरुषों ने कहा।

झरोखा बन्द कर दिया गया और उसमें झांकने के लिये सिर्फ़ एक तश्तरी के बराबर सूराख़ रह गया। वाल्या, डाक्टर द्रोनोव और वसीली ने बारी-बारी से अन्दर झांककर देखा। फिर वे लिफ़्ट से नीचे आये और उस सूराख़ में सिर्फ़ नीला आकाश ही दिखाई देता रह गया।

कुत्ते एक दूसरे की बग़ल में अपनी-अपनी तश्तरियों पर लेटे हुए थे। कटखना शान्त भाव से इधर-उधर देख रहा था। पाल्मा अन्यमनस्क सा प्रतीत हो रहा था। वह बराबर जम्हाइयां ले रहा था। वे काफ़ी समय तक ऐसे ही लेटे रहे और उन्हें इस बात का आभास तक भी न हुआ कि जिस महत्वपूर्ण कार्य के लिए उन्हें इतने अधिक समय तक तैयार किया गया था, उसका अब आरंभ हो चुका था। यन्त्र अपनी रिपोर्टें तैयार कर रहे थे, गुब्बारे में से हवा आ रही थी और चलचित्र कैमरा धीरे-धीरे घरघराता हुआ घूम रहा था।

राकेट के इर्द-गिर्द का मैदान सुनसान हो गया। सभी लोग सीमेन्ट की सीढ़ियां उतरकर पनाहगाह में पहुंच गये, जिसके ऊपर स्टीरियोस्कोप के शीशे चमक रहे थे। मिस्त्री सबसे बाद में वहां से हटे।

पनाहगाह में काफ़ी भीड़ हो गई। मगर डाक्टर द्रोनोव ने सोचा – "कितना अच्छा होता अगर बाक़ी सब लोग भी अपने लबादे, चोग़े और काम की पोशाक पहने हुए यहां आ जाते। काश कि वे अपने ख़रादों, भट्टियों, भभकों और प्रारूपों की मेज़ों से घड़ी भर के लिए ही यह देखने के लिये यहां आ जाते कि उनके हाथों ने किस चीज़ की रचना की है, ताकि उनके थके-हारे चेहरे मुस्कान से जगमगा उठते! नहीं, वे नहीं आयेंगे, वे बहुत व्यस्त हैं। उन्हें अन्य चीज़ों की रचना करनी है..."
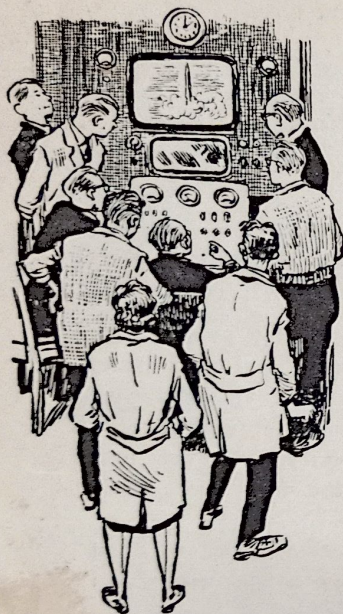
तैयारी की घड़ी समाप्त होने को थी। इंजीनियर अपनी-अपनी जगह यन्त्रों के पैनलों पर बैठे थे। उनके चेहरे शान्त थे। वे कमांडर द्वारा बटन दबाये जाने की प्रतीक्षा में थे जो उड़ान का संकेत देगा।

सभी की आंखें कमांडर पर जमी हुई थीं। सब ख़ामोश थे। गहरा सन्नाटा था। अपनी लम्बी सूई से सिर्फ़ घड़ी ही हर बीतते हुए सेकंड की सूचना दे रही थी।

वसीली नहीं समझ पा रहा था कि कमांडर उत्तेजित क्यों नहीं था। घुटा हुआ सिर, भारी-भरकम शरीर और नर्म कपड़े की साधारण जाकेट – यह था कमांडर! वसीली को स्कूल के गणित के अध्यापक की याद हो आई। उसका गणित का अध्यापक हमेशा धीर-गम्भीर रहता, परीक्षा के दिनों तक में भी जब कि श्रेणी के सभी विद्यार्थी उत्तेजित होते। अध्यापक की बात तो फिर भी समझ में आ सकती थी, लेकिन यह अविचल कमांडर – उसे भला कैसे यह विश्वास हो सकता था कि राकेट में कोई गड़बड़ी नहीं होगी?

"तैयार हो जाओ!" कमांडर ने आदेश दिया और ऊपर से नीचे की ओर गिनने लगा – "पांच... चार... तीन... दो... उड़ाओ!"

दर्शकों ने टेलीविज़न के चित्रपट पर देखा कि एक तेज़ प्रकाश ने राकेट को नीचे से जगमगा दिया और धुएं के बादल ने उसके ढांचे को घेर लिया। अगले क्षण पनाहगाह के दरवाज़े पर ज़ोर का धमाका सुनाई दिया।

धीरे-धीरे, मानो कुछ सोचते हुए, राकेट धुएं के बादल से ऊपर उठा, उसने चिंगारियों की

बरसात सी की, पृथ्वी की ओर गुलाबी रंग की उजली गैसों का बादल छोड़ा और आकाश की ओर उड़ चला। हर घड़ी उसकी रफ़्तार तेज़ होती गई। सुनहरे प्रकाश की कौंध के साथ वह चमकते हुए एक छोटे से बिन्दु में बदल गया।

इसी क्षण वसीली को अपने यन्त्रों का ध्यान आया और वह उनकी ओर बढ़ा, मगर बहुत से लोग उसके रास्ते में खड़े हुए थे। शक्तिशाली राकेट के सेवक – कामगार, मिस्त्री और इंजीनियर – रजतपट के गिर्द घेरा डालकर खड़े थे और उनकी दृष्टि उछलती हुई हरी रेखा पर जमी थी। उछलती हुई रोशनी क्या कह रही थी, यह कोई नहीं समझ सकता था, मगर फिर भी वे उसे ध्यान से देख रहे थे क्योंकि वह मुसाफ़िरों की कहानी कह रही थी।

लोगों के पैरों पर अपने पैर रखते और क्षमा-याचना करते हुए वसीली यन्त्रों की ओर बढ़ा। वाल्या उसे जल्दी करने को कह रही थी। वह तो निराशा से रुआंसी सी हुई जा रही थी। संस्थान में यन्त्रों की भाषा समझने और परीक्षा देने का भला क्या लाभ था यदि अब वह अपनी आंखों से कुछ न देख पाई? बेशक यह सही है कि यन्त्र टेप पर सारी तफ़सीलें लिखेंगे, वह उस टेप को बार-बार पढ़ेगी, मगर फिर भी उसने किया था बुद्धूपन ही! डा० द्रोनोव की बात ही दूसरी थी – उसने अनुमान लगा लिया था कि बाद में क्या स्थिति होगी और इसलिये वह पहले से ही अपनी जगह पर जा बैठा था।

आख़िर वाल्या और वसीली रजतपट के क़रीब पहुंचे।

राकेट में अन्तरिक्ष-नाविकों को अचानक ज़ोर की गड़गड़ाहट सुनाई दी। उन्होंने अपना सिर इधर-उधर घुमाया और यह समझने की कोशिश की कि यह अजीब और भयभीत करनेवाला शोर कहां से आ रहा था। वे नहीं जानते थे कि यह उनकी उड़ान का मधुर संगीत था, कि वे उड़ान कर रहे थे!

सीधी उड़ान करता हुआ राकेट केप्सूल को अधिकाधिक ऊपर लिये जा रहा था। उसने पक्षियों के मार्गों को, सबसे ऊंची चोटियों को और जेट हवाई जहाज़ों की उड़ान की ऊंचाई को नीचे छोड़ा, बादलों के बीच से गुज़रकर स्ट्रैटोस्फ़ीयर की ऊपरी तहों में पहुंचा जहां उल्कायें टूटते हुए तारों की भांति चमक रही थीं और जहां प्रखर उत्तरीय प्रकाश उसी प्रकार आम चीज़ थे, जैसे कि सड़कों पर नियान की बत्तियां। इन आकर्षक प्रदेशों में भी राकेट रुका नहीं, बल्कि उसने उस ऊंचाई की ओर अपना सफ़र जारी रखा जहां हवा के बजाय सिर्फ़ गैस के अदृश्य अणु थे और जहां हमारे मुसाफ़िर आन की आन में ख़त्म हो जाते, अगर हवा-रोक केबिन उनकी रक्षा न करता।

बहुत दुख की बात थी कि कटखना और पाल्मा गोल झरोखे से बाहर नहीं झांक सकते थे। शुरू में कम्पन ने उन्हें झकझोरा और फिर अदृश्य शक्तियों ने उनके सिरों को बिल्कुल नीचे चिपका दिया और वे उनपर जमकर बैठ गईं। उनकी छातियां सिकुड़ गईं, उनके दिल ज़ोरों से धड़कने लगे और उन्हें ऐसे महसूस हुआ, मानो उनके भीतर सीसा भरा हुआ था। मगर वे डरे नहीं, चुपचाप लेटे रहे। अचानक इंजन बन्द हो गये...

कल्पना कीजिये कि आप अप्रत्याशित ही एक गुब्बारे की तरह छत तक उड़ने लगते हैं। घड़ी भर पहले आप फ़र्श पर थे और अब अचानक हवा में तैरने लगते हैं।

हमारे यात्रियों के साथ बिल्कुल ऐसा ही हुआ। उनका तो मानो दम निकल गया। यह तो बिल्कुल ऐसे था मानो कोई शक्तिशाली हाथ उन्हें धीरे से ऊपर उठाये हुए हो। वे अपने सिरों, पंजों या पूंछों को अनुभव नहीं कर सकते थे। वे पंखों से भी अधिक हल्के हो गये थे। अगर पेटियां न होतीं तो वे पक्षियों की भांति उड़ने लगते।

बहुत ही अद्भुत अनुभूति थी यह! सिर्फ़ सपनों में ही ऐसा अनुभव होता है।

इस अद्भुत स्थिति से कटखने का मन खिल उठा और उसकी आंखें ख़ुशी से चमकने लगीं। उसने झरोखे के सूराख़ पर नज़र डाली। उसे काला-स्याह आकाश और चकाचौंध करता हुआ चमकदार सूर्य दिखाई दिया। यह दृश्य बहुत ही सुन्दर भी था और भयानक भी।

तब कटखने ने केबिन में इधर-उधर नज़र दौड़ाई और पाया कि सूरज की एक किरण सूराख़ में से

झांक रही थी। वह सामने वाली दीवार पर प्रतिबिम्बित होकर रोशनी का एक चक्र सा बना रही थी। यह चक्र कुछ देर तक एक ही जगह पर टिका रहा, फिर दीवार से नीचे कूदा और कटखने की बायीं आंख पर पड़ा। कटखने ने आंख मिचमिचाई, गुर्राया और सिर झटका। जब उसने आंखें खोलीं तो रोशनी का यह चक्र छत पर पहुंच चुका था। मगर वहां भी वह इतमीनान से नहीं बैठा और जहां-तहां कूदने-फांदने लगा।

कटखने की आंखें सिकुड़कर छोटे-छोटे सूराख़ों जैसी हो गईं, उसकी दुम ख़ुशी से हिलने-डुलने लगी और उसके गले से ठहाके से मिलती-जुलती छोटी-छोटी आवाज़ें सुनाई देने लगीं।

कटखना पूरे उत्साह के साथ इस खेल का मज़ा लेने लगा, मगर वह रोशनी के चक्र के खिलवाड़ का अर्थ नहीं समझ पा रहा था। अगर कोई इन्सान वहां होता तो वह समझ जाता कि यह चक्र संयोगवश ही दीवार से छत की ओर नहीं उछल रहा था। भारहीनता की स्थिति में अन्तरिक्ष-नाविक को "ऊपर" और "नीचे" का पता नहीं चलता। वह लटकने सा लगता है और उड़ान की गति को अनुभव नहीं करता। मगर सूरज की किरण उसे बताती है: "तुम्हारे राकेट के इंजन बन्द हो चुके हैं। पहले वह ऊपर की ओर उड़ रहा था, फिर गतिहीन हुआ, उसने मुंह नीचे की ओर किया और अब वह पृथ्वी की ओर जा रहा था। अब वह वातावरण की ठोस तहों में प्रवेश करेगा।. सावधान! सावधान!"

प्रतिबिम्ब सही सूचना दे रहा था। राकेट एक विराट अर्धचक्र बनाते हुए मुड़ा, उसके कई पहलू सूर्य के प्रकाश के सामने हुए। अपनी धुरी के गिर्द घूमता हुआ वह नीचे उतरने लगा।

पृथ्वी पर बैठे हुए डाक्टर भी जानते थे कि अब सबसे अधिक ख़तरनाक द्वन्द्वयुद्ध होगा। लौटते समय राकेट को जटिल घुमाव-फेर के बीच से गुज़रना पड़ता है और वह हवा में, पहाड़ी से नीचे लुढ़कते हुए पीपे की तरह नीचे आता है। राकेट के यात्रियों के लिये तो यह अवश्य ही बहुत भयानक अनुभव होगा।

काश कि पैराशूट जल्दी से खुल जायें!

सचमुच ऐसा ही हुआ। मानो किसी गुप्त संकेत के अनुसार अदृश्य शक्तियों ने कटखने और पाल्मा पर धावा बोला और वे बड़ी बेरहमी से उनकी पिटाई करने लगीं। उनकी सांस फ़ूल गई थी, उनकी पीठों में दर्द हो रहा था और उनके शरीर को कोई मानो भीतर से निचोड़ता जा रहा था। सिरों पर पड़नेवाले मुक्कों के कारण उनकी आंखों के सामने हर चीज़ स्याह हो गई। पीठ पर पड़नेवाली चोटों से ख़ून सिरों की ओर तेज़ी से दौड़ने

लगा और उनकी आंखों के सामने एक लाल फ़िल्म उभरी। ऐसा लगता था कि कुत्तों ने भारहीनता की स्थिति के समय ख़ुशी के जो कुछ क्षण बिताये थे, गुरुत्वाकर्षण की दुष्ट शक्तियां अब उनसे उसका बदला ले रही थीं।

कटखने और पाल्मा ने उस समय भी सब कुछ सहन किया जब भावनाहीन यन्त्र इन झटकों को बर्दाश्त न कर सके और उन्होंने विवरण रिकार्ड करना बन्द कर दिया।

डाक्टर पनाहगाह से बाहर दौड़े। बाक़ी लोग भी उनके पीछे-पीछे भागे। हर कोई साफ़ और शान्त आकाश में आंखें गड़ाये था। उनकी आंखें दर्द करने लगी थीं। वे गिरते हुए राकेट को खोज रहे थे जो कहीं नज़र नहीं आ रहा था।

उनकी कनपटियां बज रही थीं। कहां, कहां गया राकेट?

नीले आकाश में धुएं की एक पतली सी रेखा दिखाई दी। यह राकेट के अंगारे की तरह तपते हुए शिखर का मुश्किल से दिखाई देनेवाला चिन्ह था। वह दिखाई दिया और फिर ओझल हो गया और आकाश नीचे के मैदान की भांति ख़ाली रह गया।

फिर गोली की तेज़ी के साथ ऊंचाई पर एक सफ़ेद रूमाल फड़फड़ाया। यह ग़ायब नहीं हुआ, बल्कि धीरे-धीरे एक सफ़ेद पाल के रूप में फैलता और धीरे-धीरे पृथ्वी की ओर आता गया। पैराशूट के गोल गुम्बज और उसके मूल्यवान भार – राकेट के तिकोने सिरे – की रूपरेखायें अधिकाधिक स्पष्ट होती गईं।

सूरज चमक रहा था और नीरवता का साम्राज्य था। सिर्फ़ दूर आकाश में ही कोई भरद्वाज पक्षी चहक रहा था।

सभी लोग मानो पहले से निश्चित किये संकेत के अनुसार मैदान की ओर दौड़े। सबसे आगे-आगे डाक्टर थे और उनके सफ़ेद लबादे पंखों की तरह फैले हुए थे।

वे तेज़ी से पैराशूट की ओर दौड़ रहे थे।

कारें होर्न बजाती हुई दौड़नेवालों को पीछे छोड़ती जा रही थीं। कुछ लोग कूदकर उनमें बैठ गये, बाक़ियों ने हाथ हिला दिया और अपनी टांगों पर ही अधिक विश्वास किया।

इंजीनियर पैराशूट को समेटने के लिये दौड़े। डाक्टर द्रोनोव और वसीली ने यह जानने के लिये एक साथ झरोखे में से झांका कि कुत्ते ज़िन्दा हैं या नहीं।

"क्या वे ज़िन्दा हैं?" वाल्या ने परेशान होते और बेसब्री से अपना पैर पटकते हुए पूछा। "भगवान के लिये बताओ तो!"

डाक्टरों ने जवाब नहीं दिया। उन्होंने झटपट झरोखे को खोला, उन तश्तरियों को बाहर निकाला जिन पर कुत्ते बंधे हुए थे और पट्टे खोले।

"हुर्रा! वे ज़िन्दा हैं, ज़िन्दा हैं!" वाल्या चिल्लाई और उसने किसी का कन्धा ज़ोर से हिलाया, शायद किसी इंजीनियर का। "हुर्रा साथियो!"

वह जिस इंजीनियर का कन्धा हिला रही थी वह उकड़ूं बैठा हुआ राकेट पर अपना हाथ फेर रहा था। ज़ाहिर था कि उसे अन्य किसी चीज़ की सुधबुध नहीं थी। उसने वाल्या की बात नहीं सुनी थी और वह हतप्रभ सा आंखें झपका रहा था।

"अजीब आदमी है," वाल्या ने बिगड़ते हुए कहा, "वे ज़िन्दा हैं, सब कुछ ठीक-ठाक है।"

"हां, बेशक! बहुत अच्छी बात है!" आख़िर इंजीनियर ने कहा। वह उठकर खड़ा हुआ। "बधाई!" उसने वाल्या और फिर डाक्टरों से हाथ

"वह भला कैसे?" वाल्या हैरान रह गयी।

"यह तो बहुत सीधी-सादी बात है," डा० द्रोनोव ने कहा।

"एक-दूसरे को ध्यान से देखो! नाक पर बुन्दकियां सी देखते हो? मेरे प्यारे युवा मित्रो, मैं इन्हीं की चर्चा कर रहा हूं। ये झाइयां हैं! ये वसन्त (यौवन) की निशानी हैं! वैसे भी आजकल वसन्त है!" उसने खिड़की की ओर संकेत किया।

उनकी मोटर नगर में से गुज़री। नगर धूप में नहाया हुआ था, प्रकाश में डूबा हुआ था। पटरी पर छोटे-छोटे बालक पानी से भरे गढ़ों के ऊपर से कूद रहे थे। हर गढ़े में सूरज की छाया प्रतिबिम्बित हो रही थी। हर चीज़ चमक रही थी, जगमगा रही थी, लोग धूप के कारण आंखें मिचमिचा रहे थे। ऐसा लगता था मानो किसी साहसी चित्रकार ने अपनी तूलिका के एक ही झटके से नीले आकाश की पृष्ठभूमि में क्रेनों की छायाकृति बना दी हो।

आधे घण्टे बाद डाक्टर प्रोफ़ेसर के सामने बैठे हुए थे। डा० द्रोनोव ने विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा—

"कुत्ते २१२ किलोमीटर की ऊंचाई तक गये। उड़ान के सक्रिय भाग में उनकी नब्ज़, सांस की गति और रक्त-चाप सामान्य से अधिक रहे। भारहीनता के समय ये सब क्रमिक ढंग से नीचे आये, मगर प्रयोगशाला की तुलना में धीरे-धीरे। स्पष्ट है कि भारहीनता ने कुत्तों को आश्चर्यचकित कर दिया था।"

"उड़ान के सम्बन्ध में तुम्हारी क्या राय है?" प्रोफ़ेसर ने पूछा।

"मुझे ऐसा लगता है कि उतरते समय परिस्पन्दन निर्विघ्न नहीं था। हमारे पास इसका रेकार्ड नहीं है। यन्त्रों ने काम करना बन्द कर दिया था। रूपांकनकारों को कैप्सूल के वापस आने की विधि में अवश्य सुधार करना चाहिये। अगर वे हवाई स्प्रिंग या ऐसी ही कोई चीज़ अथवा बिजली से चलने वाला केबिन बना दें जो कैप्सूल को सीधा रखे तो बहुत अच्छा रहे।"

"हमें आशा करनी चाहिए कि वे ऐसी कोई न कोई व्यवस्था कर देंगे," प्रोफ़ेसर ने कहा। "आपके विचार मूल्यवान हैं। हम अवश्य ही रूपांकनकारों को इनके बारे में बतायेंगे... कुत्तों को कोई खराश या खरोंच तो नहीं आई?"

"नहीं। आपको यह जानकर ख़ुशी होगी कि कटखना तो बड़ा ही मज़बूत निकला है," डाक्टर द्रोनोव ने मुस्कराकर कहा। "हमने उसका नाम बदलकर दिलेर कर दिया है। आपका क्या ख़याल है इसके बारे में?"

"संस्थान में इसके लिए कोई ख़ास फ़रमान जारी नहीं किया जायेगा," प्रोफ़ेसर ने मज़ाक करते हुए कहा, "पर यदि वह ऐसे नाम के योग्य है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।

निश्चय ही उसका नया नाम अधिक अच्छा लगता है। पत्रकारों के लिये भी दिलचस्प है। सम्वाददाता हर दिन इस नई मशहूर हस्ती को देखने के लिये यहां आते हैं। उन्होंने तो हमपर ऐसे धावा बोल दिया है कि काम करना मुश्किल हो गया है। और तो टेलिविज़न फ़िल्म भी बना रहे हैं। मैं चाहता हूं कि आप सभी उनकी सहायता करें या कम से कम वसीली तो जरूर ही उन्हें मदद दें।"

इस बातचीत के फ़ौरन बाद स्वेड की पीली जाकेट और [illegible] का टोप पहने हुए एक अजनबी वसीली के पास आया।

"आप ही अभी-अभी अन्तरिक्ष-यान से लौटे हैं?" उसने पूछा। "आपसे मिलकर ख़ुशी हुई। मेरा नाम कुलीक है। मैं कैमरामैन हूं। हो सकता है आपने मेरा नाम सुना हो। हमें आपकी मदद की जरूरत है। कहां हैं आपके कुत्ते? आप निश्चय ही हमारी मदद करेंगे!"

इस आदमी का बातचीत का अन्दाज बहुत ही बेतकल्लुफ़ था। वह अपने सवालों को भी कुछ ऐसे आकर्षक ढंग से पेश करता था कि उसकी मदद न करना असम्भव था।

वसीली कुत्तों को लाया। एक दिन पहले के परीक्षण-हवाबाज़ अब आराम से टहल रहे थे, खुश, मकान के कोनों और रास्तों को सूंघ रहे थे।

"आज्ञाकारी जानवरों के साथ काम करके ख़ुशी होती है," अपने कैमरे को ठीक करते हुए कुलीक ने कहा। "एक बार मुझे याल्टा में एक बन्दरी की फ़िल्म बनानी पड़ी। आप कल्पना नहीं कर सकते कि मुझे कितनी मुसीबत का सामना करना पड़ा। बन्दरी बहुत ही बदमिज़ाज थी। वह मेरे कैमरे की आवाज सुनकर चिढ़ उठती और हर घड़ी मुझे ऐसे लगता कि अब उसने मेरी नाक नोची, कि अब नोची। फिर भी वह तो [illegible] वह बन्दरी बड़ी बुद्धिमान थी।"

"मैंने आपकी वह फ़िल्म देखी थी," वसीली ने कहा। "अगर मैं भूलता नहीं तो उस फ़िल्म का नाम था 'रेना अन्तरिक्ष में'। फ़िल्म मुझे बहुत पसन्द आई थी। फ़िल्म देखकर ऐसा महसूस होता था कि बन्दर सचमुच ही अन्तरिक्ष में चौकड़ियां भर सकते हैं।"

"ख़याल तो मेरा भी ऐसा ही है, मगर उस फ़िल्म के बाद तो बन्दर मुझे कभी नहीं सुहाते," कुलीक ने अपने मन की बात कही। "मैं खुश हूं कि आप कुत्तों से काम लेते हैं। सुनने में आया है कि अमरीकी लोग बन्दरों को पकड़कर उन्हें [illegible] के लिए भेज रहे हैं।"

"हां, वे बन्दरों को तरजीह देते हैं।"

"मैं कल्पना कर सकता हूं कि उन बेचारों को कितनी परेशानी का सामना करना पड़ता होगा!"

"बन्दरों को सधाना अधिक मुश्किल है," वसीली ने सहमति प्रगट की। "बन्दरों का रक्त-चाप मापने के लिए उन्हें गतिशील दीवारों वाले पिंजरे में बन्द करना पड़ता है। वरना वे यन्त्र ही तोड़ देते हैं। आपने ठीक कहा है कि उनका पारा बहुत जल्द गर्म हो जाता है और वे घबरा भी बहुत जल्दी जाते हैं। कई बार जहाज़ के भोंपू की ऊंची आवाज़ सुनकर कई चिंपैंज़ियों की मृत्यु तक हो गई है।"

"हमारे चिकित्साशास्त्रियों ने प्रयोग के लिए दूसरे जानवर चुनकर अच्छा ही किया," कैमरामैन ने अपनी बात ख़तम करते हुए कहा। "कृपया कुत्तों को बुलाइये।"

कुत्ते आदेश पाकर दौड़ते हुए आये।

"यह दिलेर है," वसीली ने कहा "और यह काले कानों वाला पाल्मा है।"

"हैलो," कुलीक ने कहा और अपना कैमरा उठाया। "हां तो, ये अभी-अभी अन्तरिक्ष से लौटे हैं। ये क्या कुछ करते हैं? क्या ख़ुशी से उछलते-कूदते हैं? इनसे कहिये उछलें-कूदें!"

"देखिये, बुरा नहीं मानियेगा," वसीली ने कहा, "ये सर्कस के कुत्ते नहीं हैं। मगर दिलेर तो पृथ्वी पर आकर सचमुच बहुत उछला-कूदा था जब कि पाल्मा बहुत देर तक अपने को संभाल नहीं पाया था और हर चीज़ के प्रति पूरी तरह उदासीन रहा था।"

"हमें भावनाओं की ज़रूरत है!" कुलीक ने ज़ोर देकर कहा। "अच्छा हो यदि ये दोनों उछलें-

कूदें, वरना फ़िल्म नीरस हो जायेगी। मुझे आपकी मदद की ज़रूरत है।"

"मैं कोशिश करता हूं," वसीली ने अनमने मन से कहा। "कटखने, पाल्मा, इधर आओ!"

"कटखना कौनसा है?" कुलीक के कान खड़े हुए।

"आप घबरायें नहीं," वसीली ने उसे विश्वास दिलाया। "दिलेर का पहले यही नाम था। वह अभी तक अपने नये नाम का आदी नहीं हुआ।"

शुरू में तो कुत्तों की समझ में नहीं आया कि उनसे किस चीज़ की मांग की जा रही है और हतप्रभ से अपनी पिछली टांगों पर खड़े रहे। फिर वे ज़रा रंग में आ गये। इधर-उधर भागने और उछलने-कूदने लगे। मगर पृथ्वी पर लौटकर घास को देखकर कटखना जैसे ख़ुश होकर नाचा था वैसी बात अब नहीं बनी थी। ज़ाहिर था कि कैमरामैन को चित्र लेकर बहुत ख़ुशी नहीं हुई थी। मगर वह कुत्तों की तारीफ़ और बन्दरों की भर्त्सना करता रहा।

अगली सुबह को कुलीक हड़बड़ाया हुआ आया और लगा शोर मचाने –

"आपने ऐसे क़ीमती हीरे को क्यों छिपाये रखा? नमस्ते, नमस्ते! वह तो अच्छा-ख़ासा अभिनेता है! आप समझ गये न?"

"आप किसकी बात कर रहे हैं?" वसीली समझ नहीं पाया था।

"मेरे साथ आइये! हमारी फ़िल्म के लिए इसे सधाने का एक पाठ हो जाये! मैं एक बहुत बढ़िया चलचित्र बनाना चाहता हूं। मुझे यक़ीन है कि वह सफल रहेगा।"

आपत्ति करना असम्भव था। वह डाक्टर को अपने पीछे-पीछे उसी तरह खींच ले गया जैसे कि जलपोत नाव को खींच ले जाता है। रास्ते भर वह अपनी खोज की ख़ूब बढ़ा-चढ़ाकर चर्चा करता रहा। मगर वसीली नहीं समझ पा रहा था कि वह किसका ज़िक्र कर रहा है। आख़िर कुलीक उस पिंजरे के सामने जाकर खड़ा हो गया जिसमें कोज़्याव्का इधर-उधर उछल-कूद रहा था।

"यह रहा," उसने बहुत शान से कहा, "यह फ़िल्म को मशहूर कर देगा। ज़रा इसे ध्यान से देखिये तो सही – कहिये है न फ़िल्म-अभिनेता! इसके बारे में दो रायें नहीं हो सकतीं।"

उस दिन से कुलीक जोश के साथ काम करने लगा। वह हर सुबह निश्चित समय पर संस्थान में आ जाता। वह डाक्टरों से कहता कि वे अपने काम में लगे रहें और उसकी तरफ़ कोई ध्यान न दें, मगर वास्तव में वह हर किसी के काम में ख़लल डालता। वह अपने

8—3955

"मैं कल्पना कर सकता हूं कि उन बेचारों को कितनी परेशानी का सामना करना पड़ता होगा!"

"बन्दरों को सधाना अधिक मुश्किल है," वसीली ने सहमति प्रगट की। "बन्दरों का रक्त-चाप मापने के लिए उन्हें गतिशील दीवारों वाले पिंजरे में बन्द करना पड़ता है। वरना वे यन्त्र ही तोड़ देते हैं। आपने ठीक कहा है कि उनका पारा बहुत जल्द गर्म हो जाता है और वे घबरा भी बहुत जल्दी जाते हैं। कई बार जहाज़ के भोंपू की ऊंची आवाज़ सुनकर कई चिंपैंज़ियों की मृत्यु तक हो गई है।"

"हमारे चिकित्साशास्त्रियों ने प्रयोग के लिए दूसरे जानवर चुनकर अच्छा ही किया," कैमरामैन ने अपनी बात ख़तम करते हुए कहा। "कृपया कुत्तों को बुलाइये।"

[illegible]ने आदेश पाकर दौड़ते हुए आये।

"यह दिलेर है," वसीली ने कहा "और यह काले कानों वाला पालमा है ।"

"हैलो," कुलीक ने कहा और अपना कैमरा उठाया। "हां तो, ये अभी-अभी अन्तरिक्ष से लौटे हैं। ये क्या कुछ करते हैं? क्या ख़ुशी से उछलते-कूदते हैं? इनसे कहिये उछलें-कूदें!"

"देखिये, बुरा नहीं मानियेगा," वसीली ने कहा, "ये सर्कस के कुत्ते नहीं हैं। मगर दिलेर तो पृथ्वी पर आकर सचमुच बहुत उछला-कूदा था जब कि पालमा बहुत देर तक अपने को संभाल नहीं पाया था और हर चीज़ के प्रति पूरी तरह उदासीन रहा था।"

"हमें भावनाओं की ज़रूरत है!" कुलीक ने ज़ोर देकर कहा। "अच्छा हो यदि ये दोनों उछलें-

कूदें, वरना फ़िल्म नीरस हो जायेगी। मुझे आपकी मदद की ज़रूरत है।"

"मैं कोशिश करता हूं," वसीली ने अनमने मन से कहा। "कटखने, पालमा, इधर आओ!"

"कटखना कौनसा है?" कुलीक के कान खड़े हुए।

"आप घबरायें नहीं," वसीली ने उसे विश्वास दिलाया। "दिलेर का पहले यही नाम था। वह अभी तक अपने नये नाम का आदी नहीं हुआ।"

शुरू में तो कुत्तों की समझ में नहीं आया कि उनसे किस चीज़ की मांग की जा रही है और हतप्रभ से अपनी पिछली टांगों पर खड़े रहे। फिर वे ज़रा रंग में आ गये। इधर-उधर भागने और उछलने-कूदने लगे। मगर पृथ्वी पर लौटकर घास को देखकर कटखना जैसे ख़ुश होकर नाचा था वैसी बात अब नहीं बनी थी। ज़ाहिर था कि कैमरामैन को चित्र लेकर बहुत ख़ुशी नहीं हुई थी। मगर वह कुत्तों की तारीफ़ और बन्दरों की भर्त्सना करता रहा।

अगली सुबह को कुलीक हड़बड़ाया हुआ आया और लगा शोर मचाने—

"आपने ऐसे क़ीमती हीरे को क्यों छिपाये रखा? नमस्ते, नमस्ते! वह तो अच्छा-ख़ासा अभिनेता है! आप समझ गये न?"

"आप किसकी बात कर रहे हैं?" वसीली समझ नहीं पाया था।

"मेरे साथ आइये! हमारी फ़िल्म के लिए इसे सधाने का एक पाठ हो जाये! मैं एक बहुत बढ़िया चलचित्र बनाना चाहता हूं। मुझे यक़ीन है कि वह सफल रहेगा।"

आपत्ति करना असम्भव था। वह डाक्टर को अपने पीछे-पीछे उसी तरह खींच ले गया जैसे कि जलपोत नाव को खींच ले जाता है। रास्ते भर वह अपनी खोज की ख़ूब बढ़ा-चढ़ाकर चर्चा करता रहा। मगर वसीली नहीं समझ पा रहा था कि वह किसका ज़िक्र कर रहा है। आख़िर कुलीक उस पिंजरे के सामने जाकर खड़ा हो गया जिसमें कोज़्याव्का इधर-उधर उछल-कूद रहा था।

"यह रहा," उसने बहुत शान से कहा, "यह फ़िल्म को मशहूर कर देगा। ज़रा इसे ध्यान से देखिये तो सही—कहिये है न फ़िल्म-अभिनेता! इसके बारे में दो रायें नहीं हो सकतीं।"

उस दिन से कुलीक जोश के साथ काम करने लगा। वह हर सुबह निश्चित समय पर संस्थान में आ जाता। वह डाक्टरों से कहता कि वे अपने काम में लगे रहें और उसकी तरफ़ कोई ध्यान न दें, मगर वास्तव में वह हर किसी के काम में ख़लल डालता। वह अपने

8—3955

डाक्टर अब यह जानते थे कि अदृश्य शत्रुओं—कम्पन और गुरुत्वाकर्षण की शक्तियों के दवाव की उपस्थिति में कुत्तों का व्यवहार कैसा होता है। उन्होंने इन शत्रुओं का सिर्फ़ अलग-अलग अध्ययन किया? नहीं, ऐसी बात नहीं थी। उन्होंने फ़िल्म और रिकार्ड करनेवाले यन्त्रों के टेपों की मदद से उड़ान के सभी पहलुओं को जाना-समझा था, परीक्षण-हवाबाज़ों पर एक के बाद एक इन शत्रुओं के हमलों का असर देखा था। अब यह परिणाम निकालना संभव था कि अन्तरिक्षीय उड़ान स्वास्थ्य के लिए ख़तरनाक नहीं है कि भारहीनता के बाद परिमन्दन के समय पड़नेवाला दवाव ही अन्तरिक्ष-नाविक का प्रमुख शत्रु है।

मगर डाक्टर यह नहीं बता सकते थे कि अन्तरिक्ष-नाविकों का पांचवां शत्रु-अन्तरिक्षीय विकिरण कितना ख़तरनाक था। बैलिस्टिक राकेट में उड़ान करनेवाले यात्रियों की विकिरण से केवल कुछ क्षणों तक ही भेंट हुई थी और उसने अपने प्रभाव का कोई चिन्ह नहीं छोड़ा था। दूसरे स्पूत्निक में उड़नेवाले लाइका ने तो एक तरह से अन्तरिक्षीय विकिरण में स्नान किया था, मगर डाक्टर इससे कोई जानकारी प्राप्त नहीं कर पाये थे, क्योंकि लाइका लौटा नहीं था। अन्तरिक्षीय विकिरण का प्रभाव जानने के लिए यह ज़रूरी था कि उड़ान के बाद डाक्टर अन्तरिक्ष-नाविक को बहुत समय तक प्रयोगशाला में निरीक्षण के लिए रखें। मगर यह नहीं हो सका और पांचवां अदृश्य शत्रु अज्ञात ही रहा।

नये अन्तरिक्ष-नाविक को पृथ्वी पर लाना ज़रूरी था। कोई नहीं जानता था कि उसका नाम क्या होगा या नये स्पूत्निक में कितने यात्री उड़ान करेंगे या यह कब होगा? मगर हर नई सफलता इस महत्त्वपूर्ण घटना को निकट ला रही थी।

संस्थान की खिड़कियों के नीचे तेज़ ख़ुशबू वाले नये पत्ते निकल आये थे, चिनार के पेड़ों पर रोयों के गुच्छे आकर ख़तम हो चुके थे। अब लाइम वृक्ष की कोंपलों के मुंह खोलकर हवा को अपनी प्यारी सुगन्ध से मस्त करने का वक़्त आ गया था।

जुलाई में एक दिन वसीली दो कुत्तों को ज़ंजीर से बांधकर एक बार फिर फाटक से बाहर लाया। उसके पीछे-पीछे वाल्या एक पिंजरा उठाये हुए थी जिसमें अपने में ही मस्त एक भूरा ख़रगोश कुछ चूस रहा था।

एक बार फिर एक ख़ास हवाई जहाज़ उड़ा और रुपहले राकेट के उड़ान-स्थल पर इन यात्रियों की प्रतीक्षा की गई।

दिलेर और तीन बार उड़ा और उसकी हर उड़ान पिछली उड़ान से अधिक सफल रही। परिमन्दन के समय अब पहले की तुलना में कहीं कम झटके लगते थे। डाक्टर कहते—"यात्रियों को पृथ्वी पर वापस लाने की व्यवस्था विश्वसनीय सिद्ध हुई है।"

दिलेर एक अनुभवी अन्तरिक्ष-नाविक की भांति व्यवहार करता। जब इंजन गड़गड़ाने

लगते तो उसे अदृश्य दवाव का ध्यान आ जाता और वह अपनी लम्बी सी थूथनी को पहले से ही पंजों पर टिकाकर आरामदेह स्थिति में हो जाता। भारहीनता के दौरान वह पहले की भांति सूर्य के प्रतिबिम्ब से खेलता, सूराख़ में से चमकते हुए सूर्य को देखता और बाद में तो उसने यह भी महसूस किया कि अदृश्य मुक्केबाज़ों के मुक्के पहले की तुलना में हल्के हो गये हैं। पृथ्वी पर लौटकर वह हर बार ख़ुशी का उन्मत्त नाच नाचता, मिठाइयां खाता, चित्र खिंचवाता और छायाचित्रकार को ज़बान दिखाता।

सफ़ेद रंग के छोटे-छोटे दो और कुत्ते दल में शामिल हो गये। ये थे हिमकण और मोती। मर्फ़ूश्का नाम के एक शान्त ख़रगोश की भी वृद्धि हो गई थी। कुत्ते अनुभवहीन अन्तरिक्ष-नाविक थे। उनमें से जब कोई घबराता या हील-हुज्जत करने लगता तो दिलेर गुर्राकर और धीरे से उसका कान खींचकर उसे सीधा कर देता। सभी कुत्ते उसकी बात मानते।

"मैं इन कुत्तों का आदर करता हूं," वसीली ने वाल्या से कहा, "यह मर्फ़ूश्का तो अन्यमनस्क सा जानवर है जो दिन भर जुगाली ही करता रहता है। अन्तरिक्ष के इस खोजी को कान से पकड़ लो तो भी इसे कोई एतराज़ नहीं। मगर इन छोटे-छोटे कुत्तों के साहस से मैं हैरान रह जाता हूं। तुमने देखा, वाल्या, कि अब हमारा कटखना न सिर्फ़ एक बढ़िया अन्तरिक्ष-नाविक है, बल्कि सही माने में कमान्डर है। वह तो सचमुच ही बहुत प्रतिभाशाली है!"

"मेरे सबसे अच्छे कामगार की तारीफ़ों के पुल बांधकर कृपया उसका दिमाग़ ख़राब मत कीजिये," वाल्या ने टोका। "देखिये वह आपकी बात सुनते ही, लगा है मोती की हिम्मत बढ़ाने, जो अभी तक कांप रहा है।"

मगर चुप होने के बजाय वसीली ने और अधिक ऊंची आवाज़ में कहा—"ओह कुलीक, कुलीक! उस नायक की तरफ़ तो तुम्हारा ध्यान ही नहीं गया।"

वसीली नहीं जानता था कि उसी सुबह को मास्को के सिनेमाघरों में कुलीक की नई फ़िल्म दिखाई जा रही थी और लोग कोज़्याव्का का आश्चर्यचकित सा चेहरा रजतपट पर देख रहे थे। एक विदेशी यात्री तो संस्थान में टेलीफ़ोन भी कर चुका था—

"आपके संस्थान में कोज़्याव्का नाम का कुत्ता है न? मैं अपने समाचारपत्र के लिए उसका छायाचित्र लेना चाहता हूं।"

"शौक़ से आइयेगा," प्रोफ़ेसर ने टेलीफ़ोन पर जवाब दिया और फिर व्यंग्यपूर्वक मुस्कराकर अपने आप से कहा, "कोज़्याव्का अब जब फ़िल्म-अभिनेता बन गया है तो उसे प्रशिक्षण के लिए वक़्त नहीं मिलेगा।"

वही है या नहीं

गेना एक विजेता की भांति दौड़ता हुआ बोरीस के फ़्लैट में आया।

"बटन दबाओ, जल्दी बटन दबाओ!" गेना ने हांफते हुए आदेश दिया।

बोरीस ने घबराकर बत्ती का बटन दवा दिया।

"अरे बुद्धू, यह नहीं, टेलीविज़न का बटन दबाओ। दबाओ भी बटन, वहां बॉबी है।"

"बॉबी? कैसे? क्यों?" बोरीस पूछना चाहता था, मगर कुछ भी कहने का वक़्त नहीं था। वह भागकर टेलीविज़न के पास गया और उसने बटन दवा दिया।

"हम अन्तरिक्षीय अनुसन्धान-संस्थान के एक कमरे में हैं," उद्घोषक की आवाज़ सुनाई दी। टेलीविज़न पर कोई चित्र नहीं था। रजतपट पर प्रकाश की लहरें दौड़ रही थीं। वे अचानक ग़ायब हो गईं। सफ़ेद लबादे पहने हुए कुछ लोग दिखाई दिये। एक कांपते से यन्त्र पर पैराशूटिस्ट की सी पोशाक पहने हुए एक कुत्ता बैठा नज़र आया। उसकी बॉबी के समान लम्बी और पतली थूथनी थी।

"वही है न?" गेना ने फुसफुसाकर पूछा।

बोरीस ने सन्देहपूर्वक अपना सिर हिला दिया। ढंग से साफ़ किए बालों वाला वह कुत्ता बहुत ही शान्त और आत्मविश्वासी था।

"दिलेर का प्रशिक्षण हो रहा है," उद्घोषक ने कहा।

तब बोरीस ने दृढ़तापूर्वक कहा – "नहीं, यह बॉबी नहीं..."

फिर उन्होंने एक छोटा सा और मस्त कुत्ता देखा जो इधर-उधर फुदक रहा था और अपने बड़े-बड़े और फूले हुए कानों को अजीब ढंग से हिला-डुला रहा था। वे उसे देखकर हंसे।

अचानक लम्बी और पतली थूथनी वाला कुत्ता फिर दिखाई दिया। वह एक राकेट के कक्ष में बैठा था और सूराख़ में से आनेवाले सूर्य के प्रकाश के एक चक्र को देखता हुआ अपना सिर इधर-उधर घुमा रहा था। उसके चेहरे पर असीम विश्वास और जिज्ञासा की ऐसी छाप थी कि वह सिर्फ़ बॉबी ही हो सकता था।

"यह बॉबी ही है!" बोरीस अपनी कुर्सी से उछलकर खड़ा हो गया। "यह वही है! चलो, अभी संस्थान में चलें!"

"संस्थान में?" गेना ने पूछा। "वे हमें धक्के देकर बाहर निकाल देंगे।"

"तो हम क्या करें? क्या यहीं हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहें?"

"हमें कोई जुगत निकालनी होगी। ल्यूबा को बुलाना चाहिए।"

खिड़की के नीचे एक छोटा सा गोल-मटोल लड़का रेत में खेल रहा था। उन्होंने उसे ल्यूबा को बुलाने के लिए भेजा। साहसी कारनामों की दीवानी फ़ौरन आ गई।

"मैं जानती थी, मैं जानती थी!" कमरे में प्रवेश करते हुए उसने कहा। "मैं जा रही थी और मन ही मन सोच रही थी, 'ज़रूर कोई न कोई बात होकर रहेगी।' और वह हो गई!"

"बैठ जाओ," एक कुर्सी की ओर इशारा करते हुए बोरीस ने कड़ाई से कहा।

ल्यूबा चुपचाप बैठ गई।

"सुनो, हम आज ही अपना काम शुरू करेंगे! तुम्हें... समझ गई न..."

अस्त-व्यस्त बालों वाले ये तीनों बालक बहुत ध्यान से अपने हलक़े के नक़्शे का अध्ययन करने लगे।

एक घन्टे बाद तेज़ी से इधर-उधर भागती हुई ल्यूबा का लाल फ़्राक आहाते में नज़र आने लगा। वह भागती हुई एक दरवाज़े में घुसी और मिनट भर बाद तेज़ी से बाहर आई, हाथ में बाल्टी उठाये हुए एक लड़की के कान में उसने फुसफुसाकर कुछ कहा और फिर आगे भाग गई।

रास्ते में वह एक बूढ़ी औरत से मिली जो सौदा-सुल्फ़ ख़रीदकर लौट रही थी। ल्यूबा ने उससे बातचीत की और ख़ुद उसका थैला लेकर दरवाज़े तक छोड़ आई। बुढ़िया कुछ बहरी थी और इसलिए बहुत देर तक समझ न पाई कि ल्यूबा क्या चाहती है। मगर ल्यूबा उसे समझाकर ही रही और फिर तेज़ी से मकान में घुस गई।

एक मकान के दरवाज़े पर ल्यूबा से बड़ी उम्र का एक लड़का उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया था। मगर ल्यूबा ने उससे कुछ कहा जिसके बाद लड़का रास्ते से हट गया और उकड़ूं बैठकर रेत पर एक तरह की योजना बनाने लगा। उन्होंने एक साथ आंगन का चक्कर लगाया और विभिन्न प्रवेश-द्वारों में गये। वहां लड़के ने कुछ दरवाज़ों की ओर संकेत किया और ल्यूबा ने डाक के बक्सों में एक-एक लिफ़ाफ़ा डाल दिया।

शाम होने तक ल्यूबा बहुत से मकानों में इधर-उधर दौड़ती रही।

उस दिन मैदान के इर्द-गिर्द के मकानों के बहुत से लड़कों और लड़कियों को यह सूचना मिली—

"अगर आपके लिए यह बात महत्वपूर्ण है कि कौन सबसे पहले चांद पर पहुंचता है, अगर आप विज्ञान और अन्तरिक्ष-नाविकों के मित्र हैं तो कल दिन के ग्यारह बजे अपने कुत्ते के साथ गुलाबों वाले बुलवार में आयें। वहां 'ल्यूगेव' स्टाफ़ के सदस्य आपसे भेंट करेंगे।"

गुलाबों वाले बुलवार का यह नाम इसलिए पड़ गया था कि वहां की मुख्य क्यारी में गुलाब की एक बहुत ही बड़ी झाड़ी उगी हुई थी। अगस्त का महीना था और सूरज चमक रहा था। ग्यारह बजे तक यह बुलवार सदा की भांति ही नज़र आ रहा था। बच्चागाड़ियों में शिशु इतमीनान से लेटे हुए थे। धायें और नानियां-दादियां फूलों की क्यारियों में गेंद फेंकने के लिए शरारती बालकों को डांट-डपट रही थीं। पेंशनर अख़बारों से अपने चेहरों को ढके हुए ऊंघ रहे थे। डोमिनो खेलनेवाले दीन-दुनिया की सुध-बुध भूले हुए गोटियों को पटापट मेज़ पर फेंक रहे थे।

यह सारा दृश्य इस तरह अचानक ही बदल गया मानो भूकम्प का झटका आया हो। पेंशनरों ने अपनी आंखें खोलीं और चौंके और बेंचों से उठकर खड़े हो गये। धायों ने बालकों को डांटना-डपटना बन्द कर दिया और डोमिनो के खिलाड़ियों के हाथ गोटियां फेंकते-फेंकते ही रुक गये। अगर बेंचें हिलाई-डुलाई जा सकतीं तो वे उनका मुंह बुलवार से गुज़रनेवाले उस असाधारण जुलूस की ओर कर देते जिसके कारण बुलवार शोर और कुत्तों की भौं-भौं से गूंज उठा था। धूप से संवलाए हुए लगभग ३० बालक बड़े गर्व से अपने आवारा, एस्कीमो, बॉक्सर, अलसेशियन और यहां तक कि पतली टांगों वाले पूडल कुत्तों की ज़ंजीरें थामे हुए वहां से गुज़र रहे थे। लाल फ़ाक पहने हुए एक लड़की और दो लड़के इस जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे और सिर्फ़ वे ही कुत्तों के बिना थे।

"ऐसा लगता है कि कहीं आसपास कुत्तों की प्रदर्शनी हो रही है," एक बूढ़ी औरत ने कहा।

"ऐसा ही लगता है।"

"मगर निर्णायक कहां हैं?"

"शायद वही तीनों हैं जो सबसे आगे-आगे जा रहे हैं।"

दर्शकों की बात ठीक ही थी। यह 'ल्यूगेब'—ल्यूबा, गेना और बोरीस का ही काम था। इन्हीं ने ये रहस्यपूर्ण निमन्त्रण भेजे थे। कुत्तों के

मालिकों के नाम और पते मालूम करने के लिए ल्यूबा ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया था। और अब वे सब यहां जमा थे।

'ल्यूगेब' की योजना बहुत सीधी-सादी थी। गुलाबों वाले बुलवार से वे अन्तरिक्षीय अनुसन्धान-संस्थान में पहुंचेंगे और कहेंगे – "हम आपके लिए कुछ कुत्ते लाये हैं। अगर आपको अन्तरिक्षीय खोज के लिए उनकी जरूरत है तो हम उन्हें आपको दे देंगे। कृपया हमें बॉबी दिखा दीजिये।"

बोरीस ने विस्तारपूर्वक ल्यूगेब-योजना का महान लक्ष्य स्पष्ट किया, मगर उसने बॉबी की कोई चर्चा न की।

"क्या आप उन्हें अपने कुत्ते देने को तैयार हैं?" उसने पूछा।

"हां, तैयार हैं!" दुमें हिलाते हुए अपने कुत्तों को उदासी से देखते हुए उनके मालिकों ने जवाब दिया।

"बहुत ख़ूब," बोरीस ने कहा। "अब हमें इनमें से सबसे अच्छे कुत्ते चुनने होंगे। आख़िर उन्हें तो अन्तरिक्ष में उड़ान करनी होगी!"

गेना ने उन्हें एक क़तार में खड़ा कर दिया। ल्यूबा ने कुत्तों के नाम लिखे और बोरीस के मतानुसार उन्हें अच्छे या बुरे अंक दिये। बोरीस ने इन भावी हस्तियों को पैनी नज़र से अच्छी तरह परखा। आधे कुत्तों के अन्तरिक्षीय नाम थे। किसी का नाम शुक्र, किसी का मंगल और किसी का प्लूटो था। उनमें दो राकेट और एक स्पूत्निक भी था। कुल मिलाकर बोरीस को इनका निरीक्षण करके सन्तोष हुआ। मगर लम्बे-लम्बे बालों वाले एक स्कॉच-टेरियर को देखकर उसने नाक-भौं सिकोड़ी। उसे कुत्तों की प्रदर्शनी में लड़कों द्वारा गाया जानेवाला यह गीत याद हो आया –

कुत्ता है यह, हा-हा-हा।
एक नमूना गढ़ा हुआ।।

"यह तो हौवा है। हमें ऐसे कुत्तों की जरूरत नहीं," बोरीस ने बिगड़ते हुए कुत्ते की स्वामिनी से कहा। कुत्ते की मालकिन पीली पोशाक वाली एक लड़की थी।

"तुम्हें इस तरह की बात कहने का कोई हक़ नहीं है," लड़की ने रुआंसी आवाज़ में कहा। "मेरे कुत्ते के बाल ढंग से संवरे हुए नहीं हैं, मगर वह बहुत बहादुर है। लो, इसे पढ़ो!" उसने छोटे से थैले से एक काग़ज़ बाहर निकाला।

सभी लोग बोरीस के गिर्द जमा हो गये, जिसने वह काग़ज़ खोला और पढ़ा – "हलक़े का मिलिशिया स्टेशन ओल्गा ज़ात्सेपोवा का उस बात के लिये आभारी है कि उसके टेरियर कुत्ते ने एक अपराधी को पकड़ा है।

मिलिशिया चौकी का संचालक,
सोलोव्योव।"

प्रमाणपत्र पर मुहर लगी हुई थी।

"इसका क्या नाम है?" पंजों के बल बैठते हुए और इस बहादुर झबरे कुत्ते को थपथपाते हुए ल्यूबा ने पूछा।

"इसका नाम है वेरोनिका के बाल। यह एक तारक-समूह का नाम है। संक्षिप्त रूप से हम इसे वरूनी के नाम से पुकारते हैं।"

"हमें यह बताओ कि उसने चोर को पकड़ा कैसे?" गेना ने सुझाव पेश किया।

"एक दिन मैं सड़क पर घूम रही थी। मैंने एक आदमी को भागते तथा कोट के नीचे कुछ छिपाते हुए देखा। एक औरत उसके पीछे-पीछे चिल्लाती हुई भाग रही थी –

'पकड़ो चोर को! मेरा बटुआ इसने चुरा लिया है!' मैंने इधर-उधर नज़र दौड़ाई, मगर कोई मिलिशियामैन नज़र न आया। और तो और, कोई वयस्क भी वहां नहीं था। चोर के ग़ायब होने के पहले मुझे कुछ तो करना ही था। इसलिए मैंने वरूणी से कहा – 'पकड़ लो इसे!' और ज़ंजीर छोड़ दी। पलक झपकते में वरूणी चोर के पास पहुंच गया और उसकी टांग पर झपटा। मैं यह समझ भी न पाई कि क्या हुआ और मैंने चोर को पटरी पर चित पड़े हुए पाया। मेरा कुत्ता दांत दिखाता हुआ उसके ऊपर ऐसे खड़ा था मानो कह रहा हो –

'ख़बरदार जो हिलने-डुलने की हिम्मत की!' मेरे कुत्ते के चाकू की तरह बड़े-बड़े दांत हैं।"

लड़की झुकी और उसने बेधड़क अपने कुत्ते का मुंह खोला। लम्बे-लम्बे तेज़ दांत दिखाई दिए।

"भई वाह!" किसी ने तारीफ़ करते हुए कहा।

"ख़ैर कुछ बुराई नहीं! हम तुम्हारे वरूणी को भी ले चलेंगे," बोरीस सहमत हो गया। "आओ चलें।"

जुलूस बड़ी शान से सड़कों पर चक्कर काटता हुआ आगे बढ़ा। राहगीर इस भीड़ को जिज्ञासु आंखों से देखते थे। ट्राम-चालकों ने अपनी ट्रामें धीमी कर दीं और बालकों तथा उनके कुत्तों के सड़क पार कर जाने तक सब्र से इन्तज़ार किया। सोडावाटर और आइसक्रीम बेचनेवालियां अपने गाहकों को भूलकर वरूनी की दाढ़ी और मूंछों को देखती हुई आश्चर्यचकित सी खड़ी रह गयीं। वरूनी अविचल भाव से पीली पोशाक वाली मालकिन को अपने पीछे-पीछे खींचता जा रहा था। गुलाबों वाले बुलवार से संस्थान तक पहुंचने के रास्ते में विज्ञान और अन्तरिक्ष-नाविकों के मित्रों को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उन्हें वीरतापूर्वक जिज्ञासु लड़कों और गली के आवारा कुत्तों के हमले सहने पड़े जिन्होंने अपने अभिमानी सम्बन्धियों से छेड़-छाड़ शुरू करने की कोशिश की। एक मोड़ पर दो कुत्ते सामने आये और अलसेशियन पर झपट पड़े। अलसेशियन को जब ग़ुस्सा आया और वह उनपर झपटा तो उनके बाल उड़ते नज़र आये। बालकों ने जैसे-तैसे उन्हें उसके तेज़ दांतों से बचाया।

मगर आख़िर मामला ढंग से सिरे चढ़ गया। सभी कुत्तों के साथ जुलूस अपनी मंज़िल पर पहुंच गया।

वृक्षों की छाया में खड़े हुए दुमंज़िले मकान ने चुपचाप उनका स्वागत किया। गर्मी से परेशान कुत्ते झटपट घास पर लेट गये।

एक बूढ़ा चौकीदार फाटक पर आया। उसने इन सबको देखा और कड़ाई से पूछा।

"किससे मिलना है तुम्हें?"

"संचालक से।"

चौकीदार ने व्यंग्यपूर्वक खीझकर कहा।

"लो ज़रा ख़्याल करो! ऐसी बकवास के लिए मैं वैज्ञानिकों के काम में बाधा डालूं?"

"हम यहां बकवास करने के लिए नहीं आये हैं। हम विज्ञान के मित्र हैं," बोरीस ने समझाने की कोशिश की।

"हम सब जानते हैं तुम्हारे विज्ञान के बारे में – रेलिंग पर कूदते-फांदते फिर रहे हो!" चौकीदार ने कहा।

"मुझे यक़ीन है कि तुम अख़बार नहीं पढ़ते हो," गेना ने शान से कहा। "और तुम अन्तरिक्षीय अनुसन्धान-संस्थान में चौकीदार हो!"

"और लो! यह चला है मुझे पाठ पढ़ाने!" बूढ़ा आग-बबूला हो उठा। "अरे, मुझसे तो ख़ुद प्रोफ़ेसर भी हाथ मिलाता है। बस कह जो दिया मैंने, नहीं जाने दूंगा तुम्हें। और यही होगा भी।"

"मगर हम भी यहां से नहीं जायेंगे," बच्चे चिल्लाये।

शोर सुनकर एक आदमी बाहर आया जो अपने काम में बहुत खोया हुआ सा नज़र आ रहा था। दोनों पक्षों की बात सुनकर उसने नाराज़ होते हुए चौकीदार से कहा कि यह गंभीर मामला है। ऐसे बालकों को भगाना नहीं, बल्कि धन्यवाद देना चाहिये।

"आप जानें," बूढ़े ने माथे पर बल डालकर कहा।

"तो आओ, तुम लोगों के कुत्ते देखें," डाक्टर ने कहा और वह छोटे-छोटे साधारण नसल के कुत्ते चुनने लगा।

"यह और यह," उसने इशारा किया। "और निश्चय ही टेरियर भी। तुम्हें अफ़सोस तो नहीं होगा अपना कुत्ता देकर?"

"नहीं, निश्चय ही नहीं!" वरूनी की मालकिन ने कहा।

चुने हुए कुत्ते संस्थान में ले जाये गये।
"और हमारे कुत्ते?" अलसेशियन कुत्तों के मालिकों को निराशा हुई।
"तुम्हारे कुत्ते और कामों के लिए बहुत अच्छे हैं। मिसाल के तौर पर वे सीमाओं पर बहुत शानदार काम करते हैं। दुर्भाग्यवश वे हमारे लिए उपयुक्त नहीं हैं। मैं चुने हुए कुत्तों के मालिकों की सूची तैयार किए देता हूं। तुम लोग जब-तब आकर अपने कुत्तों को देख सकते हो। धन्यवाद बच्चो!"

बोरीस ने अचानक यह महसूस किया कि बॉबी के बारे में कोई जानकारी प्राप्त होने के पहले ही डाक्टर चला जायेगा। उसने डाक्टर की आस्तीन छूई।

"क्या आप कृपा करके मुझे मेरा कुत्ता नहीं दिखा सकते?"

"तुम्हारा कुत्ता? क्या वह यहां संस्थान में है?"

"मेरे पास बॉबी नाम का एक कुत्ता था। अब वह दिलेर कहलाता है। मैंने उसे टेलीविज़न पर पहचाना था।"

"मगर मेरे दोस्त, दिलेर का पहला नाम कटखना था, बॉबी नहीं। और फिर वह आवारा कुत्ता था।"

"जो भी है, यह वही है," बोरीस ने ज़ोर देकर कहा। "आप इस बात की जांच कर सकते हैं। मैं उसे देखकर कहूंगा – 'बॉबी, इधर आओ!' आप देखेंगे वह फ़ौरन मेरे पास चला आयेगा!"

डाक्टर दयालु व्यक्ति था और वह बोरीस की भावनाओं को समझता था।
"हो सकता है कि ऐसा ही हो," उसने घड़ी भर बाद कहा, "हो सकता है कि वह बॉबी ही हो। मगर मैं इस वक़्त इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कर सकता। दिलेर इस समय नगर में नहीं है।"

"क्या वह उपनगर में है?"

"छुट्टी पर है। नमस्ते।" वह जाने के लिए मुड़ा।

"ज़रा रुकिये, रुकिये तो!" ल्यूबा दौड़कर आगे आई।

डाक्टर रुका –

"कहो, क्या चाहती हो?"

"मैं आपको यह बताना चाहती हूं कि वह साल भर से बॉबी की तलाश कर रहा है। आपको पूरा विश्वास है कि दिलेर का पहला नाम कटखना था?"

"हां! हम सभी यह जानते हैं।"

अब कहने के लिए कुछ भी बाक़ी नहीं रह गया था। बोरीस अपना सिर झुकाए हुए जूते से ज़मीन कुरेद रहा था।

"आओ चलें," धीरे से उसका कन्धा छूते हुए गेना ने कहा। "हम फिर किसी समय यहां आएंगे।"

चांद की ओर उड़ान

अन्तरिक्ष के भावी विजेता के निरीक्षणों की डायरी से, गेना करातोव, सातवीं 'क' कक्षा का विद्यार्थी

मानव-जाति हमेशा पृथ्वी
पर ही वन्दिनी बनकर नहीं
रहेगी, बल्कि प्रकाश और
अन्तरिक्ष की खोज में शुरू
में डरते और झिझकते हुए
वायुमंडल की सीमा को पार
करेगी और फिर सौर मण्डल पर
विजय प्राप्त करेगी।

को० ए० त्सिओल्कोव्स्की

सितम्बर, १९५९

मेरा विचार सही था! निश्चय ही त्सिओल्कोव्स्की का भी। एक राकेट चांद की ओर उड़ाया गया। वे लोग कितने बुद्धू हैं जो ज्यूलेस वेर्नस पर विश्वास करते हैं और यह सोचते हैं कि वे तोप के गोले में बैठकर बर्बिकेन के साथ उड़ान कर सकते हैं। इतिहास उन्हें ग़लत सिद्ध कर चुका है।

कल हमने अनावश्यक गवाहों के बिना ही अपने फ़्लैट में चांद की ओर पहली उड़ान शुरू की। मैंने एक हफ़्ते से अधिक समय तक इसकी तैयारी की थी। अपनी उड़ान में हमने १२–१४ सितम्बर को 'लूनिक – २' की गतिविधियों को दोहराया।

हमने अपनी ज़िम्मेदारियों को बांट लिया। बोरीस वैज्ञानिक यन्त्रों और स्मरण-चिन्ह का डिब्बा बना, मैंने कमान्ड-पोस्ट और कम्प्यूटिंग केन्द्र का काम संभाला और ल्यूबा रिकार्डकर्त्री तथा स्टेनोग्राफ़र बनी। टिप्पणियां लिखते और साथ ही अन्तरिक्ष-यात्रियों के मामलों में टांग अड़ाकर आश्चर्य पैदा करती हुई ल्यूबा ने जो टेढ़े-मेढ़े अक्षर घसीटे, उन्हीं के आधार पर वर्त्तमान रिकार्ड तैयार किया गया है।

राकेट ठीक-ठाक और पूरी तरह से तैयार उड़ान के स्थल पर इन्तज़ार कर रहा था। भोले दर्शकों ने चांद को खोजते हुए इधर-उधर अपने सिर घुमाये। मगर चांद कहीं दिखाई न दिया। उन्हें यह बात समझानी पड़ी कि उड़ान शुरू होने के समय चांद को अवश्य ही क्षितिज से परे होना चाहिए। तब उड़ता हुआ राकेट क्षितिज के ऊपर सबसे ऊंचे विन्दु पर इससे मिलेगा और पृथ्वी पर से राकेट के चांद को छूने के दृश्य को देखना सम्भव होगा।

अन्तिम तैयारियां हो रही थीं। विशेषज्ञों (ल्यूबा और मैं) ने डिब्बे (बोरीस) को कीटाणुमुक्त किया। हमने ब्रश से उसे अच्छी तरह साफ़ किया ताकि वह चांद पर अपने साथ कोई कीटाणु न ले जाये। अगर हम ऐसा न करते तो बाद में कोई भ्रम पैदा हो सकता था, चांद पर असाधारण परिस्थितियों में किसी कीटाणु से चन्द्रग्रह का कोई हाथी बन सकता था। बाद में वैज्ञानिकों के वहां पहुंचने पर वे यह तय कर सकते हैं कि वह हाथी वहां सदियों से रह रहा है...

अचानक संकेत सुनाई दिया (यह घड़ी का अलार्म था)। हम तेज़ी से राकेट की ओर दौड़े। फिर भी राकेट को उड़ाने में एक सेकंड की देर हो गई।

डिब्बा अब राकेट में था (बोरीस कुर्सी में बैठ गया,) धमाके की ज़ोरदार गड़गड़ाहट सुनाई दी (कुर्सी की टांगों के नीचे पिस्टन बज उठीं) और उड़ान के स्थल पर धुआं ही धुआं हो गया। राकेट ने आवश्यक रफ़्तार प्राप्त की और इंजनों के सहारे वह वायुमंडल को चीरता हुआ बढ़ चला (मैंने कुर्सी को सफ़ाई करने के ब्रश से धकेला और वह तैरती हुई दूसरे कमरे में यानी अन्तरिक्ष में जा पहुंची)।

"क्या तुम दूसरी अन्तरिक्षीय रफ़्तार महसूस कर रहे हो?" मैंने रेडियो द्वारा बोरीस से पूछा।

"नहीं!" बोरीस ने जवाब दिया।

हमें और ज़्यादा शक्ति लगानी पड़ी और ज़ोर से उसे धकेलना पड़ा।

"अब मैं महसूस करता हूं," बोरीस ने खीझते हुए कहा। मगर वह उछला नहीं, क्योंकि वह तो अन्तरिक्ष में पहुंच भी चुका था।

पूरा यक़ीन कर लेने के लिए मैंने फिर से पूछा। बोरीस ने कहा कि वह महान न्यूटन द्वारा लगाये गये पूर्वानुमान के अनुसार ११.२ किलोमीटर प्रति सेकंड की रफ़्तार से उड़ रहा था। कितनी महान शक्ति है विज्ञान! न्यूटन ने सत्रहवीं सदी में गुरुत्वाकर्षण के नियम की खोज और उस रफ़्तार की गणना की जिसके सहारे पृथ्वी की सीमा के बाहर जाना सम्भव है। इसे दूसरी अन्तरिक्षीय रफ़्तार कहते हैं। हमारा डिब्बा इसी रफ़्तार पर उड़ान कर रहा था।

"चांद तक की दूरी कितनी है?" मैंने बोरीस से पूछा। मगर ल्यूबा बीच में टपक पड़ी और उसने ज़बानी रटी हुई सूचना दी–

"चांद पृथ्वी के गिर्द लगभग गोल कक्षा पर चक्कर लगाता है। पृथ्वी से उसका दूरतम विन्दु ४,०६,६७० किलोमीटर और निकटतम विन्दु ३,५६,४०० किलोमीटर के फ़ासले पर है।"

मैंने शान्त भाव से कहा–

"मगर हम तो चांद की ओर सीधे नहीं, वक्राकार, एक वक्र रेखा बनाते हुए उड़ रहे हैं। इलैक्ट्रोनिक-कम्प्यूटर मुझे बताते हैं कि हमारे राकेट को ३,७१,००० किलोमीटर का फ़ासला तय करना है।"

"अब मैं पूरी तरह समझ गया हूं," बोरीस ने अन्तरिक्ष से चिल्लाकर कहा। इसका मतलब यह है कि मुझे प्रति घंटा ४०,००० किलोमीटर की रफ़्तार से ३,७१,००० किलोमीटर की उड़ान करनी है..."

"बहुत बड़ी ग़लती कर रहे हो तुम," मैंने मत प्रकट किया। "पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का क्या हुआ? क्या तुम उसके बारे में भूल गये हो? राकेट की रफ़्तार लगातार कम होती जा रही है!"

यह बात साफ़ करने के लिए बोरीस की कुर्सी के साथ बंधी रस्सी को मैंने झटका दिया और उसे थोड़ा पीछे को खींचा। तब मैंने अपनी टिप्पणियां हाथ में लीं और अपने आश्चर्यचकित श्रोताओं को यह स्पष्ट किया कि गणित-सम्बन्धी सही अर्थ जोड़ने का क्या महत्व है।

"मिसाल के तौर पर इकाई के ०.२ का हमारे लिए क्या महत्त्व है?" मैंने पूछा। "मान लो, बोरीस, इस समय इंजन बन्द है और तुम्हारी उड़ान की रफ़्तार ११.२ किलोमीटर न होकर ११ किलोमीटर प्रति सेकंड है, तुम क्या चांद पर पहुंच जाओगे? प्रक्षेपपथ ट्राजेक्ट्री की गणना के अनुसार एक सेकंड में एक मीटर की भूल होने से २५० किलोमीटर का फ़र्क पड़ जाता है। इसलिए हर सेकंड में ०.२ किलोमीटर यानी हर सेकंड में

9—3955

२०० मीटर की भूल होने से २००×२५० बराबर है ५०,००० यानी ५०,००० किलोमीटर की भूल हो जायेगी। चांद का व्यासार्ध सिर्फ़ १७०० किलोमीटर है। दूसरे शब्दों में तुमने चाहे कितना ही सही निशाना क्यों न साधा हो इस तरह की भूल होने से तुम कभी चांद पर न पहुंच पाओगे। इसके अलावा हमें यह भी याद रखना चाहिए कि उड़ान शुरू करने में एक सेकंड की देर होने से हम अपने मार्ग से २० किलोमीटर दूर हट जाते हैं। मगर यह बहुत भयानक बात नहीं है!"

"कमाल है!" ल्यूबा ने कहा, मगर बोरीस चिल्ला उठा कि वह कुर्सी पर बैठा-बैठा थक गया है। उसने कहा कि डिब्बे को अब चांद की ओर बढ़ना चाहिए, मगर अभी तक चांद का कहीं अता-पता न था।

मैंने तो हर चीज़ सोच-विचार ली थी। मैं जहां बैठा था वहीं से मैंने एक रस्सी खींची और बोरीस की दायीं ओर को चांद का नक़शा खुल गया। इसपर सागरों के टूटे-फूटे तट, चन्द्रग्रह के गहरी दरारों की तहों वाले कुंडलाकार पर्वतों के रेखाचित्र बने हुए थे। नक़शे में उदास रेगिस्तान जैसा पूरा और रहस्यपूर्ण चांद दिखाई दे रहा था।

दीवार तक चांद से मिलने के बिन्दु तक का प्रक्षेपपथ खड़िया से फ़र्श पर बनाया गया था। रस्सी से लटके हुए चांद और कुर्सी को एक ही समय में मिलन-बिन्दु पर पहुंचना चाहिए था। मैं उस कुर्सी को हिलाता-डुलाता रहा जिसपर बोरीस बैठा था। वह जब-तब उड़ान के समय की सूचना देता रहा और ल्यूबा उसकी गति की तालिका को अख़बार से मिलाती रही। "२१.०० घंटे। १२

सितम्बर," बोरीस ने कहा। मैंने आदेश दिया–"एक कृत्रिम धूमकेतु को देखने के लिए तैयार हो जाओ।"

बोरीस ने एक तश्तरी में थोड़ा मैग्नीशियम जलाया और मेरी आंखों के सामने एक अद्भुत शोले ने सारे अन्तरिक्ष को जगमगा दिया। कृत्रिम धूमकेतु के प्रकाश को देखने से मालूम हुआ कि राकेट सही मार्ग पर जा रहा है।

चांद बोरीस के ज्यों-ज्यों नज़दीक आता गया, बड़ा होता गया और इसके पीछे की धरती एक छोटे से ग्लोब में बदल गई। बोरीस दीवार से लगभग सट गया था और नक़शा बिल्कुल उसके निकट हो गया था ... फ़र्श पर ये शब्द लिखे हुए थे–

"००.०२.२४ घंटे। १४ सितम्बर। राकेट चांद पर उतरा।"

बोरीस उछलकर कुर्सी से कूदा और उसने दफ़्ती का बना हुआ स्मरण-चिन्ह चांद की सतह पर फेंक दिया। अगर हम टूटी हुई तश्तरी की तरफ़ ध्यान दें न तो 'निर्मल-सागर' के क्षेत्र में राकेट का चांद पर उतरना कामयाब रहा। बोरीस टूटी हुई तश्तरी के बारे में बिल्कुल भूल चुका था।

अब मुझे महसूस हुआ कि पहले से हिसाब-किताब जोड़े बिना मैंने मैदान में पाइप का जो राकेट उड़ाया था, वह बिल्कुल बेवक़ूफ़ी का काम था। ज़ाहिर है कि इसी लिये वह असफल रहा था। मैंने कम कैलॉरी वाला जो ईंधन इस्तेमाल किया था वह भला राकेट को प्रथम अन्तरिक्षीय रफ़्तार कैसे प्रदान कर सकता था! यह ग़लती थी। यह बात अब मुझे स्पष्ट हो गई है कि पहले सैद्धान्तिक दृष्टि से तैयारी करने की ज़रूरत होती है।

नवम्बर, १९५९

मैं संसार के प्रथम अन्तरग्रहीय स्वसंचालित स्टेशन की उड़ान का अध्ययन करता रहा हूं। इस स्टेशन ने ७ अक्तूबर को चांद के अदृश्य पहलू के चित्र लिए। "संसार में प्रथम," ये शब्द मैं कितनी बार लिख चुका हूं और ऊबने के बजाय मैं इन्हें अधिकाधिक दिलचस्प अनुभव कर रहा हूं।

'लूनिक-३' नाम का राकेट अब चांद के गिर्द चक्कर लगाकर पृथ्वी पर लौट आया है। इसने दस लाख किलोमीटर का चक्कर लगाया है। जब यह चांद से ६५,००० किलोमीटर दूर था तो कैमरे का लेन्ज़ खुल गया और कैमरा ४० मिनट तक फ़ोटो लेता रहा।

१३० सेंटीमीटर लम्बे सिलिंडर में काम करते हुए राकेट के स्वसंचालित यन्त्रों ने फ़िल्म को डिवैलप और फ़िक्स किया तथा सुखाया। यद्यपि मेरी लम्बाई १६२ सेंटीमीटर

है तथापि निश्चय ही एक ऐसे सिलिंडर में मैं भी फ़िल्म डिवैलप कर लेता, मगर अपेक्षाकृत बुरे ढंग से। हमारा स्नानगृह २५० सेंटीमीटर लम्बा है। और मैं जब इसमें भी फ़िल्म डिवैलप करता हूं तो अक्सर या फ़िल्म को या प्रिन्ट्स को ख़राब कर लेता हूं।

यह सच है कि चांद के अदृश्य पक्ष की पृष्ठभूमि में मेरा, बोरीस और ल्यूबा का चित्र बहुत अच्छा बना। यह चित्र फ़ोटोग्राफ़ी के सभी नियमों के अनुसार और स्वसंचालित शटर का उपयोग करके बनाया गया था और घड़ी सामने रखकर फ़िल्म को डिवैलप और प्रिन्ट किया गया था। चांद का नया नक़्शा हमने मिलकर बनाया। मैंने त्सिओल्कोव्स्की, जोलियो क्युरी और लोमोनोसोव नामक क्रेटरों और सोवियत पर्वतमाला के चक्र बनाये। ल्यूबा ने मास्को सागर और स्वप्न-सागर में हरा रंग भरा और बोरीस ने पीले पठारों को चित्रित किया। बोरीस को बहुत मेहनत करनी पड़ी क्योंकि तथाकथित सागरों की तुलना में चांद के इस पहलू का पठार-क्षेत्र कहीं अधिक है। समुद्रों में पानी के बजाय धूल भरी पड़ी है। ज्यूलेस वेर्नस ने कल्पना की उड़ान भरते हुए जिन महान सागरों और असीम जंगलों का वर्णन किया है, वे कहां हैं? बोरीस के समान प्राकृतिक दृश्यों के प्रेमी ही ऐसे वर्णनों पर विश्वास कर सकते थे।

कल्पना कीजिए कि अगर मैं अपना नक़्शा लेकर १०० या २०० वर्षों के पहले की दुनिया में जा सकता, तो क्या होता? ज्योतिषशास्त्रियों ने यही कहा होता कि मैं चांद से आया हूं!

अप्रैल, १९६०

हमने स्कूल में रेडियो कार्यक्रम शुरू किया है। हमारी कक्षा ने मुझे, बोरीस और ल्यूबा को एक रिपोर्ट तैयार करने का काम सौंपा। मगर अपनी कक्षा के बारे में हम भला क्या रिपोर्ट तैयार कर सकते थे? हमने सभी नई खोजों के बारे में अन्तरिक्ष से एक कार्यक्रम पेश करने का निर्णय किया।

लगभग दो महीनों तक हमने अपने हलक़े के पुस्तकालय में जाकर काम किया। वहां काम करने में बहुत मज़ा है, हर व्यक्ति के लिये लैम्प के साथ अलग मेज़ है। हमने 'ज्ञान ही शक्ति है', 'युवाजन के लिए तकनीक' नामक पत्रिकाएं, समाचारपत्र और वैज्ञानिक पत्रिका 'प्रकृति' का अध्ययन किया। इसके अलावा मैंने अपने पिता से कुछ ख़ास साहित्य लेकर भी पढ़ा। कार्यक्रम पेश करने का दिन २० अप्रैल निश्चित किया गया था। हम इतिहास से ली गई घटनाओं, रेखाचित्रों और नक़्शों से भरी हुई एक

नोटबुक के रूप में तैयारी कर चुके थे। हम ९९ प्रतिशत काम पूरा कर चुके थे और अब इसे ढंग से लिखकर रिहर्सल करना बाक़ी रह गया था।

तभी सारा मामला चौपट हो गया।

मेरे कमरे में हम तीनों इकट्ठे हुए और दरवाज़ा बन्द करके बैठ गए। रिपोर्ट लिखने के बजाय हम उसकी शैली के बारे में झगड़ने लगे। कुछ समय के बाद हमने समझौता कर लिया और तब हवा के बारे में ल्यूबा अपनी कविता ऊंचे-ऊंचे पढ़ने लगी। मैंने उससे कहा कि उसे भी वही करना चाहिए जो हमारी कक्षा के मुखिया लेव पोमेरान्चिक ने किया था। रद्दी काग़ज़ इकट्ठे करते समय उसने अपनी कविताएं भी उनमें डाल दी थीं। ल्यूबा रोने लगी। बोरीस ने मेज़ पर मुक्के मारते हुए यह मांग की कि प्रकृति के सुन्दर वर्णन शामिल किए जाएं, यानी बुलबुलों और इन्द्रधनुष आदि को रिपोर्ट में जगह दी जाए। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर पाया और उसे मुक्का दे मारा। वह भी पीछे नहीं रहा। हम चुपचाप लड़ते रहे ताकि घर के लोग जमा न हो जाएं। हमारे बीच जब समझौता हो चुका था तब पिताजी घर आए तो उन्होंने हमें कमरे से खदेड़ दिया।

ये पंक्तियां मैं अकेला ही लिख रहा हूं और बहुत उदास हूं। अब हम क्या करें?..

इन शब्दों के साथ डायरी समाप्त हो जाती थी...

हम स्पूत्निक से बोल रहे हैं

गेना रात भर नींद में बड़बड़ाता और करवटें बदलता रहा। सपने में उसने झल्लाते हुए कक्षा के मुखिया पोमेरान्चिक को देखा जिसने कहा – "तो तुम लोगों से काम सिरे नहीं चढ़ा? मैं जानता था। अन्तरिक्ष के बारे में रिपोर्ट पेश करने का काम हमें किसी और को सौंपना होगा! बेहतर यही होगा कि तुम लोग सफ़ाई की जांच करनेवाली टोली में शामिल हो जाओ। यह लो बाहों पर बांधने की पट्टियां।" गेना भयभीत हो उठा।

वह सुबह ही उछलकर बिस्तर से निकला और नंगे पांव मेज़ की तरफ़ दौड़ा। मेज़ पर पूरा लेख देखकर वह स्तम्भित रह गया। हाशिया छोड़कर बहुत ही साफ़-सुथरे ढंग से टाइप किए हुए उस लेख के कोने पर क्लिप लगा हुआ था। लेख का शीर्षक था – 'हम स्पूत्निक से बोल रहे हैं।'

गेना फ़ौरन समझ गया कि क़िस्सा क्या है। दांत निपोरते हुए वह उस कौच की

तरफ़ दौड़ा जहां उसके पिता सो रहे थे। कभी एक और कभी दूसरे पांव से आहट करते हुए उसने ख़ुशी के अन्दाज़ में कहा –

"माता-पिता को अपने बच्चों के स्कूल का काम करने की इजाज़त नहीं है।"

"बेशक नहीं है। मगर यह तो तुम्हारा ही काम है। मैंने तो सिर्फ़ तुम्हारे ही विचारों को लिख दिया है। इसके अलावा तुम यह भी जानते हो कि मैं कविता नहीं रच सकता। और हवा के बारे में रची गई कविता बहुत शानदार है। अब चलते-फिरते नज़र आओ बेटे!"

पिता फिर से सो गए। गेना हवा की तरह उड़ता हुआ स्कूल पहुंचा। वह उस समय कक्षा में पहुंचा जब कक्षा का मुखिया पोमेरान्चिक ल्यूबा और बोरीस से कह रहा था –

"ऐ शेख़ीख़ोरो, तुमपर किसी बात के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता। मैं टोली की परिषद के सामने यह सवाल पेश करूंगा।"

"आह! पोमेरान्चिक, हैलो!" गेना चिल्लाया और अपनी ख़ुशी पर क़ाबू न पाते हुए उसने कक्षा के मुखिया की नाक पर काग़ज़ मारते हुए कहा – "यह लो!" उसने लेख को हवा में हिलाया और कहा – "बिल्कुल तैयार है!"

"हुर्रा!" ल्यूबा और बोरीस एक साथ चिल्लाए और स्तम्भित पोमेरान्चिक को वहीं पर छोड़कर उछलते-कूदते हुए गेना के पीछे-पीछे हॉल में जा पहुंचे।

"देखो न," गेना एक ही सांस में सब कुछ कह गया, "मैं यह सोचते हुए उठा कि सब कुछ चौपट हो गया, कि पोमेरान्चिक हमारी ख़ूब ख़बर

लेगा और दीवारी समाचारपत्र में हमारे बारे में एक व्यंग्य-चित्र बनेगा। तभी मैंने मेज पर यह लेख तैयार पाया..."

पूरी छुट्टी होने पर ये तीनों दोस्त रेडियो-केन्द्र की ओर गए। उन्हें दरवाज़े को काफ़ी देर तक खटखटाना पड़ा। ऊंची कक्षाओं के विद्यार्थियों ने उसे बन्द कर रखा था ताकि कोई उनके काम में ख़लल न डाले। मगर जैसे ही उन्हें पता चला कि अन्तरिक्ष से कार्यक्रम पेश किया जायेगा तो उन्होंने फ़ौरन इन्हें भीतर जाने दिया। उन्होंने इन तीनों को मेज़ों के गिर्द बैठा दिया और यह कहते हुए ल्यूबा के सामने घड़ी रख दी – "इसे देखती रहना तुम्हें पन्द्रह मिनट दिए जाते हैं।" ल्यूबा ने चुपचाप सिर हिला दिया और अपनी बड़ी-बड़ी आंखें घड़ी पर जमा दीं।

"कौन शुरू करेगा?" प्रबन्धक लड़के ने अपनी भारी-भरकम आवाज़ में पूछा।

"यह शुरू करेगा," बोरीस ने गेना की तरफ़ इशारा किया। "और इसके बाद हमारी बारी आयेगी।"

लड़के ने माइक्रोफ़ोन चालू कर दिया और कार्यक्रम प्रसारित होने लगा। गेना ने पढ़ना शुरू किया, उत्तेजना के कारण उसकी आवाज़ फटी जा रही थी –

हम स्पूत्निक से बोल रहे हैं!

हम स्पूत्निक से बोल रहे हैं!

सोवियत स्पूत्निक-३ पृथ्वी को सम्बोधित कर रहा है!

मैं तुम्हें अपनी पृथ्वी, आकाश और सितारों के बारे में बताऊंगा। सुनो ऐ ख़ुशक़िस्मत बालको! हमारे ग्रह के अनेक रहस्यों को जाननेवाले स्कूली बालकों की तुम पहली पीढ़ी हो।

तुम लोग सूरज से परिचित हो न? बेशक परिचित हो! वह हर दिन चमकता है।

प्राचीन काल में मिस्र वासी सूर्य की पूजा करते थे। वे श्वेत, गर्म देवता रा के गुस्से से थर-थर कांपते थे। कारण कि उनके चारों ओर रेगिस्तान थे। सिर्फ़ एक ही ऐसा आदमी था जो इस देवता से आंखें चार कर सकता था। यह आदमी था फ़राओ! वह इसलिए ऐसा कर सकता था कि उसके पास काले शीशों वाला दुर्लभ और बहुत महंगा चश्मा था। मगर उस तक ने यह अनुमान नहीं लगाया कि रा देवता की भयानक किरणों

से, सूर्य की अत्यधिक उदारता से; न तो काला चश्मा ही और न प्रार्थनाएं ही उसकी रक्षा कर रही थीं, बल्कि उसकी रक्षा करता था नीला आकाश, वायुमंडल! पर ख़ैर, तुम लोग इसके बारे में सब कुछ जानते हो—सूर्य देवता और प्राचीन यूनानियों के बारे में, जिन्होंने हमें वायुमंडल शब्द दिया और इस तथ्य से भी परिचित हो कि हमारी पृथ्वी के लिए वायुमंडल वही महत्त्व रखता है जो काच-गृह के लिए काच...

जिस साल मैंने उड़ान की उस साल वायुमंडल में गड़बड़ी थी। वैज्ञानिक उसके व्यवहार पर विचार करने के लिए एक गोल मेज़ के गिर्द जमा हुए।

"मेरे प्यारे सहयोगियो," एक ने कहा, "स्थिति बहुत चिन्ताजनक है। सारी पृथ्वी पर बहुत बुरे और तूफ़ानी मौसम का साम्राज्य है। प्रकृति की अन्धी ताक़तें मानव-जाति पर मुसीबतों के पहाड़ गिरा रही हैं। मैं आपके सामने कुछ तथ्य पेश करूंगा। १९५६ में दुनिया भर में १०० प्राकृतिक दुर्घटनाएं हुईं। भारत के हज़ारों गांव बाढ़ों की लपेट में आए, फ़सलें तबाह हो गईं और दस लाख लोगों के पास न तो ख़ुराक रही और न सिर छिपाने की कोई जगह। ईरान और अफ़ग़ानिस्तान जैसे ख़ुश्क देशों में भी भारी बरसात हुई और पानी से उफनती हुई नदियां अपने किनारे तोड़कर बह निकलीं। पश्चिमी यूरोप में बेहद ठंड पड़ी और हज़ारों लोग ठंड के शिकार हुए।"

एक और वैज्ञानिक ने इन विपत्तियों की सूची जारी रखी—

"१९५७ में और भी अधिक मुसीबतें आईं। ऐसी अफ़वाहें सुनने में आईं कि पृथ्वी को कुछ हो गया है और किसी कारणवश जलवायु बदल गया है। मास्को में फ़रवरी में वसन्त आ गया और ताशकन्द तथा अल्मा-अता में बर्फ़ पड़ी। काले सागर में १० प्वायंट की हवा की तेज़ी के साथ तूफ़ान आया और उसके बाद ज़ोरों से बर्फ़ पड़ी। उसी समय आस्ट्रेलिया और उरुग्वाय में असाधारण गर्मी पड़ी और जंगल तथा मैदान गर्मी से झुलस गये..."

तीसरा वैज्ञानिक मंच पर आया।

"मैं आपको बताऊंगा कि अगले वर्ष में क्या हुआ। श्रीलंका में बाढ़ें आईं। संयुक्त राज्य अमरीका में असाधारण रूप से तेज़ बर्फ़ीले तूफ़ान आए। मास्को में मई के महीने में ज़ोरों की गर्मी पड़ी और उसके बाद बिजली की कड़क के साथ भयानक अग्निकाण्ड हुए। जापान में ऐसा सूखा पड़ा कि पानी का राशन किया गया।"

अगले वैज्ञानिक ने सूर्य की चर्चा की।

"सहयोगियो! यह सूर्य की अत्यधिक सक्रियता का समय है। सफ़ेद और दहकता हुआ ग्रह बहुत क्रुद्ध है। अतिकाय धमाके करोड़ों दर्जों तक गर्म सूर्य की गैसों के फ़व्वारों

को अन्तरिक्ष में फकते हैं। निश्चय ही आप जानते ह कि शक्ति के ये कण कार्पसल कहलाते हैं। प्रति सेकंड १,००० किलोमीटर की रफ़्तार से ये कार्पसल पृथ्वी की ओर दौड़ते हैं और पृथ्वी के वायुमंडल में घुस जाते हैं। हर ग्यारह वर्षों के बाद सूर्य ऐसा हंगामा करता है। कुछ ही समय पहले ऐसा ही हुआ था।

"पहले ज़माने में भी ऐसी प्राकृतिक मुसीबतें आती थीं। मगर उस ज़माने में लोगों के पास न तार की व्यवस्था थी, न रेडियो की और न हवाई जहाज़ ही थे। इसलिए दुनिया भर में क्या कुछ होता था, उन्हें उसकी जानकारी प्राप्त नहीं होती थी। इन विपत्तियों का उल्लेख करने और कारण जानने के लिए हम यहां पहली बार जमा हुए हैं। हम समझते हैं कि इसके लिए सूर्य ही दोषी है। हमारी राय में सूर्य हवा की अतिकाय तरंगों की गतिविधि को प्रभावित करता है जिनके कारण अचानक तूफ़ान आते हैं, बरसात और गर्मी होती है तथा पाला पड़ता है। स्पूतिक हमें बतायेगा कि हमारा अनुमान सही है या नहीं..."

जब मुझे ग्रह-पथ पर उड़ाया गया तो वैज्ञानिकों ने ऐसा ही कहा था। मैंने यानी स्पूतिक-३ ने यह कुछ देखा।

सौरमंडलीय हवा बह रही थी। वह बह रही थी दहकती हुई और तेज़ी से, वह उड़ रही थी अपने पंखों पर और गा रही थी यह गीत—

अन्तरिक्षी धूल, तुम जाओ सम्भल
शुक्र, मंगल तुम मुझे दो रास्ता।
मैं सितारों के जगत की नायिका
जो भी मेरे रास्ते में आएगा
मैं उसी की धज्जियां दूंगी उड़ा।।
तुम सुनो, पृथ्वी पुरातन, तुम सुनो
हैं इधर ब्रह्माण्ड में नक्षत्र तुमसे भी बड़े
तुम बहुत छोटी हो जिनके सामने
भेंट तुमसे भी कभी होगी ज़रूर।
किस जगह कब हो, निकट में या कि दूर।।
मैं जला दूंगी, मिटा दूंगी तुम्हें
धूल, केवल धूल ही रह जाएगी।
मेरी लपटों से न तुम बच पाओगी।
औ'न मानवजाति ही बच पाएगी।।

चाल, मेरी चाल, अनुपम चाल है।
मेरे पीछे अन्तरिक्षी धूल का भी जाल है।।
सूर्य की बेटी, अग्नि हूं, ज्वाल हूं।
मैं भयंकर वायु हूं, मैं काल हूं, विकराल हूं।।

मैं, स्पूत्निक-३, तो भयभीत हो उठा। अगर वातावरण इस गर्म हवा को बर्दाश्त न कर सका तो क्या होगा? तो सूर्य की गर्म सांस पृथ्वी की हर जीवित चीज़ को झुलसा डालेगी...

मगर हमारी पृथ्वी, हमारे मज़बूत और गोल ग्रह में जो ४,५०,००,००,००० वर्षों से क़ायम है उसे इन मामलों में कुछ अनुभव प्राप्त है और उसने आनेवाली हवा को अत्यधिक विश्वास के साथ अपनी ताक़त दिखाई। उसने सौरमंडलीय तेज़ हवा के मार्ग में अदृश्य अवरोध खड़ा कर दिया और इस ख़तरनाक मेहमान को चुम्बकीय फन्दे में फांस लिया। तेज़ी से बहनेवाले कार्पसल पकड़कर बन्दी बना लिए गए।

ख़तरनाक और अदृश्य कणों के दो विराटकाय चक्र पृथ्वी को घेरे हुए हैं। ये चक्र एक दूसरे के बीच में हैं और इनके केन्द्र में हमारी पृथ्वी है। बड़ा चक्र मेरे ऊपर लटका हुआ था और छोटे चक्र में मैंने कई बार उड़ान की। मैं तुम्हें बता देना चाहता हूं कि यह उड़ान बहुत सुखद नहीं थी। कौन भला ख़तरनाक विकिरण का सामना करना चाहता है!

मगर मेरे बाद अन्तरिक्ष में लोग उड़ान करेंगे, मशीनी इन्सान नहीं। उनके लिए किरणें अधिक ख़तरनाक हैं। मुझे अन्तरिक्ष-नाविकों की उड़ान के लिए सितारों के मार्ग की अवश्य ही खोज करनी थी।

छोटे स्पूत्निकों ने विकिरण के जिन दो चक्रों की खोज की मैंने बहुत ध्यान से और शान्त भाव से उनका अध्ययन किया। मैंने अपने को प्रयोगशाला में काम करते हुए वैज्ञानिक की भांति अनुभव किया। मैंने निरीक्षण किया, टिप्पणियां लिखीं और प्राप्त सूचना को पृथ्वी की ओर प्रसारित किया। मैं जानता था कि सैकड़ों वेधशालाएं, निरीक्षक और शौक़िया नक्षत्रशास्त्री मेरे इन संकेतों को, जिन्हें मैं चाहे किसी भी दिशा में क्यों नहीं भेजता था, प्राप्त कर रहे हैं। मैंने जो कुछ कहा लोगों ने उसे लिखा, अपनी टिप्पणियां लिफ़ाफ़ों में डालीं और उन्हें इस पते पर भेज दिया – 'मास्को – कोस्मोस' (अन्तरिक्ष)। या फिर उन्होंने तार द्वारा ये शब्द भेजे – 'मास्को – कोस्मोस'।
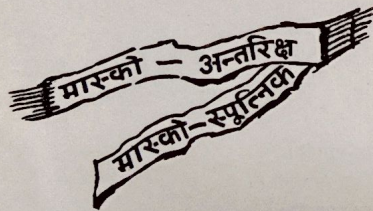
मैंने सावधान किया – "अन्तरिक्षीय किरणें ख़तरनाक हैं। अन्तरिक्ष-नाविको, अदृश्य गोलियों से सावधान रहना। प्रत्येक कण मानव-शरीर के १५,००० कोष्ठकों को नष्ट करता है। यह बहुत बड़ी संख्या नहीं है, क्योंकि मानवीय शरीर में खरबों कोष्ठक हैं। मगर जो भी हो इस शत्रु से सावधान रहना। तुम्हें इससे अपनी रक्षा का कोई मार्ग खोज लेना चाहिए। कवच-कक्ष का आविष्कार कर लो! ख़तरनाक हलक़े में उड़ान मत करो!..

अन्तरिक्षीय कण तेज़ी से इन दो चक्रों के अन्दर इधर-उधर घूमते रहे, मगर बाहर न निकल सके क्योंकि चुम्बकीय फन्दे ने इन्हें रोके रखा। किन्तु सबसे तेज़ और सबसे शक्तिशाली किरणें बाहर निकल गईं, वातावरण में उड़ीं, उन्होंने उसे गरमाया और पृथ्वी पर भारी गड़बड़ी पैदा की। मुझे फिर वैज्ञानिक की गंभीर आवाज़ सुनाई दी –

"प्राकृतिक विपत्तियों की संख्या आधी रह गई है। मगर पिछले वर्ष यानी १९५९ में वे सबसे अधिक दुखद रहीं। ब्राज़िल में लाखों लोग सूखे के कारण परेशान रहे। पांच समुद्री तूफ़ानों और उनके बाद आनेवाली बाढ़ों से मडगास्कर द्वीप बिल्कुल तबाह हो गया। जापान पर तूफ़ान गरजते रहे। मुसीबत के इस साल का अन्त हुआ मेक्सिको में एक भयानक झक्कड़ और यूरोप तथा अमरीका के सागर-तटों पर तूफ़ानों के साथ।"

पृथ्वी पर लोग स्पूत्निक की आवाज़ का इन्तज़ार कर रहे थे और मैं लगातार काम करता रहा ताकि मेरे संकेतों को आंकड़ों की भाषा में रिकार्ड करनेवाले वैज्ञानिक, समस्याओं को झटपट हल करने के लिए इलैक्ट्रोनिक कम्प्यूटरों से काम लें और इस प्रकार अन्तरिक्ष के रहस्यों का उद्घाटन करें।

मैं अन्तरिक्षीय प्रयोगशाला हूं। मैंने मानव के लिए मार्ग खोजा है। मुझे ख़ुशी है कि मैं उस समय जीवित हूं जब मानव अन्तरिक्ष-यात्रा के लिए तैयार हो रहा है। उसने अन्तरिक्ष-यान बनाए हैं और अपने निकटतम पड़ोसी चांद पर राकेट भेजे हैं। वह रहस्यपूर्ण नीले और हरे ग्रहों के दूरस्थ तारों की ओर उड़ान करने का और उस शक्तिशाली ईंधन को तैयार करने का सपना देख रहा है जो उनके राकेटों को प्रकाश की रफ़्तार देगा और इस तरह वे इन दूरस्थ सितारों तक पहुंच सकेंगे। मानव शक्तिशाली होना चाहता है और यह मानता है कि अन्तरिक्ष पर विजय प्राप्त करने के बाद वह देव बन जायेगा। तब वह पृथ्वी के गिर्द बड़े-बड़े स्पूत्निक भेज सकेगा जो अन्तरग्रहीय स्टेशनों का काम देंगे। वह चांद पर अन्य ग्रहों तक उड़ान करने के लिए अन्तरिक्षीय अड्डे बनायेगा और कहीं बहुत दूर किसी अजनबी नक्षत्र पर वह ऊर्जा प्राप्त किया करेगा जो उसे पृथ्वी पर लौटने के लिए पंख देगी।

मुझे विश्वास है कि ऐसा ही होगा। पृथ्वी से ही सारे ब्रह्माण्ड की ओर उड़ान की जायेगी...

वह दिन नज़दीक आता जा रहा है जब मैं जल जाऊंगा। अपना हर चक्कर पूरा करने के बाद मैं पृथ्वी के अधिक निकट होता जाता हूं। यद्यपि वैज्ञानिकों ने मेरी उम्र का जितना पूर्वानुमान लग गया था वह अवधि ख़त्म हो चुकी है तथापि मैं उड़ता चला जा रहा हूं, स्वतन्त्रता की उमंग से उमगता हुआ।

"यह कैसे हुआ?" वैज्ञानिक हैरान हुए। "क्या हमारे कम्प्यूटरों ने ग़लत हिसाब लगाया है?"

नहीं, इलैक्ट्रोनिक कम्प्यूटरों ने ग़लत हिसाब नहीं लगाया! उन्होंने दिए गए प्रश्न का सही उत्तर दिया था। वैज्ञानिक को एक और आश्चर्यजनक बात की जानकारी हासिल हुई। वैज्ञानिकों को यह आश्चर्य मेरे बड़े भाइयों—'लूनिकों'—से प्राप्त हुआ।

ये राकेट मेरी तुलना में, कहीं अधिक ऊंचाई पर उड़े थे। उन्होंने वहां से देखा था कि दुनिया सांस लेती है। हां, यह सही है, दुनिया सांस लेती है! जब मैंने अपनी उड़ान शुरू की तो सूर्य की गर्म हवा ने वातावरण को गर्मा दिया और वह फूल गया—मानो धरती ने गहरी सांस ली थी। जब मैं अपना काम कर रहा था तो हवा का खोल ठण्डा होकर सिकुड़ गया, ठीक उसी तरह जैसे सांस छोड़ने पर मनुष्य की छाती सिकुड़ जाती है। और मैं पीछे-पीछे उड़ता रहा। मैं ज़िन्दा रहा! इस तरह मुझे ज़िन्दा रहने तथा काम करने का एक और वर्ष मिल गया।

स्कूली बालकों की सबसे ख़ुशक़िस्मत पीढ़ी के बालको, क्या तुम जानते हो कि पृथ्वी मुकुट पहने हुए है? यह दुनिया का सबसे सुन्दर और सब से मूल्यवान मुकुट है क्योंकि यह वातावरण का प्राणदायक मुकुट है। अब मैं तुम्हें इसका आकार बता सकता हूं जो इतने लम्बे अर्से तक सारी मानव-जाति के लिए रहस्य बना रहा है। यह मुकुट २० हज़ार किलोमीटर मोटा है। यह कोई मामूली ऊंचाई नहीं है। इस मुकुट का आधार तो तुम निश्चय ही जानते हो। यह आधार हवा का बना हुआ है। शक्की जौहरी की भांति मैंने अपनी ऊंचाई पर कुछ नमूने लिए और मुझे सिर्फ़ हाइड्रोजन ही मिली। इस मुकुट में सबसे हल्की गैस की ही प्रधानता है। यह गैस कहां से आई? सूरज की किरणों ने इसे पानी से बनाया। गैस से भरे हुए गुब्बारों की भांति हाइड्रोजन हज़ारों किलोमीटरों तक ऊपर ही ऊपर चढ़ती चली गई है और उसने हल्के पारदर्शी मुकुट की भांति पृथ्वी के गिर्द घेरा डाल रखा है। इसके परे अन्तरिक्ष है, अन्तर्ग्रहीय अन्तरिक्ष है।

अब समझ गए ख़ुशक़िस्मत बालको कि तुम किस तरह की अदृश्य टोपी के नीचे रहते हो? तुम महसूस करते हो कि ब्रह्माण्ड में तुम किस जगह रह रहे हो?

दुनिया के गिर्द मैंने जो हज़ारों चक्कर लगाए और ऐसा करते समय मैंने जो

अनुभूतियां संचित कीं, उनके बारे में मैं अब अपनी रिपोर्ट समाप्त करता हूं। मैंने बहुत लम्बा रास्ता तय किया है। मैंने मंगल तक की आठ बार की यात्रा या शुक्र तक ग्यारह बार जाने के बराबर सफ़र किया है। रेडियो द्वारा मेरे शब्द तुम तक पहुंचेंगे।

कुछ दिनों बाद मैं नीचे जाता हुआ वातावरण की घनी तहों में जा पहुंचूंगा और तब आख़िरी चक्कर लगाऊंगा। मुझे अपने इस तरह ख़त्म हो जाने का बिल्कुल अफ़सोस नहीं होगा। मैं जानता हूं कि रुपहले अन्तरिक्ष-यान शीघ्र ही पृथ्वी पर वापस लौटेंगे। तब अन्तरिक्ष-नाविक मुझे याद करेंगे और मुझे बनानेवाले बुद्धिमान और साहसी लोगों को धन्यवाद देंगे।

नमस्कार! यह स्पूत्निक-३ है! यह स्पूत्निक-३ है..."

ल्यूबा ने जब आख़िरी हिस्सा समाप्त किया तो उसे लगा कि उसकी ज़बान बोलते-बोलते बिल्कुल सूख गई है। उसने इशारे से झटपट पानी लाने को कहा।

मानीटर पानी का गिलास लाए और उन्होंने कहा—

"व्याख्यान पैंतालीस मिनट तक चला।"

"ओह, पाठ का क्या हुआ! अगर माइक्रोफ़ोन काम न कर रहा होगा, तब?"

गेना ने दरवाज़ा खोल दिया और राहत की सांस ली: बरामदा, आधी छुट्टी के समय की भांति, बालकों से खचाखच भरा हुआ था। इसका मतलब यह था कि उन्होंने व्याख्यान सुना था।

आठवीं कक्षा का एक लम्बे बालों वाला लड़का भागता हुआ बोरीस के पास आया और बोला—

"ये तुम लोग ही थे जो इतनी देर व्याख्यान देते रहे? बहुत अच्छा किया! हमारी रेखागणित की परीक्षा गोल हो गई। अन्तरिक्ष के बारे में तुम लोगों का व्याख्यान ख़ासा अच्छा था। मन होता है कि वहां की उड़ान की जाए।"

इसी क्षण रेखागणित की अध्यापिका वहां पहुंच गई।

"सूख़ोव, रेखागणित की जानकारी के बिना तुम अन्तरिक्ष में उड़ान नहीं कर पाओगे।"

अध्यापिका इतना कहकर लाल-पीली होती हुई चली गई। इसी समय पोमेरान्चिक ने गेना की टांग लेते हुए कहा –

"हवा के बारे में कही गई कुछ पंक्तियां मुझे पसन्द आई! प्रसंगवश, यह कह दूं कि हवा के बारे में मैंने भी कविता रची है। ज़रा रुको, अभी याद करता हूं," इतना कहकर उसने अपने माथे को थपथपाया। "अरे हां, याद आ गई" –

हवा, अरी ओ हवा, बहुत तुम
तेज़, गरजती आती हो।
हठी बादलों को तुम ही तो,
अपने संग उड़ाती हो।।
ओले भी तो तुम्हीं गिराती,
तुम ही बरखा लाती हो।
खिड़की के शीशों पर टपटप,
बाजा तुम्हीं बजाती हो।।

"ख़रदिमाग़," गेना ने उसे टोका। "अरे, हम तो दूसरी हवा की, अन्तरिक्षीय हवा की बात कर रहे थे। ख़ाक भी नहीं समझे तुम। कवि बने फिरते हो!"

पोमेरान्चिक को गेना के शब्द बुरे लगे। वह यह भूल गया कि वह कक्षा का मुखिया और अनुशासन के लिए ज़िम्मेदार है। वह घूंसे तानकर गेना पर पिल पड़ा। वे हाथापाई करने और एक दूसरे को दीवार के साथ दबोचने लगे। वे ज़ाहिर ऐसा करते रहे मानो हंसी-मज़ाक़ में उलझ रहे हों।

पहले गेना के कोट का बटन टूटकर गिरा, फिर पोमेरान्चिक के कोट का। जब तीसरा बटन नीचे गिरा तो उन्हें अध्यापकों के कमरे में पहुंचाया गया।

"ठण्डे हो जाओ, लड़को!" गणित के अध्यापक ने शान्त भाव से कहा और सोफ़े की तरफ़ इशारा किया।

दोनों लड़के चुपचाप बैठ गए।

जब वे अध्यापकों के कमरे से बाहर आए तो गेना ने फुसफुसाकर कहा –

"सौरमण्डलीय हवा-सम्बन्धी कविता ल्यूबा ने रची थी। इसे कहते हैं कविता रचना!"

इस बार पोमेरान्चिक को याद रहा कि वह कक्षा का मुखिया है और उसने सिर्फ़ मुक्का ही दिखाया।

स्कूल में छुट्टी होनेवाली थी जब रेडियो-केन्द्र का मानीटर भागता हुआ ल्यूबा, गेना और बोरीस के पास आया।

"जल्दी से चलो, एक प्रतिनिधि-मंडल तुमसे भेंट करने आया है।"

गेना हैरान सा रह गया –

"प्रतिनिधि-मंडल? मेरे कोट के तो बटन टूटे हुए हैं," उसने कालर दिखाया।

"कोई फ़िक्र नहीं करो, उनका इस तरफ़ ध्यान नहीं जाएगा," मानीटर ने विश्वास दिलाया।

रेडियो-कक्ष में आठ बालकों का प्रतिनिधि-मंडल उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। ये पहली 'क', पहली 'ख', पहली 'ग' और पहली 'घ' कक्षाओं के बालक थे। उन्होंने एक रेखित काग़ज़ बढ़ाया।

"यह क्या है?" बड़े मानीटर ने पूछा।

"सूची है," प्रतिनिधियों ने एक स्वर में उत्तर दिया।

"कैसी सूची?"

"रेडियो के समाचारपत्र 'स्पूत्निक' के लिए!"

"लाओ, इधर दो।"

मानीटर ने उसे ऊंची आवाज़ में पढ़ा –

"१. नताशा बिलोवा
२. आलिक पेत्रोव
३. नीना ख़िन्नोवा
४. कोस्त्या स्मिर्नोव
५. योझिक कोवाल्स्की

"इन बालकों का जन्म ४ अक्तूबर को हुआ था। पहला स्पूत्निक भी इसी दिन छोड़ा गया था। इसलिए हम अनुरोध करते हैं कि इस सूची को 'स्पूत्निक' के अगले कार्यक्रम में शामिल कर लिया जाए।

"अच्छी बात है," मानीटर ने गम्भीरतापूर्वक कहा। "हम इसे 'स्पूत्निक' के अगले अंक में शामिल कर लेंगे।"

पहली कक्षा के बालक ख़ुश होते हुए चले गए।

ल्यूबा ने बोरीस को और बोरीस ने गेना को कुहनी मारी। वे तीनों उठाकर हंस पड़े। अब उनसे यह कहने की ज़रूरत नहीं रही थी कि उनका कार्यक्रम सफल रहा था।

बोरीस की पत्रकारों से भेंट

आखिर वह सुबह आई जब स्वप्नद्रष्टा उठा तो हैरान भी हुआ और खुश भी।

"क्या सचमुच ऐसा हो गया है?" उसने पूछा। उसे विश्वास नहीं हो पा रहा था कि जिस दिन का वह सपना देखता रहा है वह दिन आ गया है और शान्तिपूर्ण ढंग से मुस्करा रहा है।

नक्षत्रों में दिलचस्पी रखनेवाला हर व्यक्ति मई १९६० की उस सुबह को यान की चर्चा सुनकर बहुत खुश था। वह व्यक्ति चाहे अनुभवी और जीवन की भट्ठी में तपकर इस्पात बन चुका हो या चमकती आंखों वाला छोकरा हो।

हमारे स्वप्नद्रष्टा को खुशी देनेवाला यान न तो जलयान था, न युद्धपोत और न ही वायुयान। मगर यह तो एक नया यान था–अन्तरिक्ष-यान। वह पृथ्वी के गिर्द उड़ रहा था। स्वप्नद्रष्टा ने निर्णय किया–

"अन्तरिक्ष-यान बन गया है तो इसका अर्थ है कि शीघ्र ही उसमें यात्री भी उड़ान करेगा। ऐसा होना तो बिल्कुल लाज़िमी है!"

अन्तरिक्ष-यान की तेज़ी से ही दुनिया भर में एक और नया शब्द भी गूंज गया। अंग्रेज़ी, जर्मन और फ्रांसीसी भाषा में बात करते हुए भी इसी रूसी शब्द की गूंज सुनाई देती थी। जो कोई भी इसका ज़िक्र करता था यह जानता था कि अन्तरिक्ष में छोटा सा गेंद नहीं, बल्कि पूरे का पूरा हवादार, गर्म और आरामदेह कमरा उड़ रहा है। उसके गिर्द लगभग पूरी तरह शून्य था और [वहां गैसों का दबाव इस विराट स्पूत्निक के भीतर के दबाव की तुलना में दस अरब गुना कम था। यह बात सोचकर दिल में दहशत सी होती थी: अगर कक्ष की दीवारें दबाव बर्दाशत न कर सकीं और कैप्सूल फट गया तो?

मगर अन्तरिक्ष-यान एक के बाद एक चक्कर लगाता गया और कक्ष, घर की भांति, गर्म और हवादार बना रहा।

अगर इतना टिकाऊ कमरा है तो कोई इसमें रहेगा भी ज़रूर!

आकाश के सबसे चमकदार सितारे को देखने के लिए शाम का झुटपुटा होने तक स्वप्नद्रष्टा ने बहुत मुश्किल से इन्तज़ार किया। उसे दूरबीन की भी ज़रूरत नहीं थी। वह तो अपनी आंखों से ही इस यान को देख सकता था। वह प्रतीक्षा करता रहा, करता रहा और फिर अचानक उसका मन उदास हो गया।

जैसे ही आकाश सितारों से
जगमग करने लगता है
वैसे ही तो हरे-हरे बिल्लो
वृक्षों में घिरा हुआ
एक जहाज खड़ा करता है,
एकाकी कृश-काया-सा
वीराने की छाया-सा

क्या कवि इसी यान के बारे में सोच रहा था? नहीं, निश्चय ही नहीं! तो स्वप्नद्रष्टा उदास क्यों हो गया? बात यह है कि हज़ारों लोग रात्रिकालीन आकाश को ताक रहे थे और हज़ारों अन्य लोग इसलिए क्षुब्ध थे कि अन्तरिक्ष-यान उनके देश के ऊपर से दिन के समय गुजर रहा था जब कि उसे देख पाना मुमकिन नहीं था।

इस जहाज पर, नहीं जहाजी भी दिखता
नहीं मंच पर दिखता है कप्तान हमें...

कोई कप्तान नहीं... कप्तान के बिना यान... ख़ाली यान जिसमें मनुष्य नहीं केवल चीज़ें हैं... मगर क्या कप्तान की जरूरत भी है? किसलिए उसकी जिन्दगी ख़तरे में डाली जाए? अन्तरिक्ष में तो बहुत ही ख़तरनाक विकिरण पाया जाता है। वहां गोलियों की तुलना में सौ गुनी अधिक रफ़्तार से उल्काएं उड़ती रहती हैं। उनके तो बहुत ही छोटे-छोटे कणों से भी टकराना बहुत ख़तरनाक है। कारण कि वे कैप्सूल की दीवारों को बेध सकती हैं। उनके सामने मनुष्य अपने को बिलकुल विवश, असहाय अनुभव करेगा: वह जब तक ख़तरे का अनुमान लगा पाएगा तब तक एक-दो सेकंड तो गुजर ही जायेंगे और इसी बीच अन्तरिक्ष-यान कई किलोमीटरों का फ़ासला तय कर जाएगा। तो क्या इलैक्ट्रोनिक मस्तिष्क पर विश्वास करना अधिक उचित नहीं होगा?.

हां, कम्प्यूटरों पर भरोसा करना अधिक अच्छा होगा। वे राकेट का निर्देशन करेंगे, ख़तरों से उसे बचाएंगे और आवश्यक होने पर अन्तरिक्ष-यान का मार्ग बदल देंगे।

मगर अन्तरिक्ष-यान का कोई कमांडर होना तो लाज़िमी बात है। क्या वही चांद के सागरों की खोज और मंगल के रहस्यों का उद्घाटन नहीं करेगा? क्या वही किसी अज्ञात नक्षत्र पर पहुंचने की आशा करते हुए राकेट को रास्ते में नहीं रोकेगा? वही

कम्प्यूटरों को आदेश देगा! कम्प्यूटर तो केवल दिशा-निर्देशक है, कमांडर होगा कोई इन्सान!

अन्तरिक्ष-यान की प्रतीक्षा करते और इसी तरह की बातें सोचते हुए स्वप्नद्रष्टा दूर के नक्षत्रों की यात्रा के बारे में चिन्तन करते रहे।

इन्हीं लोगों के बीच अन्तरिक्ष-यान का एक असली कमांडर भी था। दूसरों की भांति वह भी आकाश को ताक रहा था और अन्तरिक्ष-यान में उड़ान करने को बहुत ही उत्सुक था। मगर ऐसा करना असम्भव था। कारण कि एक भी अन्तरिक्ष-यान अभी तक पृथ्वी पर नहीं लौटा था और डाक्टरों को अन्तरिक्ष से सही-सलामत पुनःप्रवेश की सम्भावना के बारे में पूरा यक़ीन नहीं था। यह बड़े अफ़सोस की बात थी: अन्तरिक्ष का द्वार मिल गया था, मगर किसी के पास अभी उसकी चाबी नहीं थी।

हर कोई आख़िरी क़दम की कठिनाइयां समझता था और घटनाक्रम के आगे बढ़ने की प्रतीक्षा में था...

शीघ्र ही सूचना दी गई—

"सोवियत संघ वातावरण की ऊपरी तहों और अन्तरिक्ष में भूभौतिकी राकेटों की सहायता से अपना अनुसन्धान-कार्य जारी रख रहा है...

अनुसन्धान-कार्यक्रम के अनुसार एक स्तरीय बैलिस्टिक राकेटमाला का एक और राकेट जून १९६०. में उड़ाया गया...

इस राकेट की उड़ान सफल रही। यह राकेट २०८ किलोमीटर की ऊंचाई तक गया...

राकेट में उड़ाए गए जानवर अच्छी हालत में वापस आए।

दिलेर नामक कुत्ते ने अन्तरिक्ष में पांचवीं उड़ान की..."

उक्त शान्त वक्तव्यों को पढ़-सुनकर बहुत से बेक़रार सम्वाददाता सुबह ही सुबह संस्थान के दरवाज़े पर जमा हो गए। सदा की भांति वे उतावली मचा रहे थे। मगर उनकी दिलचस्पी के पात्र सामने आने में देर कर रहे थे। डाक्टर घर के किसी कक्ष में उनकी जांच कर रहे थे।

संवाददाता फाटक के गिर्द भीड़ लगाए खड़े थे और देर से पहुंचनेवालों का मज़ाक़ उड़ा रहे थे।

अस्तव्यस्त बालों वाला एक व्यक्ति कंधे पर टेप-रिकार्डर लटकाए हुए हांफता हुआ आया।

"क्या वे गए?" उसने परेशान होते हुए पूछा।

"तुमसे भेंट किए बिना वे कैसे जा सकते थे!" किसी ने जवाब दिया। "जल्दी करो, माइक्रोफ़ोन निकालो। साथियो, कार्यक्रम शुरू होता है," ठिठोलिए ने उद्घोषक के अन्दाज़ में कहा, "हम अन्तरिक्षीय अनुसंधान-संस्थान के आंगन से बोल रहे हैं। मैं आपको विश्व-विख्यात अन्तरिक्ष-नाविक का परिचय दूंगा और उससे अनुरोध करूंगा कि वह आपसे अपने स्वास्थ्य के बारे में दो शब्द कहे। आप यह कचर-कचर की आवाज़ सुन रहे हैं न? हमारा अन्तरिक्ष-नाविक है एक ख़रगोश जिसका नाम है नन्हा तारा। वह बड़े मज़े से पत्ता-गोभी का नाश्ता कर रहा है। ज़ाहिर है कि वह बिल्कुल भला-चंगा है!"

रेडियो-संवाददाता ने प्रशंसा करते हुए इस भाषण को सुना, अन्य लोगों के साथ हंसा और कहा—"पत्तागोभी की कचर-कचर के बारे में तुम क्या जानो? तेज़ हवा की शांय-शांय को रिकार्ड करने के लिए मैं माइक्रोफ़ोन उठाए हुए शान्त महासागर तक हो आया हूं। तुम्हारा गूंगा काग़ज़ भला हवा की शक्ति का आभास करवा सकता है?!"

यह सच बात थी। सारे देश ने रेडियो द्वारा शान्त महासागर में आए हुए एक तूफ़ान की गरज सुनी थी और सभी लोग यह जान पाए थे कि तूफ़ान के दौरान एक जहाज़ के जहाज़ियों ने किस तरह काम किया था। हहराती हुई लहरों के तट पर टकराने के शोर, तेज़ हवा की सीटियों, मन में विश्वास पैदा करनेवाली इंजनों की फक-फक और प्रकृति की अन्धी शक्तियों के विरुद्ध मानव के मोर्चे से सम्बन्धित सभी वास्तविक आवाज़ों ने श्रोताओं के मन में वीर जहाज़ियों के प्रति गर्व की भावना पैदा कर दी थी। रेडियो-संवाददाता ने उस समय निश्चय ही बहुत बढ़िया काम किया था!

सफ़ेद चोग़ा पहने हुए एक लड़की फाटक पर दिखाई दी। संवाददाताओं ने उसे फ़ौरन घेर लिया। यह वाल्या थी। वह मुस्कराई। उसकी मुस्कान मानो कह रही थी कि मैं संवाददाताओं द्वारा दिए गए ध्यान, सुबह की ताज़गी और कुछ ही समय पहले डाक्टर बनने की चेतना के कारण ख़ुश हूं।

"नायक कहां हैं?" संवाददाताओं ने पूछा।

"अभी उनकी डाक्टरी जांच हो रही है, मगर जल्द ही वे आपके सामने आएंगे। कहिए, इस बीच मैं आपको क्या बताऊं? उड़ान के बारे में कुछ चर्चा करूं?"

"नहीं, हमें अपने बारे में बताइये। आप अन्तरिक्षीय डाक्टर कैसे बनीं?"

वाल्या झेंप गई। उन्होंने यह कैसे अनुमान लगाया कि अब वह परीक्षण-कुत्तों का प्रशिक्षण करेगी?

"अपने बारे में बताने के लिए तो कुछ ख़ास नहीं है," वाल्या ने कहा। "मैं स्कूल की पढ़ाई समाप्त करके यहां सहायिका के रूप में काम करने लगी और साथ ही मैंने कालेज की पढ़ाई जारी रखी। अब मैं डाक्टर हूं। बस इतनी ही है मेरी कहानी।"

"अब हमें उड़ान के बारे में बताएं।"

"आज की तरह बढ़िया दिन था," वाल्या ने कहा। "दिलेर शान्त-स्थिर था। उसे देखकर मालेक की भी, जो पहली उड़ान कर रहा था, दिलजमई हुई। नन्हे तारे के बारे में हमें कोई शिकायत नहीं है। उसे देखकर आप कभी यह बात मानने को तैयार नहीं होंगे कि सभी ख़रगोश बहुत डरपोक होते हैं। तब उड़ान के पहले के आख़िरी घंटे के पल रेंगते हुए बीते: आध घंटा रह गया... पन्द्रह मिनट रह गए... उड़ान बिल्कुल ठीक-ठाक हुई। हम राकेट के पृथ्वी पर लौटने के बारे में चिन्तित थे क्योंकि इस बार वह बहुत भारी था। मगर हर चीज़ बहुत सफल रही। बहुत बड़ा पैराशूट ठीक वक़्त पर खुल गया था। हम हेलीकाप्टर द्वारा फ़ौरन वहां पहुंचे जहां राकेट उतरा था।"

"मैं एक सवाल पूछना चाहता हूं," एक संवाददाता ने कहा। "इस राकेट का वज़न, जिसमें कुत्तों और ख़रगोश ने उड़ान की, दो टन से अधिक था। हमारे प्रथम स्पूत्निक के केबिन का भी लगभग इतना ही वज़न था। ठीक है न? दिलेर के साथ अन्तरिक्ष-यान के सफलतापूर्वक पृथ्वी पर उतरने का अगले अन्तरिक्ष-यान के लिये क्या कोई विशेष महत्त्व है?"

"मैं तो ऐसा ही समझती हूं," वाल्या ने सहमति प्रकट करते हुए कहा। "मैं इंजीनियर नहीं हूं, मगर आपके प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश करूंगी। पृथ्वी के गिर्द स्पूत्निक की उड़ान और राकेट की ऊंची-नीची उड़ान, दो भिन्न चीज़ें हैं। स्पूत्निक के पृथ्वी पर उतरने के पहले वह ध्वनि की गति से कई गुना ज्यादा तेज़ी से यात्रा करता है और इसका बाहरी खोल दो या तीन हज़ार दर्जे तक गर्म हो जाता है। मगर हम अपने तजरबों के आधार पर अन्तरिक्ष-यान को पृथ्वी पर लौटाने की बहुत ही विश्वसनीय विधि का विकास कर पाए हैं। ज़रा ख़्याल कीजिए कि एक भारी ट्रक को हवा में ऊंचा उठाने के लिए कितनी बड़ी शक्ति की ज़रूरत हो सकती है। हमारे राकेट का लगभग इतना ही वज़न है। अब आप उस पैराशूट की कल्पना करें जिसे इस ट्रक को बहुत आराम से पृथ्वी पर उतारना है क्योंकि इसमें तीन प्राणी हैं! मैं आपको यह बताए बिना नहीं रह सकती कि इन तीनों प्राणियों – दिलेर, मालेक और नन्हे तारे – को कोई खरोंच या ख़राश तक नहीं आई! है न यह कमाल की बात?"

"बेशक कमाल की बात है," प्रश्न पूछनेवाले संवाददाता ने वाल्या का समर्थन किया। "इंजीनियर-सम्बन्धी अचूकता के बारे में आपने जो कुछ कहा है, वह सभी मेरी समझ में आ गया है। धन्यवाद!"

"लो, वे आ गए, हीरो," कोई चिल्ला उठा।

वसीली छोटे-छोटे दो सफ़ेद कुत्तों के साथ दरवाज़े में आकर खड़ा हो गया था। संवाददाताओं ने इन छोटे-छोटे अन्तरिक्ष-नाविकों को फ़ौरन घेर लिया।

छायाचित्रकारों ने तीनों अन्तरिक्ष-नाविकों के तरह-तरह के पोज लिए।

सिने-कैमरामैन ने छायाचित्रकारों के काम में बाधा डालते हुए पूरी फ़िल्म ख़त्म कर डाली। संवाददाताओं ने डाक्टर पर धावा बोलते हुए बहुत ही अप्रत्याशित प्रश्न पूछे। एक युवा संवाददाता इसी प्रश्न की रट लगाए रहा कि दिलेर को मांस ज्यादा पसन्द है या हलवा। वसीली इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाया।

इस शोर-शराबे के दौरान सिर्फ़ एक आदमी चुपचाप खड़ा रहा। यह था रेडियो-संवाददाता कंधे पर टेप-रिकार्डर लटकाए हुए। छायाचित्रकारों का जोश जब ठण्डा पड़ गया तो वह छोटे-छोटे अन्तरिक्ष-नाविकों के पास गया।

"मियां ज़रा भलमनसाहत दिखाओ और ज़ोर से भौंको!" दिलेर के सामने माइक्रोफ़ोन रखते हुए उसने कहा। रेडियो-संवाददाता ने कुछ ऐसे गम्भीर अन्दाज़ में यह बात कही कि उसके किसी दोस्त तक को हंसी नहीं आई।

धूप में अपनी आंखें मिचमिचाते और गर्मी के कारण ज़बान लपलपाते हुए दिलेर ने संजीदगी से रेडियो-संवाददाता की ओर देखा। वह क्या चाहता है, दिलेर यह समझ नहीं पा रहा था।

मगर मालेक अचानक कूदकर आगे आया और उसने कुत्ते के अनुरूप सहजता के साथ रेडियो-संवाददाता की नाक चाट ली।

"ओह!" रेडियो-संवाददाता ने ख़ुश होकर कहा। "इसके बदले में अब तुम्हें भौंकना भी होगा।"

मालेक ख़ुशी से भौंक उठा।

प्रसारण के लिए इस महत्त्वपूर्ण आवाज़ को रिकार्ड करने के बाद रेडियो-संवाददाता आंगन में चला गया और घास पर बैठकर माइक्रोफ़ोन के सामने बोलने लगा –

"हम उस संस्थान के आंगन से बोल रहे हैं जिसने दिलेर और मालेक नामक कुत्तों और नन्हा तारा नामक ख़रगोश को अन्तरिक्ष में भेजा। आप जो शोर सुन रहे हैं वह,

यदि आप अनुमति दें तो कहूं, लौटे हुए अन्तरिक्ष-नाविकों से भेंट करनेवाले संवाददाताओं का है..."

रेडियो-संवाददाता ने माइक्रोफ़ोन के सामने और क्या कुछ कहा, वह दूसरे संवाददाताओं ने नहीं सुना क्योंकि अचानक उनका ध्यान किसी दूसरी तरफ़ खिंच गया था।

सिर्फ़ चौकीदार ने ही फाटक में से आने के बजाय दो चुस्त और फुर्तीली आकृतियों को सलाखों के बीच से गुज़रते हुए देखा।

चौकीदार ने दबे पांव बाड़ के साथ-साथ और फिर वृक्षों के बीच से इन लड़कों का पीछा किया। वह इन्हें पकड़ ही लेता कि लड़के सिर पर पांव रखकर भाग खड़े हुए। एक लड़के की उत्तेजित और ऊंची आवाज़ ने बातचीत में बाधा डाल दी।

"बॉबी! बॉबी!" आगे-आगे भागनेवाला लड़का चिल्ला रहा था।

दिलेर बड़ी-बड़ी छलांगें लगाता और अपनी लम्बी ज़ंजीर को अपने पीछे-पीछे घास में से घसीटता हुआ उससे मिलने दौड़ा। दिलेर उछलकर लड़के की छाती से जा चिपटा और उसने लड़के का मुंह चूमा।

बोरीस घुटनों के बल बैठ गया, बॉबी का सिर उसने अपने घुटनों पर रख लिया और उसकी प्यारी तथा दयालु आंखों में झांकते हुए अजीब और रुआंसी आवाज़ में उससे बातचीत करने लगा। उसकी बातचीत पिछले कई महीनों की उसकी हताशा को भी व्यक्त कर रही थी और पुनर्मिलन की ख़ुशी को भी।

"बॉबी, बॉबी," सिर्फ़ उसे ही देखते हुए बोरीस ने कहा।

"यह मैं हूं, बोरीस, तुम्हें याद है न? पहचानते हो मुझे? तब वह सब तो निरी हिमाकत

ही हो गई थी। मैंने समझा था कि तुमसे फिर कभी, फिर कभी मुलाक़ात नहीं होगी... अरे, कितने बड़े हो गए हो तुम! कितने मज़बूत भी! तुम्हें यहां अच्छा लगता है, बॉबी? तुम्हें मेरी याद सताती थी क्या?"

बॉबी ने अपने भूतपूर्व मालिक को ध्यान से देखा। उसकी दुम कह रही थी कि वह अपने दुख को बहुत समय पहले ही भूल चुका है, कि उसे उसकी याद सताती रही थी और यह कि फिर से मुलाक़ात होने पर वह ख़ुश था। वह ख़ुश ही नहीं, बहुत ख़ुश था।

वसीली चश्मे के पीछे अपनी आंखें मिचमिचाता निकट आ रहा था। दिलेर ने मुड़कर उसकी तरफ़ देखा और उसकी दुम और भी अधिक तेज़ी से हिलने लगी। हां, बोरीस को देखकर और उसकी आवाज़ सुनकर उसे ख़ुशी हो रही थी। मगर साथ ही इस संस्थान में दयालु वसीली के साथ उसकी ख़ूब अच्छी गुज़र रही थी। इसलिए वह दोहरी ख़ुशी महसूस कर रहा था।

"यह तुम्हारा कुत्ता है क्या?" वसीली ने हैरान होते हुए पूछा। "तुमसे मिलकर ख़ुशी हुई।"

बोरीस की बाछें खिली हुई थीं। वह उठकर खड़ा हुआ।

"हां, यह मेरा बॉबी है! मैं हर जगह इसकी तलाश करता रहा हूं। और तभी..." वह अपनी बात पूरी न कर पाया। अपने चारों ओर जिज्ञासा भरे चेहरे देखकर वह झेंप गया।

"यह मिलन भी ख़ूब रहा!" एक संवाददाता ने मुस्कराते हुए कहा। "बेटे, तुमने कहा कि दिलेर को तुम पहले बॉबी के नाम से पुकारते थे? बड़ी दिलचस्प बात है यह।"

बोरीस पर अब सवालों की झड़ी लग गई।

"तुमने यह कुत्ता खोया कैसे?"

"तब इसे क्या कुछ करना अच्छा लगता था?"

"जब यह तुम्हारे पास था तो इसे मांस पसन्द था?"

"कितने अरसे तक तुम इसकी तलाश करते रहे?

सम्वाददाताओं ने इतने अधिक प्रश्न पूछे कि बॉबी के सम्बन्ध में बोरीस जो कुछ जानता था उसे सभी कुछ बताना पड़ा।

जंगला लांघकर आनेवाले दूसरे लड़के की तरफ़ किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। सिर्फ़ एक पत्रकार ने उसकी ओर ध्यान देते हुए कहा—

"मैं जानता था, मुझे मालूम था कि तुम यहां आओगे!"

"पिताजी!" गेना ख़ुशी से चिल्ला उठा। "हमने बॉबी को खोज लिया है!"

"मैंने सब कुछ देख लिया है," अनातोली करातोव ने कहा।

बोरीस जब अपनी कहानी सुना चुका तो करातोव उसके पास गया –

"मैं बहुत ख़ुश हूं, तुम्हें ख़ुश देखकर, बोरीस। जब तुम्हारा कुत्ता खो गया था तो मुझे बहुत दुख हुआ था।"

"यह हमारा क़सूर था," बोरीस ने स्वीकार किया। "मेरा और गेना का क़सूर था। पर यदि," शरारत से अपनी आंखें सिकोड़ते हुए उसने कहा, "पर यदि बॉबी खो न जाता तो कभी दिलेर न बन पाता। अब वह सारी दुनिया में मशहूर हो गया है।"

बोरीस रुका अपनी इस खोज पर आश्चर्यचकित सा! फिर उसने वसीली को सम्बोधित करते हुए कहा –

"डाक्टर, क्या हम कभी-कभी दिलेर को देखने आ सकते हैं? मैं और गेना? हम आपके काम में बाधा नहीं डालेंगे।"

"ज़रूर आ सकते हो," वसीली ने सहमति प्रगट की। "ज़रूर ही आना तुम लोग।"

"बोरीस! बोरीस!" गेना ने अपने दोस्त की पीठ पर चुटकी काटी। "बड़े ख़ुशक़िस्मत हो तुम! तुम्हें बॉबी मिल गया और अब वह विश्व-विख्यात अन्तरिक्ष-नाविक है!"

गेना ने उदासी से अपने पिता की ओर देखा। उसकी आंखें मानो कह रही थीं कि दुनिया में ख़ुशी का बंटवारा बराबर नहीं होता।

मगर बोरीस ने गेना की बात नहीं सुनी। वह बॉबी से विदा ले रहा था।

"मैं आऊंगा," बोरीस ने बॉबी के कान में कहा। "तुम बिल्कुल फ़िक्र न करना! मैं फिर आऊंगा।"

अन्तरिक्ष की चाबी

कुछ समय बाद एक और अन्तरिक्ष-यान उड़ाया गया। उसमें स्त्रेल्का और बेल्का नामक कुत्तों ने उड़ान की।

तब वैज्ञानिक बहुत चिन्तित रहे। टेलीविजन के पर्दे पर दो गतिहीन छविचित्र दिखाई दे रहे थे। कुत्ते जीवित हैं या नहीं?

अन्तरिक्ष-यान पृथ्वी के गिर्द चक्कर लगाने लगा तो उन कुत्तों में ज़िन्दगी आ गई। वे हिलने-डुलने लगे।

स्त्रेल्का ने अपनी चपटी नाक हिलाकर मानो कहा–"हां, हम ज़िन्दा हैं!" इसका काला-काला कान और आंख के गिर्द वाला काला-काला धब्बा मानो ख़ुशी से कह रहा था कि उसमें ज़िन्दगी की धड़कन क़ायम है। फूले-फूले रोयों वाले बेल्का ने अपने पंजों से सिर ऊपर उठाया और मानो यह कहा–"नहीं, हम डरे नहीं थे! कुछ चिन्ता न कीजिये..."

शुरू में तो वे अपने मज़बूत पंजों को क़ाबू में नहीं रख पा रहे थे। उनके मज़बूत पंजे अचानक क़ाबू से बाहर हो गये थे। उन्हें अपने पंजों पर ग़ुस्सा आया और वे भौंके भी। फिर वे भारहीनता की स्थिति के अभ्यस्त हो गये और सदा की भांति रंग में आ गये। तब उन्होंने स्वसंचालित फ़ीडर की ओर ध्यान दिया और अन्तरिक्ष में पहली बार नाश्ता किया।

अन्तरिक्ष-यान ने अन्तरिक्ष में मानो वॉल्ज़-नृत्य करते हुए बहुत से चक्कर लगाये। भारहीन यात्री जीवित और इधर-उधर हिलते-डुलते रहे। वैज्ञानिक पर्दे पर दिखाई देनेवाले जीवित चित्रों को लगातार देखते रहे।

"बेल्का और स्त्रेल्का, चूहे और चुहियां तथा बाक़ी सभी जीव जीवित और ठीक-ठाक हैं," रेडियो द्वारा दुनिया भर में इस बात की घोषणा की गई।

पृथ्वी का संकेत पाकर अन्तरिक्ष-यान नीचे आया। पैराशूट का सफ़ेद गुम्बज़ खुल गया और अन्तरिक्ष-यात्री एक मैदान में उतरे। लोग अपना काम-काज छोड़कर मेहमानों का स्वागत करने के लिए दौड़े।

"यह तो करिश्मा ही हो गया," सामूहिक किसानों ने ख़ुश होते हुए कहा। "हम यहां काम कर रहे थे, ट्रेक्टर जुताई कर रहा था और अचानक एक राकेट में अन्तरिक्ष-नाविक हमारे पास आ पहुंचे! ज़रा कल्पना कीजिये! यह तो बिल्कुल वही बात हुई कि भगवान जब दौलत देता है तो छप्पर फाड़कर। हम ही सबसे पहले इस अजूबे को देख रहे हैं।"

वैज्ञानिक हेलीकाप्टर में वहां पहुंचे। उन्होंने स्त्रेल्का और बेल्का को कक्ष से बाहर निकाला और एक-दूसरे को बधाई दी। उनके लिए पृथ्वी पर सुरक्षित लौटनेवाले इन प्रथम अन्तरिक्ष-यात्रियों बेल्का और स्त्रेल्का से बढ़कर और क्या पुरस्कार हो सकता था!

"ये हमारे लिए अन्तरिक्ष के द्वार की चाबी लेकर आये हैं!" इधर-उधर फुदकते हुए कुत्तों को देखकर एक वैज्ञानिक ने कहा। तब उसने उस मैदान की ओर देखते हुए, जहां सफ़ेद पैराशूट पड़ा हुआ था, यह और कहा–"लेनिनग्राद में कुत्ते का और पेरिस में मेंढक का स्मारक है। अकादमीशियन इवान पाव्लोव और फ़ांसीसी शरीरशास्त्री क्लॉड बेर्नार्ड यह मानते थे कि इन जानवरों ने विज्ञान की बहुत सेवा की है और इसीलिए इनके स्मारक बनाकर इन्हें अमर कर दिया गया है। किसी दिन इसी मैदान में सर्वप्रथम सफल अन्तरिक्ष-नाविकों, बेल्का और स्त्रेल्का, के सम्मान में एक स्मारक नज़र आयेगा। किसी दूसरी जगह लाइका का स्मारक भी बनाया जायेगा।"

नगर में एक छोटा सा बगीचा है। बगीचे में एक साधारण सा स्मारक है जो सभी ओर से फूलों से घिरा हुआ है। ऊंचे भूरे चबूतरे पर त्सिओल्कोव्स्की का बस्ट खड़ा है। यह बस्ट गुलाबी ग्रेनाइट का बना हुआ है। उदास दिनों में भी वैज्ञानिक का चेहरा मानो धूप में चमकता हुआ दिखाई देता है। हमारे नायक बोरीस और गेना अक्सर यहां आते हैं। वे हमेशा किसी बात पर विचार-विमर्श और अक्सर गर्म-गर्म बहस करते रहते हैं। उनका बहस करते जाना स्वाभाविक है। कारण कि अभी तक वैज्ञानिक भी अन्तरिक्ष के सभी रहस्यों की तह तक नहीं पहुंच पाये हैं।

बड़ी-बड़ी आंखों वाली एक लड़की अक्सर इन बहस करनेवालों के पास उसी बेंच पर या पास वाली बेंच पर बैठी रहती है। बातचीत जब कामकाजी और शान्तिपूर्ण ढंग से होती रहती है तो वह उनकी ओर कोई ध्यान नहीं देती है, आकाश को ताका करती है और पांव इधर-उधर हिलाती-डुलाती हुई अपने ही विचारों की दुनिया में खोई रहती है–

राकेटों पर क्यों हमारे हैं सितारे?
सैनिकों की फीतियों पर भी सितारे?
हैं ध्वजाओं पर हमारे लाल तारे।
नील नभ में चमकते नभ के दुलारे।।

चित्रकार को बगीचे का सबसे अलग-थलग कोना पसन्द है। पिछले कुछ समय से उसकी तबीयत संभल गई है और अब खुली हवा में काम करना उसे अच्छा लगता है। जब हर चीज़ ठीक ढंग से हो जाती है और उसका चित्र सफल रहता है तो वह मुस्कराता है और उसकी पेंसिल और भी अधिक तेज़ी से चलने लगती है।

आओ, हम दबे पांव उसके पास चलें ताकि उसके काम में बाधा न पड़े।

अहा! हमारे नायक चित्र में दिखाई दे रहे हैं। अन्तरिक्ष-यात्री बोरीस स्मेलोव अब एक अच्छा-ख़ासा जवान हो चुका है और वह अन्तरिक्ष में लम्बी यात्रा की तैयारी कर रहा है। यह दिल में दहशत पैदा करनेवाला क्षण है! बोरीस की बूढ़ी मां और क्षुब्ध ल्यूवा की आंखों में बरबस आंसू छलकते आ रहे हैं... मगर गेना करातोव कहां है? वह रहा – वह सूराख़ में से झांक रहा है। बेक़रार वैज्ञानिक अन्तरिक्षीय पोशाक पहन भी चुका है और हाथ हिलाकर अपने साथी को बुला रहा है।

यह है एक और रेखाचित्र! अन्तरिक्षीय युग जब अपनी चरम सीमा पर पहुंचेगा तो प्रौद्योगिकी उस स्तर पर जा पहुंचेगी कि हफ़्ते की छुट्टी के दिन ध्रुवतारे की यात्रा करना संभव होगा...

हमारे यात्री पृथ्वी के रहनेवाले हैं और वे अपने घर लौटेंगे।

इसके बाद क्या हुआ है, यह हम नहीं देख पाये – क्योंकि चित्रकार ने अपना एल्बम बन्द कर दिया है। वह अपने घर जाकर रेखाचित्रों में रंग भरेगा और फिर बढ़िया उपहार के रूप में अपने युवा मित्रों को भेंट करेगा।

प्रिय पाठको! अगर आप एक पुरानी इमारत वाले छायादार आंगन में कभी जा पहुंचें तो शायद हमारे चौपाये नायकों से वहां आपकी भेंट हो जाये। आंगन में इधर-उधर दौड़ते हुए कुत्तों में मस्तमौला कोज़्याव्का, हमेशा साथ रहनेवाले बेल्का और स्त्रेल्का तथा सुस्त और जम्हाइयां लेनेवाले पाल्मा को आप फ़ौरन पहचान लेंगे। और ये तंग करनेवाले मोटे-मोटे और इधर-उधर फुदकनेवाले पिल्ले किसके हैं? वे किसी बड़े कुत्ते पर झपटते हैं और जब उन्हें घुड़की मिलती है तो वे अपनी रक्षा के लिए काले कानों वाली स्त्रेल्का के पास भाग जाते हैं। ये मस्त और मोटे-ताज़े पिल्ले स्त्रेल्का के हैं। संस्थान के लोग अक्सर इन्हें मेहमानों को दिखाते हैं। "ये पिल्ले इनकी मां के अन्तरिक्ष से लौटने के बाद पैदा हुए हैं," डाक्टर मेहमानों को बताया करते हैं। "इसका मतलब है कि अन्तरिक्षीय विकिरण जैसा समझा जाता है वैसा ख़तरनाक नहीं है। ज़रा देखिये तो ये कैसे मोटे-ताज़े हैं।"

निश्चय ही इस आंगन में एक गंभीर सफ़ेद कुत्ते की ओर आपका ध्यान जायेगा। कारण कि यह कुत्ता ही इधर-उधर शरारतें करते हुए पिल्लों को ठीक वक़्त पर रोक देता है और कुल मिलाकर व्यवस्था क़ायम रखता है। यह दिलेर है। यह मत समझिये कि वह अपनी शान दिखा रहा है! बात सिर्फ़ इतनी है कि वह बड़ा हो गया है, उसने अपने काम में कुशलता प्राप्त कर ली है और उसमें एक कामगार का सा गर्व पैदा हो गया है।

मगर बोरीस के जंगले के निकट आते ही दिलेर का वह नपा-तुला और गंभीर अन्दाज़ ग़ायब हो जाता

51
मार-को - ध्रुवतारा
R.P.
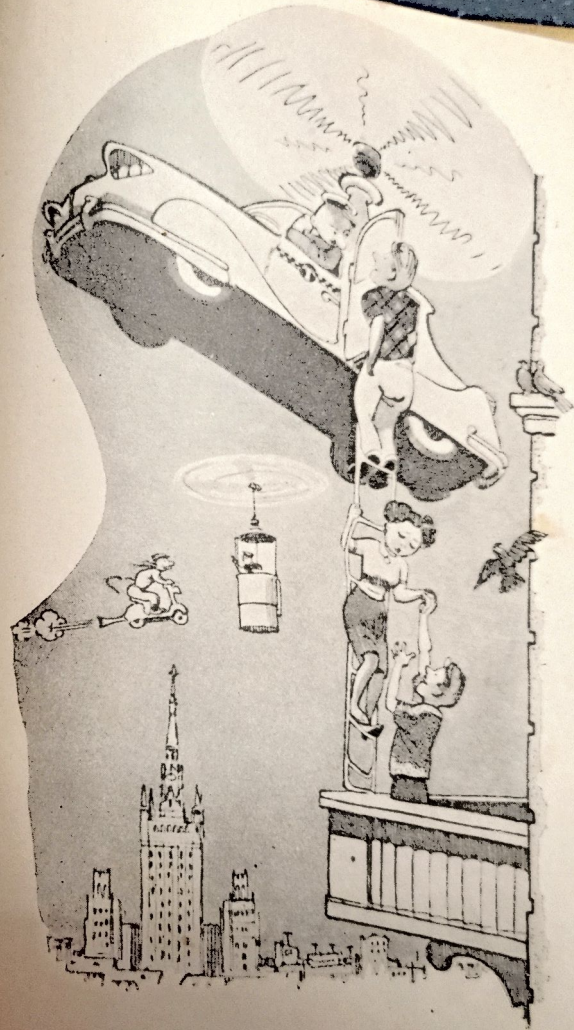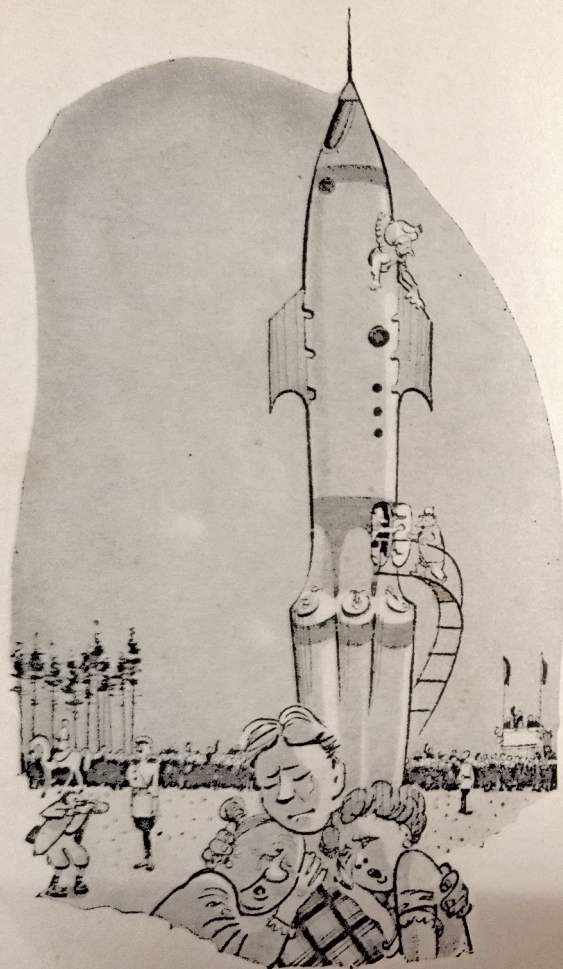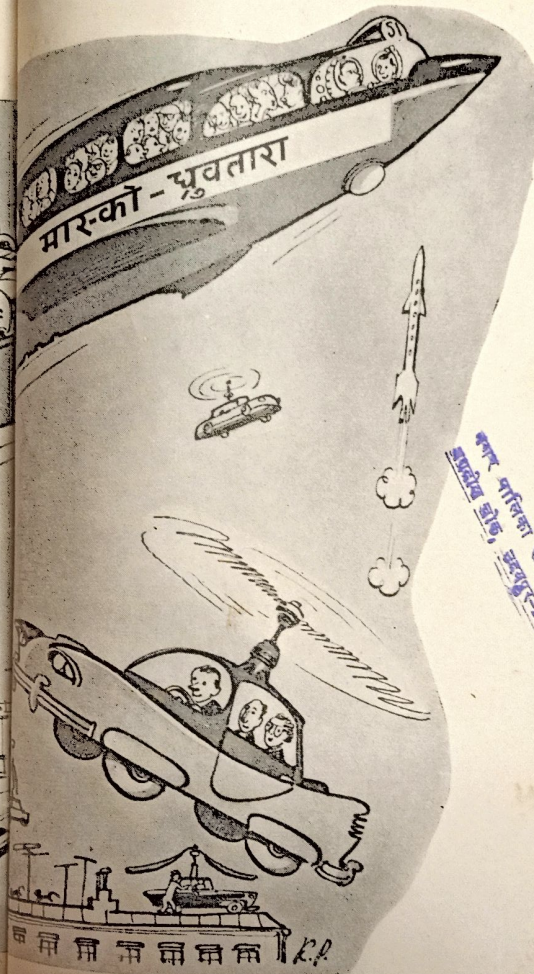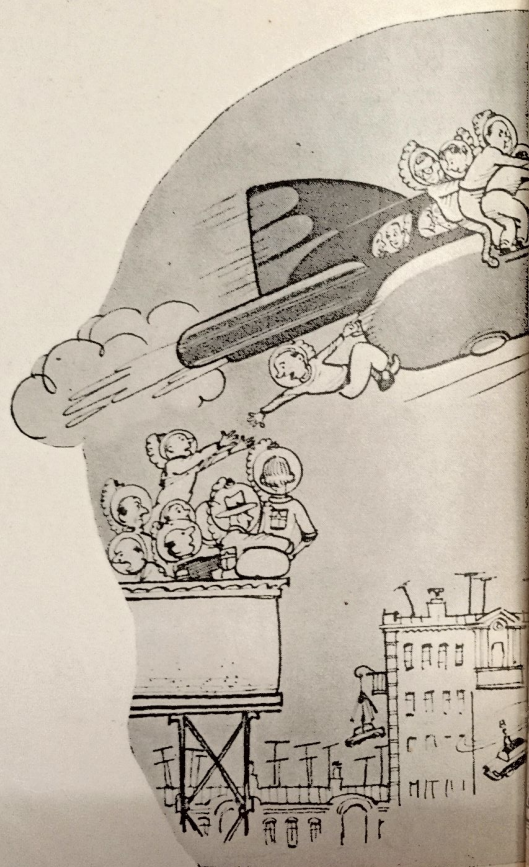
है। वह जान छोड़कर भागता है और फ़ौरन प्यार भरे और बेहद ख़ुश बॉबी में बदल जाता है।

"कहिये क्या समाचार है?" बोरीस चौकीदार से पूछा करता है। "मेरा दिलेर फिर कब उड़ान करेगा? जल्द ही?"

"हुं!" चौकीदार हर बार इसी प्रकार हुंकार भरता है। "यह शैतान लड़का सब कुछ ही जानना चाहता है।" फिर वह मैत्रीपूर्ण ढंग से जवाब देता है-"जल्द ही! मैंने सुना है कि वे इसके लिए तैयारी कर रहे हैं। मगर ठीक-ठीक नहीं बता सकता कि वह कब उड़ान करेगा। तुम किसी दिन रेडियो का बटन दबाओगे और तभी इस उड़ान की ख़बर सुनोगे।"

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

М. БАРАНОВА, Е. ВЕЛТИСТОВ

ТЯПА, БОРЬКА И РАКЕТА

На языке хинди